आर्य समाज बड़ैल
जिला–अजमेर

ओ३म्

स्वर्ग में महासभा

श्रीमान् पं० रुद्रदत्तशर्माकृत

डा० भवानीलाल भारतीय
जिल्द संख्या ...
तिथि ...
पुस्तकालय

पं० रामनारायण शुक्ल ... शर्मा

द्विवेदी के वेदप्रकाशयन्त्रालय इटावा

में मुद्रित कराके प्रकाशित की

रजिस्टरी कराई गई किसी को छापने का

अधिकार नहीं

प्रथमबार
१०००

मूल्य ।)

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पु
पु परिग्रहण क्रम 2899 '17
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

३५४७
१०-५-१५

॥ ओ३म् ॥

स्वर्ग में महासभा ॥

कालचक्र के पहिये को घुमाते हुए सूर्य्यनारायण ज्योंही उत्तरायण हुये त्योंही देवलोक में घोर घबराहट मच गई इस घबराहट के कारणों को लिखा जाय तो एक करोड़ श्लोकों का महा महा महाभारत बन जाय तौ भी पाठकों के सन्तोषार्थ संक्षेप से दो चार कारणों का वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक जान पड़ता है।

इस घबराहट का ख़ास कारण तो यह था कि मिस्टर टक्कर ने फक्कर बन के जब से मुक्तिसेना बनाई और वारक्राई (War cry) समाचारपत्र निकाला तब से देवता लोगों को हर समय यही सन्देह और भय बना रहता है कि न मालूम किस समय टक्करासुर के सैनिक स्वर्ग में सीढ़ी लगा के चढ़ आवें और हम लोगों को मार के स्वर्ग से निकाल दें। गत २१ दिसम्बर सन् १८९६ को फ्रीमेशन के देवता ने स्वर्ग में आ के देवताओं से प्रार्थना की कि महाराज मुझे क्रष्टानों ने मार के भगा दिया, मर्त्यलोक से मेरी उपासना को ईसाई उठाना चाहते हैं आप सब क़ौमपरवर हैं लिहाज़ा मेरी रक्षा करना आप लोगों का फ़र्ज़ है, फ्रीमेशन चर्च के देवता

की प्रार्थना को सुन के देवराज इन्द्र को ध्यान आया कि सब्जेक्ट कमीटी में जो पबलिक मीटिङ्ग या महासभा करने का प्रस्ताव हुआ था उस को अब करना चाहिये। देवराज इन्द्र इस विचार में बैठे ही थे कि इतने में असंख्य पितरों ने देवदर्बार को घेर लिया और चिल्ला के दुहाई देने लगे इन की चिल्लाहट को सुन के महाराज इन्द्र भी घबराये और अपने द्वारपाल से बोले कि इन सब को खामोश कर के दर्बार में हाज़िर करो हुक्म पाते ही द्वारपाल सब को बुला लाया।

उन सब ने हाथ जोड़ के विनय करी कि महाराज हम लोग बड़े कष्ट में हैं। हम में से अधिक लोग अरब इङ्गलिस्तान के रहने वाले हैं हम लोगों ने जितने सुकर्म किये थे उन में से किसी का भी हम को फल नहीं मिला और न हमारे पुत्र हमारा श्राद्ध ही करते हैं जो हम को यहां खाने को मिले लिहाज़ा हम सब भूखों मरे जाते हैं अगर हम को पहिले से यह अन्धेर मालूम होता तो हम कभी सुकर्म नहीं करते।

इन लोगों की बात को आर्य्यावर्त्तीय पितरों ने भी ताईद की और कहा कि बेशक यह लोग सत्य कहते अगर हम लोग जानते कि सुकर्म और कुकर्म करनेवालों को स्वर्ग में एक ही स्थान मिलता है तो हम लोग क्यों सुकर्म करते, देखिये जिस महिषासुर ने बड़े २ महर्षियों को सताया आप सब लोगों को युद्ध में घताया वही

आज मुक्तपदवी पाके आनन्द भोग रहा है इस के अ-तिरिक्त रावण और वाणादि अनेक अन्यायी राक्षस भी मुक्त हो चैन उड़ा रहेहैं तब अन्य लोगों का सुकर्म करना झख मारना नहीं तो क्या? महाराज! आप इस लवण-धौंधौं को मिटाइये नहींतो जगत् में अन्धेर होजायगा।

इन लोगों की अर्ज पूरी नहीं हुई थी कि इतने में देवतों के एक दल ने आ कर इन्द्र महाराज से प्रार्थना की कि हे देवराज! आज कल हम लोग भूखे मर रहे कहीं पर यज्ञ नहीं होता जो हम को भाग मिले, यज्ञ के विना उत्तम धुआं नहीं होता, धुआं ही नहीं तो बादर काहे के बनें, बस बादरों के अभाव से वर्षा का अभाव हो रहा है, अवर्षण से संसार की यह दशा है कि शाकम्बरी देवी (मार्कण्डेय पुराण में लिखा है कि शाकम्बरी देवी ने १२ वर्ष तक देवताओं को शाक खिला के जिलाया था) की तर्कारी भी सूख गई, जो हमारे भक्त पहिले बर्फी और पेड़ों का भोग लगाया करते थे अब उन को बाजरे की रोटी भी नहीं मिलती है।

इन लोगों की ताईद करते हुए काशीपति विश्वनाथ बोल उठे, महाराज! बेशक आज कल देवतों को बड़ा कष्ट है मेरी ही दशा देखिये न! मैं जो एक बार भङ्ग की तरङ्ग में यवन के डर से ज्ञानवापी कुए में जा गिरा था तो काशी के पण्डों ने मेरी एवज में एक कायम मुकाम (Officiating) विश्वनाथ बना लिया मगर

आश्चर्य यह है कि अब तक भी कोई मेरा भक्त मुझे कुए से नहीं निकालता है, हालांकि मेरा मगज़ चावल और सड़े पानी की बदबू से सड़ा जाता है और मैं कुए में पड़ा महाकष्ट भोग रहा हूं और मेरा क़ायम मुक़ाम मुस्तक़िल (Permanent) विश्वनाथ बन के गुलछर्रे उड़ा रहा है,हे देवराज ! यदि आप हम लोगों के कष्ट को दूर न करेंगे तो हम सब मिलके बलि को देवराज बनालेंगे ॥

इन सब की बातों को सुन के देवराज इन्द्र ने मुस्करा के कहा हां भाई अब तो तुम्हारी नज़र बढ़ गई है अब आपलोग अमेरिका की ओर क्यों न देखने ! मगर याद रखिये कि अब वहां बलिका बल नहीं है अब तो पाताल में रिपबलिकन गवर्नमेण्ट (प्रजातंत्र) होगई है अगर स्वर्ग में भी वही साम्यवाद आपलोग चलावेंगे तो हम भी मर्त्यलोक के मनुष्यों की महाकांग्रेस करा के आप लोगों की भक्तिको नेस्त नाबूद कर देंगे। स्मरण रखिये कि जैसी उन्नति हम आप लोगों की करसक्ते हैं वैसी उन्नति विदेशीय राजा बलि नहीं कर सकता है मैं अभी सब संसार के देवतों की महासभा करके आप लोगों के दुःख दूर करने के उपायों को बड़े यत्न से करूंगा

इतना कह के महाराजा इन्द्र ने समस्त दिग्पाल और सूर्य चन्द्रमा आदि प्रधान २ देवतों को सम्मति करने के वास्ते बुलाया वह लोग पलक मारते देवराज की अमरावतीपुरी में आ विराजे ॥

प्रथम सब की सम्मति से एक मनेजिङ्ग कमेटी कायम की गई चूंकि इस कमेटी का खास काम नोटिस देना व सभा के वास्ते स्थानादि का प्रबन्ध करना था इस कारण श्री सूर्य नारायण इस के सभापति चन्द्रमा उपसभापति और अग्निदेव सेक्रेटरी नियत किये गये, प्रथम मनेजिङ्ग कमेटी के मेम्बरों की राय हुई कि श्री विघ्न विनायक लम्बोदर से विज्ञापन लिखा के वितीर्ण किये जायं परन्तु श्री शुक्राचार्य्य ने कहा कि अब वह ज़माना नहीं है जब हाथ से लिख लिख कर दिशा वरों को चिट्ठी भेजी जाती थी, अब तो इन्लाइटेण्ड रोशनी का ज़माना है इस लिये किसी प्रेस में दो चार अरब नोटिस छपाके बांट देने चाहिये, आजकल फीमेल एजूकेशन (स्त्री शिक्षा) तरक्की पर है लिहाज़ा सरस्वती देवी पलमात्र में नोटिस कम्पोज़ करके छपा सक्ती हैं इन सब की बातों को सुन के भुवन भास्कर भगवान् बोले कि नोटिस बांटने व छपाने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि इण्टेलीजेन्स डिपार्टमेण्ट (समाचार विभाग) ने इतनी उन्नति करली है कि पलक मारते सारे संसार में सभा के समाचार पहुंच जांयगे, मैं हेलोग्राफ (सूर्य्य की किरणों के द्वारा जो समाचार भेजे जाते हैं) के द्वारा मेरे मित्र शीतरश्मि (चन्द्रमा) नाइट सिगनेलके द्वारा और अग्निदेव जी महाराज तड़िद्ग्राम (तार) के द्वारा पलक मारते सर्वत्र समाचार पहुंचा देंगे आप लोग वि-

ज्ञापन बांटने की चिन्ता को छोड़ के दूसरे प्रबन्ध कीजिये ॥ मैनेजिङ्ग कमेटी की सम्मति से अमरावती के टौनहाल में वसन्तपंचमी को सभा का होना स्थिर हुआ, सभा में अधिक भीड़ होने की सम्भावना थी इस कारण इन्सपेक्टर जनरल आफ डिवाइन् (हास्पिटेल्स सिविल ऐण्ड मिलेटरी) (अश्विनी कुमारों को) बुला के आज्ञा दी गई कि आप अपनी डिसपेन्सरी के सहित सभा मण्डप के दाहनी ओर हर समय हाजिर रहिये क्योंकि आजकल बोवोनिकप्लेग (महामारी) का अधिक भय है, इस के अतिरिक्त डिवाइन मेल सर्विस के सुपरिण्टेण्डेण्ट वायु देव को आज्ञा मिली कि तुम हर समय यहां हाजिर रहो और जिस सभासद् का कहीं से कोई पत्र आवे फौरन उसे उस के पास पहुंचा दो ।

इन प्रबन्धों को करने के पश्चात् मैनेजिङ्ग कमेटी ने विदेशी देवताओं के वास्ते टौनहाल के हाते में एक होटल तयार कराया और योरोपियन देवतों के वास्ते भोजन पकाने के निमित्त मातङ्गिनी देवी को उच्छिष्ट चाण्डालनी के सहित सम्पूर्ण सामग्री देके नियत कर दिया बंगदेशीय देवतों के वास्ते मत्स्यप्रिया बगलामुखी नियुक्त की गई यवनदेशी और अफ्रीका के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को कज्जलगिरिनिभा काली जी नियत की गईं, ऐसे ही चीन, जापान और मलाया आदि द्वीपों के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को वागेश्वरी और पद्मा देवी को (यह दोनों देवी बौद्ध सम्प्र-

आर्य समाज कड़ैल
जिला-अजमेर

दाय में मानी जाती हैं) आदेश मिला, मैनेजिङ्ग कमेटी ने इस प्रकार से सबके खान पान का प्रबन्ध करके, टौन-हाल के द्वार पर (Welcome to Holy Gods) सुन्दर अक्षरों में लिख के लगवा दिया और द्वार पालों को आज्ञा दे दी कि जो कोई सभा में विघ्न डालने के अभिप्राय से कुछ काम करे उसको जहन्नुम रसीद करो और जो सीधे स्वभाव से सभा में जाना चाहे उसे हर्गिज मत रोको ।

प्रबन्ध करते ही करते वसन्तपञ्चमी का दिन आगया उस रोज प्रातःकाल ही से सभा मण्डप में देवतों का आना आरम्भ हुआ सब लोग अपने २ ब्लाक में जा बैठे, ए० ब्लाक में ओरजिनेल (असली) देवतों के वास्ते कुर्सियों की कतार लगी हुई थी, और उस ही के बीच में सभापति के वास्ते एक रत्न जटित सिंहासन बिछा हुआ था इस के दाहिनी ओर बी० ब्लाक था इस में महर्षि मण्डल तथा वेदों के मानने वाले मुक्त जीवों के वास्ते कुर्सियां बिछीं हुईं थीं, बांईं ओर सी० ब्लाक में यूरोप तथा अरब आदि देशों के देवता तथा पैग़म्बर लोग विद्यमान थे और डी० ब्लाक में मोडर्न (नये जमाने के) ऋषि तथा धर्म्माचार्य्य लोग विराजमान थे ।

देवियों को आसन देने के समय प्रबन्धकर्त्ताओं में वैमनस्य हो गया क्योंकि कई एक की सम्मति थी कि देवियों को देवतों के बीच में आसन न मिलना चाहिये क्योंकि सनातनधर्म्म वाले स्त्रियों को सभा में विठलाना

पाप समझते हैं। दूसरे कहते थे कि जिस दुर्गा देवी ने महिषासुर को और शुम्भ निशुम्भ आदि दैत्यों को युद्ध में मारा वह अब किस्से पड़दा करेंगी खैर अन्त में यह स्थिर हुआ कि ए० ब्लाक के पास ही एक फीमेल क्वार्टर बनाया जाय और सब देवी उस ही में बैठ के सभा को देखें और आवश्यकतानुसार सम्मति भी दें।

इस के अनन्तर प्रबन्धकर्त्ताओं ने जो डी० ब्लाक की ओर देखा तो वहां पूरी अशांति पाई कुछ लोग आगे बैठने के वास्ते आपस में झगड़ा कर रहे थे इस कोलाहल को सुन के मैनेजिङ्ग कमेटी के सभापति ने सब को यथा स्थान बिठला के शान्ति की जब सब लोग यथा स्थान बैठ गये और सभा में शान्ति स्थापित हो गई, तब रिसेप्शन कमेटी वा अभ्यर्थना सभा के सभापति कुमार जयन्त ने इस प्रकार से अपना व्याख्यान आरम्भ किया

व्याख्यान

देव, देवी, ऋषि, मुक्त और धर्म्माचार्य्यवृन्द !

मैं आप लोगों को धन्यवाद देने योग्य नहीं हूं क्यों कि कलियुगी रामायण में मुझे कव्वा लिख दिया है, भला सोचिये तो सही कि मैं अपने देव स्वरूप को त्याग कर कव्वा क्यों बनता? प्रथम तो योगी के विना किसी को यह शक्ति ही ईश्वर ने नहीं दी कि अपने शरीर को विना मृत्यु के छोड़ के दूसरा शरीर धारण करे, यदि मुझे योगी ही माना जाय तो क्या योगी इतना भी नहीं स-

मझ सक्ता कि श्रीरामचन्द्र जी की धर्मपत्नी सती साध्वी पतिव्रता सीता जी परपुरुष से प्रीति नहीं कर सक्तीं हैं मैं फ़ख मारने क्यों जाऊं, फिर उस ही रामायण में यह भी लिखा है कि महाराज रामचन्द्र जी ने मेरी एक आंख फोड़ डाली परन्तु देखिये मेरे दोनों नेत्र कमल से खिले हुये हैं, यदि कहिये कि कव्वे रूप की आंख फोड़ दी थी और इस ही कारण अब तक भी सब कव्वे काणे होते हैं तो यह महा अन्याय है कि अपराध करूं मैं आंख फोड़ी जाय कव्वों को, इस के अतिरिक्त श्रीरामचन्द्र जी के और मेरे जन्म से भी पूर्व काकभुसुण्ड का होना पुराणों में लिखा है परन्तु उस के भी दो नेत्र नहीं लिखे अस्तु—मैं अपनी अधिक सफाई देना नहीं चाहता हूं क्योंकि मर्त्यलोक के मनुष्यों ने कुछ मुझे ही दोष नहीं लगाया है वरन भगवान् विष्णु को भी दोषों का भण्डार बना दिया है, देवतों की दुर्दशा को दूर करने के वास्ते जो आप लोग लाखों कोश से यहां आये और अमरावती के टौनहाल को सुशोभित किया इस कारण मैं आप लोगों को अरबों धन्यवाद देता हूं ।

देववृन्द ! पुराणों को मानने वालों ने स्वर्ग को थियेटर हम लोगों को नगाड़ची और देवाङ्गनाओं को नटनी समझ रखा है क्योंकि अपने देश के छोटे २ आनन्दोत्सव में लिख दियाहै कि "देवादुन्दुभयो नेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः (अथवा) अवादयन्तः पटहान् पुष्पवृष्टि मुचोदिवि" इन के अलावा दीन इसलामियां वालों के ख्याल से तो बहिश्त

भी हूरों का बाज़ार है इन सब लवड़ धौं २ को दूर करने के वास्ते जो आप लोग आज इस टौनहाल में इकट्ठे हुए हैं इस परिश्रम के वास्ते मैं आप लोगों को रिसेपशन कमेटी की ओर से धन्यवाद देता हूं ॥

इस स्पीच के समाप्त होते ही महाराज कुबेर ने प्रस्ताव किया कि आज की जनरल कमेटी में भगवान् विष्णु सभापति बनाये जायं यद्यपि इस का अनुमोदन अनेक लोगों ने किया परन्तु विष्णु भगवान् ने यह कह के इसे अनङ्गीकार किया कि हम तो आज कल किसी काम के ही नहीं रहे हैं, जब से शंकराचार्य्य ने वेदोंकी जड़ काटने को सेल्फ गवर्नमेण्ट चलाया, तब से छोटे २ बालक भी खुद्खुदा बन गये, सृष्टि करने और वेद बनाने के समय हम एक ही स्वतन्त्र थे पर सृष्टि का और वेदों का नाश करने को करोड़ों ब्रह्म बन गये हैं, अब तो हम केवल स्त्रियों की कसम खाने को ही रह गये हैं और देखिये जो हमारे भक्त बनने का दम भरते हैं वही हम को गाली देते हैं, "महाबराहो गोविन्दः" (विष्णु सहस्र नाम) अर्थात् विष्णु बड़ा सुवर हैं कहिये किसे ग़रज है जो आप का सभापति बन के गाली खाय !

विष्णु भगवान् की बात को सुन के भोलानाथ शङ्कर जी हंसते २ खड़े हुये और मुस्कराके कहने लगे कि गाली से क्यों घबड़ाते हो! १६१०८ पटरानी और मनोहारिणी

वृज बनिताओं का रसास्वादन भी तो आप को ही कराया गया है, क्या कडुये २ थू और मीठे मीठे गप की कहावत को चरितार्थ करना चाहते हो ! रास करते वक्त तो छ महीने की रात करदी और कुछ भी न शर्माये पर अब जरा देर को सभापति बनते आप की नानी मरती है, क्या गोपियों का यह गीत अच्छा लगता था कि—

फणफणार्पितन्ते पदाम्बुजम् ।

कृणुकुचेषुनश्चारुहृच्छयम् ॥

और प्रेमातुर भक्तों के मुख से महाबराह शब्द को सुन के कान कटे पड़ते हैं । कैलाशवासी शम्भु की बात को सुन के सरस्वती देवी के पिता श्री ब्रह्मा जी खड़े हो के बोले, चूंकि विष्णु के दोषों पर इस सभा में विचार किया जायगा लिहाज़ा विष्णु को सभापति बनाना मुनासिब नहीं है. मेरी राय नाकिस में आज की सभा में भी देवराज इन्द्र ही सभापति के आसन को ग्रहण करें।

अनेक वादानुवाद तथा अनुमोदन प्रमोदन होने के पश्चात् देवराज इन्द्र ने सभापति का आसन ग्रहण किया जिस समय इन्द्र व्याख्यान देने को खड़े हुए उस समय चियर्स और करतालि की ध्वनि से टौनहाल गूंज उठा।

सभापति का व्याख्यान ॥

देववृन्द ! आप लोगों ने जो मुझे इस महती देवसभा का प्रधान बनाया यह आप लोगों ने मेरे आफि-

ग्नियल रैंक का मान्य बढ़ा के अपनी नियमवर्त्तिता का अपूर्व परिचय दिया है, इस महती सभा के महाधिवेशन का उद्देश्य यह है कि मर्त्यलोक के निवासियों ने जो देवता लोगों पर सहस्त्रों दोष लगाये हैं और धोखा घड़ी लगा रखी है इस से हम लोगों का ही अपमान नहीं होता है वरन परम कृपालु परमेश्वर का भी पूरा अपमान होता है मेरे तो पूरे परिवार को ही पुराण बनाने वालों ने चोर और व्यभिचारी लिख दिया है। नृसिंह-पुराण के २८ अध्याय में मेरे पुत्र जयन्तकुमार को लिखा है कि राजा शन्तनु ने एक वृन्दावन बसा के जो अत्यन्त मनोहर बाग़ बनाया था उस के फूलों को मेरा पुत्र चुरा लाता था, एक दिन माली ने मेरे पुत्र को फूल चुराते देखा और नृसिंह की स्वप्नप्राप्ति आज्ञा से दीवारों पर नृसिंह का निर्म्माल्य छिड़क दिया उस के लांघने से जयन्तकुमार ऐसा शक्तिहीन हो गया कि वह रथ पर न चढ़ सका तब सारथी के उपदेश से वृन्दावन में १२ वर्ष रहा और ब्राह्मणों का उच्छिष्ट बटोरता रहा तब उस के शरीर में शक्ति आई। भला इस कथा के बनाने वालों से कोई पूछे कि जब यवनों ने भारत पर आक्रमण किया और देवमन्दिरों को तोड़ा नृसिंह की अनेक मूर्त्तियों को तोड़ के फेंक दिया तब क्या नृसिंह का निर्म्माल्य नहीं रहा था? जो भारत की सीमा पर छिड़क देते और उस को

नांघने से सब यवन शक्तिहीन हो जाते, इस के अति-रिक्त उस ही नृसिंहपुराण के ४३ अध्याय में मुझे व्यभिचारी लिखा है, जब हिरण्यकश्यप तपश्चर्या करने गया था (तब इन्द्र उस की गर्भवती स्त्री को उठा के लेगया और उस से व्यभिचार करना चाहा तब नारद ने इन्द्र को समझाया और कहा कि यह गर्भवती है इस के उदर में परम भागवत है) क्या मैं ऐसा अज्ञानी था कि इतना भी न समझता था कि यह गर्भवती है, खैर यह तो कुछ बड़ी निन्दा ही नहीं है मुझ से बढ़ के विष्णु को लूलू बनाया है, एक जगह तो लिखा है कि सब देवतों के कहने से भृगु ऋषि ने विष्णु के वक्षस्थल में लात मारी परन्तु विष्णु भगवान् की ऐसी शान्ति बढ़ी कि भृगु के पद को दबाने लगे और कहने लगे कि आप के कमल समकोमल पदों में मेरे कठोर वक्षस्थल की बड़ी चोट लगी होगी, दूसरी जगह (भविष्यपुराण ५६ अध्याय) लिखा है कि विष्णु महाराज ने भृगु की स्त्री का चक्र से सिर काट डाला, कहिये तो उस समय वह शान्ति विष्णु की कहां को उड़ गई थी जो अवध्य ब्राह्मणी को भी मार डाला और इस ही का यह फल मिला कि अब विष्णु को बराबर अवतार लेना पड़ता है मैं सत्य कहता हूं कि जब से ऐसी ऐसी फाल्सरिपोर्टें मेरे आफिस में आने लगी तब से मेरा दफ़्तर भी गन्दा हो गया, मैं सत्य कहता हूं कि मुझे अब इन रिपोर्टों पर तनक भी विश्वास नहीं रहा

है, जो दान धर्म दानपात्र के उपकारार्थ था वह अब दिल्लगी मात्र रह गया है, गोदान केवल इस वास्ते था कि वेदाभ्यासी ब्रह्मचारी के निश्शक्त शरीर में शक्ति का संचार हो परन्तु स्वार्थान्ध लोगों ने सुवर्ण धेनु हीरे के दांत लगा के (भविष्य पु० उत्तरार्द्ध १३७ अध्याय भवि० उ० १३८ अध्याय भवि० उ० १६० अध्याय) दान करना लिखा है। फिर उस से भी बढ़ के रत्नधेनु के दान का माहात्म्य लिखा है यदि वास्तव में सुवर्णधेनु को गौही समझा जाता है तो उस के अङ्ग प्रत्यङ्ग को बेच कर खाना क्या महापाप नहीं है? और आश्चर्य सुनिये सुअर का भी दान करना लिखाहै अर्थात् तिलका सुअर बना के दान करें इस दान का ऐसा माहात्म्य लिखा है कि इस दान का करने वाला अपने पुत्र कलत्र और मित्रों सहित स्वर्ग को चला जाय सोचिये तो सही कि जो मनुष्य असली सुअर का दान करें वह तो स्वर्ग से भी १० हाथ ऊंचा चला जाय।

तीर्थों के माहात्म्यों का जहां वर्णन किया है वहां तो हास्यरस का अन्त ही कर दिया है मैंने स्वयम् अपने नेत्रों से देखा है कि प्रयागराज के माहात्म्य में लिखा है कि जो मनुष्य ऊपर को पैर और नीचे को सिर करके गंगा और यमुना के संगम में आचमन करे तो १२००००० वर्ष तक स्वर्ग में सुख भोगे (देखो कूर्म्मपुराण) महाशय वृन्द ! मैं कहां तक कहूं इन फाल्स रिपोर्टों में देवतों की ऐसी बुराई लिखी है कि जिन को सुनते भी हंसी आती

है गणेश को लम्बोदर और हाथी के सिर युक्त लिख के फिर चुहे की सवारी लिखदी है भला कहिये तो हाथी की सवारी चुही क्यों कर हो सक्ती है?

प्रियदेववृन्द ! आज कल जो भारतवासियों पर स्वार्थी जनों ने टैक्स लगा रक्खे हैं उन के विषय में मैं केवल एक दृष्टान्त देके अपने व्याख्यान को समाप्त करूंगा ॥

दृष्टान्त यह है कि एक उजबक नगर नामक शहर में एक गवर गण्डसिंह नामक राजा था, वह राजा अपने नाम के अनुसार ऐसा मूर्ख और आलसी था कि उस के अमले और प्यादे मन माने कार्य्य करते थे परन्तु वह इतना भी नहीं जानता था कि मेरे राज्य में कितने ग्राम हैं और उन का शासन कौन करता है, एक दिन उस की राजधानी में किसी और राज्य का एक मनुष्य घीव वेचने को आया परन्तु बाजार तक जाते जाते उस का सम्पूर्ण घीव कर अर्थात् ड्युटी (महसूल) में ही उड़गया कहीं राजा का कर, कहीं युवराज का कर, कहीं रानी का कर कहीं राजमाता का कर कहीं राजभ्राता का कर, कहीं मन्त्री और कहीं उपमंत्री आदि का कर लेते जब उस व्यापारी के कपड़े तक भी सिपाहियों ने छीन लिये तब वह रोता हुआ राजा के पास गया परन्तु राजा ने उस को धक्के देके निकलवा दिया तब उसने समझा कि इस राज्य में अन्धेर है अतएव मैं भी अपना कार्य्य सिद्ध कर सक्ता हूं बस वह भी श्मशान के पास जा बैठा और जो मुर्दा उधर आवे उस के ही साथियों

से कहे कि हमारा १।) रु० राज करके नाम से पहिले दे दो तब प्रेत की क्रिया करो जब उस्से कोई पूंछे कि तुम कौन हो तब ही वह कह दे कि हम राणी के शाले हैं, अनेक वर्षों तक वह इस ही रीति से कर लेता रहा, कुछ काल के अनन्तर गवरगण्ड सिंह राजा की माता भी मरीं और स्वयम् राजा साहिब श्मशान में गये और राणी के साले का नाम सुन के बहुत चकित हुए, जब १।) रु० उस का कर देके आगे बढ़े तब अवसर पाके राणीं साहिबा ने राजा से पूंछा कि आप ने किस को कर दिया आप तो स्वयम् राजा हैं राजा ने कहा कि यह राणी के साले का कर दिया जाता है; राणी ने हंस के कहा कि स्त्रियों के साले नहीं होते हैं आप समझ के बात कीजिये, राजा ने क्रोध के साथ उत्तर दिया कि इस बात को हम भी जानते हैं कि स्त्रियों के साले नहींहोते परंन्तु सनातन धर्म्म की रीति को मेटना भी तो पाप है देववृन्द ! आज कल दान की भी यही दुर्दशा जगत् में हो रही है, कोई मृत्युञ्जय के जप से अमर होना चाहता है कोई शनैश्चर औरकेतु के मुजावर को थोड़ा सा लोहा वा तिल उड़द देके शरीरको अजर और निरोग बनाना चाहता है कोई दो चार रु० की चान्दी दे के अपने कर्म फल को उल्लङ्घन करके ईश्वर के नियम को भङ्ग करने की चेष्टा कर रहा है, मुक्ति के विषय में भी संसारी जनों की यही दशाहै जिन लोगों ने रिशवत लेले के जन्म भर शराब खोरी और सीने जोरी की है वह भी

ईसामसीह की शरण में आके मुक्ति को मुंह बाय रहेहैं ऐसे ही खुदा के मख़लूक को खाख में मिला के और मुहम्मद के मोहताज बनके नजात पाने को उत्सुक होरहे हैं परन्तु परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं है और न सुकर्म्मों का भरोसा है सुतराम् हम लोगों को अब ऐसा उद्योग करना चाहिये जिस्से जगत् में ईश्वर की भक्ति बढ़े और मनुष्यों की श्रद्धा सत्य धर्म्म में बढ़े यदि अब भी हम लोग आलस्य करेंगे तो जगत् में नास्तिक और आस्तिकाभासों का ही प्रस्ताव फैल जायगा, और सत्य धर्म नाममात्र को भी नरहेगा, मैं चाहता हूं कि आप की सभा में सब लोग स्वतन्त्र भाव से अपनी २ राय प्रकाशित करें ।

सभापति के अवस्थानानन्तर देवर्षि नारद खड़े हो के कहने लगे चूंकि पुराण वालों ने मेरी असीम निन्दा की है लिहाज़ा मैं प्रस्ताव करता हूं कि पुराण (ब्रह्मवैवर्त्तादि) और मेरे नाम को कलङ्कित करने वाले नारद पंचरात्रादि पुस्तक रद्दी खाने में फेंक दिये जायं मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैंने उन पुस्तकों को हर्गिज नहीं बनाया भला मुझे क्या ज़रूरत थी कि मैं षट्कोपी मत का प्रतिपादन और शैवादिमतों का खण्डन करता न मैं रिश्वतख़ोर हूं कि डोम आदि नीचों से कुछ धन ले के किसी आधुनिक पुस्तक पर अपनी मुहर कर देता देवीभागवत् के बनाने वाले ने जो अकारण मुझ पर दोष लगाये हैं वह अवश्य ही आप लोगों ने सुने होंगे

(दे० भा० स्कन्द ६ अ० २८, २९, व ३०) देखिये तो मुझे विष्णु ने कैसा धोखा दिया कि मेरे कपड़े लत्ते और बीन आदि ले के भाग गये और मैं तलाव में स्नान करता ही रह गया जब मैं तलाव में से निकला तब स्त्री हो गया फिर राजा तालध्वज से मेरा विवाह हुआ देखिये तो क्या लाल बुझक्कड़ी कथा है ? देवी भागवत् वाले को मेरी इतनी ही निन्दा करने से सन्तोष नहीं हुआ वल्कि और भी अपूर्व कथा लिख डाली, उस में तो मुझे बन्दर ही बना दिया है, उस में भी राजा सञ्जय की कन्या से मेरा विवाह करा दिया है सोचिये तो सही कि मैं देवर्षि हो के मानुषी से विवाह क्यों करता ।

देववृन्द ! आप लोगों ने यह न सुना होगा कि हमारे सभापति देवराज भी एक बार बैल बने थे (दे० भा० स्क० ७ अ० ९) राजा ककुत्स्थ जब देवतों की प्रार्थना को सुन के दैत्यों से लड़ने को चले तब उन्होंने कहा कि यदि इन्द्र हमारे बाहन बने तो हम दैत्यों से लड़ें भला, कहिये तो कितनी गाली है कि जिन इन्द्र महाराज को विष्णु आदि सब ही राजा मानते हैं उन को ही बैल लिख दिया और मुझे तो पुराणवालों ने डाक का थैला और लड़ाई कराने का औजार व चुगलखोर नियत कर दिया से इस कारण मैं प्रस्ताव करता हूं कि पुराणों को मन्सूख कर दिया जाय ।

इस प्रस्ताव को महर्षि पराशरने अनुमोदन करते

समय कहा कि बेशक पुराणों को मन्सूखकर देना चाहिये क्योंकि इन पुराणों में हजारों बातें असम्भव लिखी हैं मेरे परिवार को और मुझे जैसे वाहियात दोष पुराणवालों ने लगाये हैं उन को मैं फिर वर्णन करूंगा किन्तु अब एक ऐसी गाथा का वर्णन करता हूं जिस को सुन के आप सब लोग कई दिन तक हंसते रहेंगे। देवी भागवत सप्तमस्कन्ध ९ अध्याय में लिखा है कि राजा यौवनाश्वके १०० स्त्री थीं परन्तु पुत्र किसी के नहीं था इस से राजा को अत्यन्त चिन्ता रहती थी, इस ही चिन्ता से व्याकुल हो के राजा यौवनाश्व वन को चले गये और वहां अनेक महर्षियों से कहा कि मेरे सन्तति नहीं है अतएव आप लोग ऐसा यत्न कीजिये जिस से मेरे पुत्र हो, ऋषियों ने सन्तान प्राप्ति के वास्ते यज्ञ आरम्भ किया, ऋषियों ने जो मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर के जल से पूर्णघट स्थापन किया था वह इस अभिप्राय से था कि जो नारी इस जल को पान करे उस के अवश्य ही पुत्र हो, एक दिन रात्रि में राजा यौवनाश्व को बहुत प्यास लगी और उन्होंने उस ही यज्ञकलश के जल को भूल से पी लिया प्रातःकाल जब यज्ञकर्ता ब्राह्मणों ने कलश को खाली देखा तो राजा से पूछा कि वह जल कहां गया तब राजा ने कहा कि वह जल मैं ने पी लिया इस बात को सुन के सब ने कहा कि तुम्हारे अवश्य पुत्र होगा उस जल के प्रताप से राजा के गर्भ रहा, जब १० महीने

पूरे हुए तब राजा यौवनाश्व के पेट को चीर के वालक निकाला गया, तब राजा के मन्त्री ने कहा "कन्धाता" यह वालक किस का दूध पीयेगा, तब ही देवराज इन्द्र ने आके कहा कि "मान्धाता" मेरा दूध पियेगा इस ही कारण उसका नाम मान्धाता रक्खा गया, देववृन्द ! कहिये यह कथा क्या इस पहेली को चरितार्थ नहीं करती है कि ।

मास कुंवारी बहू पेट से ननद पंजीरी खाय ।
देखन वाली लड़का जन्मे बांझिन दूध पिलाय ॥

क्या यह जाफर जटल्ली का किस्सा नहीं है भला विचारिये तो कि जिस गर्भाशय को मनुष्यों के पेट में ईश्वर ने ही नहीं रचा उस को मन्त्र के पानी ने क्यों कर बना दिया ? यदि अभिमन्त्रित पानी में यह शक्ति थी तो राजा के स्तनों में दूध क्यों नहीं उत्पन्न करदिया वास्तव में इन लाल बुझक्कड़ी कथाओं ने देव भाषा को और वेदों को बड़ा ही बदनाम कर रखा है ॥

देववृन्द ! इन पुराणों ने मेरे दादा वशिष्ठ से ही हमारे कुल को कलङ्कित करना आरम्भ किया है लिखा है कि वशिष्ट विश्वामित्र से लड़ने को बगुला बन गये और लिखा है कि उन्हों ने ऐसी ईर्षा करी कि अपने सौ पुत्रों को मरवा के तब विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि कहा फिर मेरा माता के गर्भ में वेद पाठ करना लिखा है क्या यह सम्भव है कि कोई मनुष्य गर्भ में मुख खोल सके ? यदि गर्भ में मुंह खुल जाय तो माता के गर्भ के

मल बालक के मुख में भर जायं, ईश्वर ने गर्भस्थ बालक की पुष्टि के वास्ते यही नियम कर दिया है कि बालक का मुख बन्द रहे और नाभी की नाल के द्वारा माता के भक्षण किये अन्नादि का रस बालक के उदर में जाय, अस्तु अब एक और अद्भुत बात सुनिये कि मैं परम धर्म्मज्ञ और वेदज्ञ होके भी अविवाहित मत्स्यगन्धा पर मोहित हो गया (देवी भागवत द्वितीय स्कन्ध द्वितीय अध्याय) और अपनी कामवृत्ति को दिन ही में चरितार्थ करने को मैंने कुहिरा उत्पन्न किया आप सब जानते हैं कि कुहिरे का नाम वेदों में भी लिखा है (नीहारेण प्रावृत्ता उक्थशाश्चरन्ति) इस के अतिरिक्त कुहिरा केवल उस वाष्प का नाम है जो सूर्य की किरणों के द्वारा पृथिवी से आकाश को जाती है और जब से सूर्य तथा पृथिवी और जल बने हैं तब से ही कुहिरा भी बना है भला मैं उस को क्यों कर बनाता फिर मेरे जन्म से भी पूर्व की अनेक कथाओं में भी कुहिरे का नाम आता है जिस मत्स्यगन्धा से मेरे व्यभिचार की कथा लिखी है अब उसके जन्म का अद्भुत हाल सुनिये, जिस को सुन के आप लोगों की भी बुद्धि चकरा जायगी देवी भागवत के प्रथम स्कन्ध की प्रथम अध्याय में ही यह असम्भव कथा लिखी है कि राजा उपरिचर की गिरिका नाम्नी भार्य्या जिस दिन ऋतुस्नाता थी उस दिन उप-

रिचर के पिता ने उन्हें शिकार खेलने के वास्ते वन को जाने की आज्ञा दी, राजा उपरिचर पिता की आज्ञा को परम धर्म समझ के वन को गये परन्तु उन को अपनी ऋतुस्नाता भार्या का स्मरण रहा इस कारण वन में उन का वीर्य स्खलित हुआ, राजा ने उस वीर्य को वटपत्र के दौने में रख के अपने एक बाज से कहा कि इस वीर्य को मेरी स्त्री के पास लेजावो इस से अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा, उपरिचर के बाज ने जब उस वीर्य युक्त दौने को लेके आकाश मार्ग से गमन किया तब और बाजों ने समझा कि यह मांस लिये जाता है तब और बाज उस से छीनने को आये इस कारण बाजों में खूब युद्ध हुआ वह दौना यमुना जी में गिरगया, उस दौने के वीर्य को एक मछरी (आद्रिका जो शाप से मछरी होगई थी) खा गई उस को एक मछुआ ने पकड़ के चीरा तो उस के पेट से एक पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुए, मछुआ उन दोनों बालकों को राजा उपरिचर के पास ले गया, राजा उपरिचर ने लड़के को अपने रूप का देख के ले लिया और कन्या को उस ही मछुए को दे दिया, वही मछरी के पेट का लड़का राजमत्स्य हुआ और कन्या व्यास की माता सत्यवती हुई, कहिये आप लोगों ने कभी ऐसी लाल बुझक्कड़ी कथा सुनी थी क्या अश्विनीकुमार और धन्वन्तरि का यह कहना मिथ्या है कि बालक के अनेक प्रत्यङ्ग माता के ज से

बनते हैं, यदि मान भी लिया जाय कि राजा उपरिचरका वीर्य्य अमोघ था तो उसमें रज किस का और क्यों कर मिला ? यदि, कहा जाय कि मछरी का रज मिलगया होगा तौ भी अयुक्त है क्योंकि जिनके अण्डे उत्पन्न होते हैं उन के गर्भाशय में उस प्रकार का रज नहीं होता जैसे जरायुज स्त्रियों के होता है। इस के अतिरिक्त अण्डज स्त्रियों का गर्भाशय भी भिन्न रीति का होता है वह मनुष्य के वा गधे के वीर्य्य को धारण नहीं करसक्ता हैं, चिकित्सा शास्त्र में जो शरीर की रचना का वर्णन लिखा है उस के देखने से स्पष्ट जान पड़ता है कि मुख के मार्ग से गर्भ में गया वीर्य्य स्त्री के उस स्थान में नहीं पहुंच सक्ता है जहां पहुंचने से गर्भाधान होता है।

खैर हमारी तो दुर्दशा की ही थी परन्तु व्यास की भी वह दुर्दशा की है जिस को सुन के भद्रजन अशान्त होजाते हैं, व्यास को दासी पुत्र लिख के फिर लिखा है कि उन्होंने १०० वर्ष शिव की आराधना करके पुत्र होने का वर पाया, परन्तु व्यास के घर स्त्री तो थी ही नहीं जो पुत्र होता एक दिन प्रातःकाल व्यास जी अग्निहोत्र करने के वास्ते अग्नि उत्पन्न करने को अरणी मथ रहे थे उस ही समय घृताची अप्सरा उधर आ निकली, उसे देख कर व्यास जी कामातुर हुए परन्तु मन में व्यभिचार कर्म से डरे और मन में कुछ चिन्ता करने लगे, व्यास मुनि को चिन्तातुर देख के घृताची भी घबड़ाई और भय से शुकी

गुरु विरजानन्द ...
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक .. 2891
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

(सुग्गी, तोती) बन के भागी व्यास जी शुकी को देख-कर अत्यन्त विस्मित हुये और अप्सरा का ध्यान करने लगे तब उनका वीर्य्य अरणी पर पतित हुआ और उस से ही शुकदेव (लकड़ी) से उत्पन्न होगये, देववृन्द ! विचार (देवी भागवत प्रथमस्कन्ध अध्याय १४) कर देखिये कि इस महालाल बुझक्कड़ी कथा में कैसो गप्प मारी है कि लकड़ी से ही पुत्र उत्पन्न होगया, एक और भी मुझे आश्चर्य है कि जिस श्रीमद्भागवत को पौराणिक लोग पुराणों का शिरोमणि मानते हैं उस में शुकदेव का विवाहादि कुछ नहीं लिखा परन्तु हजारों ब्राह्मण अपने को वशिष्ठ गोत्री बतलाते हैं जब कि शुकदेव का वंश ही नहीं चला और व्यास के भी दूसरी सन्तान नहीं थी तब जगत् में वशिष्ठ का गोत्र कहां से आया ! क्या विना माता पिता के भी पुराण वाले किसी की उत्पत्ति कलियुग में मानने लगे हैं परन्तु देवी भागवत में शुकदेव का विवाह पीवरी स्त्री के साथ लिखा है और उस से कृष्ण, गौरप्रभ भूरि तथा देवश्रुत नामक ४ पुत्रों की उत्पत्ति लिखी है हम नहीं जानते कि पुराणों में परस्पर क्यों विरोध है ? पुराण वालों ने हमारे वंश पर एक तो कृपा की है कि शुकदेव को कोई दोष नहीं लगाया, परन्तु "जब फंसे दादा तो किस गिनती में फिर पोते रहे" इस कहावत के अनुसार कुल भर को ही हमारे कलङ्कित बना दिया है ।

सभ्य महाशयो ! मैंने आप लोगों को बहुत देर तक कष्ट दिया, परन्तु अब मैं केवल एक बात कहके अपने

व्याख्यान को समाप्त करूंगा आजकल के सन्यासी अपनी गुरु परम्परा में कहते हैं ।

नारायणं पद्मभवं वशिष्ठम्, शक्तिं च तत्पुत्रपराशरंच,
व्यासं शुकङ्गौडपादंमहान्तं, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्यशिष्यम्
श्रीशङ्कराचार्य्यमथास्यपद्म, पादं च हस्तामलकं चशिष्य-
न्तन्तोटकं वार्त्तिककारमन्या, नस्मद्गुरून्सन्ततमानतोस्मि

कि शुकदेव के शिष्य गौड़पादाचार्य्य, गौड़पाद के शिष्य गोविन्दाचार्य्य गोविन्दाचार्य्य के शिष्य श्री शङ्कराचार्य्य हुए परन्तु इन सब के समय को मिलाने से यह बात सत्य नहीं मालूम होती क्योंकि शुकदेव का स्वर्गवास पाण्डवों के जन्म से भी ५० सौ वर्ष पूर्व ही हो चुका था और गोविन्दाचार्य्य तथा शङ्कराचार्य्य का जन्म बुद्धदेव के समय से सैकड़ों वर्ष पश्चात् हुआ था तब गौड़पादाचार्य्य का शुकदेव के समय में होना क्योंकर सिद्ध हो सक्ता है ? गौड़पादाचार्य्य की कलियुग में भी कई सहस्र वर्ष की अवस्था का होना वेदों से तो विरुद्ध ही है किन्तु कलियुग के राज्य में पुराणों से भी निषिद्ध है ।

महर्षि पराशर के स्पीच को बढ़ता हुआ देख कर श्रीमान् सभापति खड़े होके कहने लगे कि महर्षे ! पराशर ! आप को यह अधिकार नहीं है कि आप सन्यासियों के विषय में भी कुछ कहें क्योंकि इस विषय में दत्तात्रेय तथा शंकराचार्य्य स्वयम् वर्णन करने को उप-

स्थित हैं। मेरी सम्मति में अब पञ्चदेवों में से किसीको अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये।

सभापति की बात को सुनके स्वयम् भगवान् विष्णु हंसते हंसते खड़े हुए और इस प्रकार से कहने लगे, सभ्यवृन्द ! इस महती सभा में जो कुछ मैं कहूंगा उसे आप लोग दिक् प्रदर्शन वा नमूना मात्र समझियेगा क्योंकि संसार के कृतघ्न लोगों ने मुझे एक काठ का पुतला समझ रक्खा है और मेरे नाम से स्वयम् विषय भोग करते लज्जित नहीं होते, भला यह कौन इन्साफ की बात है कि जिस को उपास्य देव वा देवी समझें उसको ही रास में नचावें, फिर मेरे नाम से मन्दिरों में वेश्याओं को नचावें और व्यभिचार करें, अपनी अपनी हठ को पूरी करने के वास्ते विषयी लोगोंने मुझे बदनाम कर रक्खा है, कोई कहता है कि विष्णु गोलोक में रहते हैं और गोलोक में सिवाय विष्णु के सम्पूर्ण स्त्रियां रहती हैं, कोई कहता है कि विष्णु दैत्यों को मारने के वास्ते सदैव अवतार लिया करते हैं जिन मनुष्यों को वह मेरा अवतार बतलाते हैं उन महात्माओं के जीवनचरित्रोंको सृष्टिक्रम विरुद्ध बातों से भर देते हैं, खैर अवतारों की कथाओं को मैं फिर कहूंगा, प्रथम अपनी ही दुर्दशाको सुनाता हूं, सब ही लोग मुझे मधुसूदन और कैटभारि कहते हैं परन्तु मधुकैटभ के मारने के समय न मालूम मुझे किस २ का उपासक पुराणवालों ने बना दिया है।

गणेश पुराण के १७ और १८ अध्याय में लिखा है कि जब मैं मधु और कैटभ नामक दैत्यों से लड़ता लड़ता थक गया और वह न मरे तब मैंने गन्धर्व का रूप धारण किया मैंने जो वन में जाके बीन बजाई और गाया उस से शिव महाराज बड़े प्रसन्न हुए और अपने दूतके द्वारा मुझे अपने पास बुलाया और मेरे गाने को सुन के बड़े प्रसन्न होके बर देने को तैयार हुए मुझ से तब मधुकैटभ की कथा को सुनके शिव महाराज बोले कि तुमने गणेश की पूजा नहीं की थी इस से ही तुम्हारा विजय नहीं हुआ अब मैं तुम को गणेश का मन्त्र बताता हूं उस को जपने से गणेश तुम पर प्रसन्न होंगे और उस से ही तुम को विजय प्राप्त होगा, शिव ने यह भी कहा कि गणेश के ७०००००००० मन्त्र हैं, मैं उन में से षडक्षर मंत्र तुम को उपदेश करता हूं, मैंने शिव से उस मंत्र को ग्रहण करके १०० वर्ष तक जपा तब गणेश जी ने प्रत्यक्ष होके दर्शन दिये, देखिये तो यह गणेश जी और शिव जी कैसे धोखे बाज़ हैं कि जब मेरे गीत सुनने को शिव जी ने मुझे अपने पास बुलाया था उस समय गणेश जी वहीं मौजूद थे परन्तु वहां पर उन से वर न दिया गया फिर जो गणेश जी मेरे ऊपर मेहर्बानी करने को १०० वर्ष के बाद आये थे उन के रूप का तेज ३०००००००० सूर्यों के समान लिखा है भला विचारिये तो सही कि एक सूर्य के उत्ताप से तो जगत् भर उत्तप्त रहता है परन्तु तीन करोड़ सूर्य

के समान तेज वाले गणेश से मैं भी न जला और न मधु कैटभ जले, गणेश पुराण में तो यह लिखा है और मार्कण्डेय पुराण तथा देवी भागवत में लिखा है कि देवी की कृपा से मैंने मधुकैटभ को मारा, हां एक बात तो मैं भूल ही गया जिन गणेश जी का मंत्र मुझे १०० वर्ष तक जपना पड़ा था वा यों कहिये कि जिनकी उपासना से मुझे सिद्धि मिली थी, वह गणेश जी कौन हैं ! देववृन्द ! वह गणेश जी भी पार्वती के शरीर के मैल से उत्पन्न हुए थे, लिखा है कि एक समय पार्वती जी महादेव से रुष्ट होके दूसरे वन में चली गई थीं, उन्हों ने वन में जाके अपनी रक्षा के वास्ते अपने शरीर के मैल से एक मनुष्याकार पुतला बनाया और उसे सजीव करके द्वार पर बिठला दिया, जब महादेव अपने गणों के सहित पार्वती को ढूंढते हुये वहां आये और भीतर जाने लगे तब गणेश ने उन को रोका इस कारण परस्पर घोर संग्राम हुआ उस संग्राम में महादेव ने गणेश का सिर काट डाला इस बात को देख कर पार्वती जी बड़ी चिन्तायुक्त हुईं और शिव महाराज से कहने लगीं कि इस को जिला दो अन्यथा मैं भी प्राण त्याग दूंगी इस हठको सुन के शिव महाराज ने अपने दूतोंको इधर उधर भेज के गणेशके सिर को तलाश कराया परन्तु गणेश के सिर को प्रथम ही देवता लोग उठाके ले गये थे और चन्द्रलोक में रक्खा था अतएव महादेव के

दूत एक हाथी के बच्चे को और उस की माता को अचेत सोया हुआ देख के उस बच्चे के सिर को काट लाये शिव महाराज ने उस ही हाथी के बच्चे के सिर को गणेश के कबन्ध पर रख दिया और उसे जिला दिया देखिये देववृन्द ! कैसी शल्यक्रिया है कि दूसरे के सिर को धड़ पर रख के छू मंतर किया और झट से वह जी गया यदि कहा जाय कि शिव महाराज सर्वशक्तिमान् थे तो क्यों नहीं विना सिर के ही गणेश को जिलाया ? ।

ऐसी हास्यास्पद कथा कुछ गणेश के ही विषय में नहीं लिखी वरन मुझे भी देवतों ने एक वार ऐसे छू मंतर से जिलाया था, महाशय ! इस बात को मैं पारसाल की सबजेक्ट कमीटी में बयान कर चुका हूं अब एक बात और सुनिये, जिस गरुड़ जी को मेरा वाहन बताते हैं उस से ही मेरा घोर युद्ध भी लिख दिया है यह कहा नी ऐसी अद्भुत रीति से लिखी है कि जिस को सुनते ही हंसी आती है, लिखा है कि कश्यप की स्त्री कद्रु (सर्पों की माता) और विनता गरुड़ की माता में एक दिन सूर्य्य के घोड़े के विषय में विवाद हुआ कद्रु कहती थी कि सूर्य्य के रथ में जो घोड़े जुते हैं वह काले हैं और गरुड़ की माता उन को सफेद बतलाती थी, सर्प अपनी माता को सच्ची सिद्ध करने के वास्ते सूर्य्य के घोड़े के शरीर में जा लिपटे इस से वह घोड़े काले मालूम होने लगे, जब विनता शपथ के अनुसार कद्रु की दासी हो ग-

ई तब दासी भाव से सब कार्य्य करने लगी, एक दिन गरुड़ ने अपनी माता से पूछा कि तुम इस के घर दासी का काम क्यों किया करती हो ? गरुड़ की माता ने प्रथम की सब कथा कह सुनाई, गरुड़ ने उस कथा को सुन के पूछा कि कोई ऐसा कार्य्य है जिस के करने से तुम्हारा दासीपन छूट जाय, गरुड़ की माता ने अपनी सौतिन से पूछ के गरुड़ से कहा कि यदि तुम अमृत लाके सर्पों को पिलाओ तो मैं दासीपन में मुक्त हो जाऊं इस बात को सुनके गरुड़ जी अमृत लाने के वास्ते चले, मार्ग में अपने पिता के दर्शन की उन को श्रद्धा हुई तब वह अपने पिता के पास गये और दण्डवत् प्रणाम करके उन से कहा कि पिता ! मुझे क्षुधा ने बहुत सताया है, आप मुझे बताइये कि मैं क्या खाऊं गरुड़ के पिता ने कहा कि एक द्वीप में शूद्र ही बसते हैं तुम उन सब को खाजाओ, परन्तु खबरदार किसी ब्राह्मण को मत खाना गरुड़ ने अपने पिता से पूछा कि मैं ब्राह्मण को क्योंकर पहिचानूंगा उस के पिता ने कहा कि जो मनुष्य तेरे पेट में न गले उसे ही तुम ब्राह्मण समझना गरुड़ उस द्वीप में गये और सम्पूर्ण द्वीपवासियों को चोंच में भरके निगलने लगे उन में ही एक ब्राह्मण भी था वह गरुड़ के पेट में तो चला गया परन्तु पेट में जब न गला तब पेट में थोड़ासा उछलने लगा, तब गरुड़ ने उस्से पूछा कि तू कौन है जो मेरे पेट में नहीं गलता है ? उसने पेट में से

ही उत्तर दिया कि ब्राह्मण हूं गरुड़ ने उससे कहा कि तुम फौरन मेरे पेट से निकल आओ! ब्राह्मण ने कहा कि मैंने जिस कहारिन को अपनी भार्य्या बना के रखा था उस को भी आप निकाल दीजिये तब मैं निकलूंगा, गरुड़ ने तथास्तु कह के दोनों को पेट से निकलने की आज्ञा दी इस आज्ञा को पाते ही वह ब्राह्मण कहारिन के स-हित पेट से निकल आया गरुड़ वहां से पेट भरके जब चले तब एक ऐसे बट वृक्ष पर बैठे कि जो कई योजन का था गरुड़ के बैठने से उस वृक्ष की शाखायें टूट पड़ीं और उस ही शाखा पर कई हज़ार बालखिल्या ऋषि तप करते थे यदि गरुड़ जी उस शाखा को छोड़ देते तो वह सब ऋषि दब के मर जाते, इस लिये गरुड़ जी उस शाखा को अपने पञ्जों में दबा के उड़े और बहुत दिन तक उड़ते ही फिरते रहे फिर अपने पिता से पूछा कि इन को मैं कहां रक्खूं, कश्यप ऋषि ने कहा कि इन को अमुक पर्वत पर जाके रख दो, ख़ैर उन को रख के गरुड़ जी अमृत लेने को चले जब स्वर्ग में पहुंचे तब अमृतकुण्ड के रख-वालों से और गरुड़ से भयानक युद्ध हुआ, फिर उन के हार जाने पर समस्त इन्द्रादि देवता गरुड़ से लड़ने को आये जब वह भी हार गये तब मुझ को सब ने बुलाया और मैं भी गरुड़ से लड़ने लगा, जब लड़ते २ मैं भी थका तब गरुड़ ने प्रसन्न होके कहा कि हे विष्णु! मैं तुम से बड़ा प्रसन्न हुआ मुझ से ईप्सित वर मांगो, मैं ने गरुड़ से यही

वर मांगा । कि तुम मेरे वाहन बनो (इत्यादि) देखिये ! देववृन्द कैसी असम्भव कथा है क्या हम लोग छल से किसी को अपने वश में करते हैं ? जब कि मुझे पुराण वाले सर्वशक्तिमान् मानते हैं तो फिर ऐसे ऐसे ढकोसलों से मुझे शक्तिहीन क्यों सिद्ध करते हैं ? मेरे अवतारों में से जिस कृष्ण को पूर्णावतार मानते हैं उस के विषय में जो २ असम्भव और अश्लील कथा लिखी हैं उन का आप लोगों के सन्मुख वर्णन करना केवल समय को नष्ट करना मात्र है तौ भी दो अपूर्व कथाओं को मैं अवश्य यहां वर्णन करूंगा आप लोगों ने सुना होगा कि कृष्ण के बड़े भाई बलराम से रेवती का विवाह हुआ था, यह रेवती महाराज रैवत की कन्या थीं, इस कन्या को अत्यन्त रूपवती और गुणवती देख के उस के समान वर की जिज्ञासा करने को महाराजा रैवत अपनी कन्या के सहित ब्रह्मा के पास ब्रह्मलोक में गये, ब्रह्मा के पास उस समय एक और मामला पेश था इस कारण राजा रैवत वहां बैठ गये और ब्रह्मा से विनय करने को अवसर की प्रतीक्षा करने लगे, जब अवसर मिला तब राजा ने ब्रह्मा जी से सुयोग्य वर की जिज्ञासा की ब्रह्मा जी ने हंस के उत्तर दिया कि राजन्! जितनी देर तुम यहां बैठे रहे उतनी देर में मृत्युलोक में अनेक युग बीत गये इस कारण तुम्हारे वंश में अब कोई भी नहीं रहा है, अब तुम शीघ्र चले जाओ और इस कन्या का यदुवंशीय बलराम से विवाह कर दो ब्रह्मा

की आज्ञा ले राजा रैवत मृत्युलोक में आये और बलराम से रेवती का विवाह कर दिया, क्यों महाशय! रेवती का शरीर क्या पार्थिव परमाणुओं का नहीं था? जो उस को मृत्यु ने न घेरा, यदि यही बात थी तो अब तक क्यों न जीवित रही? यदि यही कहिये कि ब्रह्मलोक में चले जाने से मृत्यु न हुई तो बिना शरीर त्याग किये ब्रह्मलोक में जाना ही क्योंकर सम्भव है? सत्य तो यह है कि लाल बुझक्कड़ों ने दूसरी कथा मुचकुन्द की भी ऐसी ही रची है कि राजा मुचकुन्द देवतों को दैत्यों से बचाने के निमित्त स्वर्ग में गये परन्तु यहां उन का कुल क्षय हो गया, यदि यह दोनों कथा सत्य होती तो महाराजा दुष्यन्त जब इन्द्र को सहायता देने स्वर्ग में आये थे तब मृत्युलोक में उन की स्त्री शकुन्तला और उन का पुत्र भरत क्यों जीता रहा था, क्या उन के वास्ते मृत्यु का दूसरा नियम था, और महाराजा रैवत तथा मुचकुन्द के वास्ते दूसरा नियम था ॥

देववृन्द! इन कथाओं से ही सिद्ध होता है कि मेरे अवतारों के विषय में भी सब मिथ्या कथा लिखी हैं। अवतार लेने के जो कारण पुराणवालों ने लिखे हैं वह भी हास्यास्पद ही हैं, भला सोचिये तो कि जरा से बल वाले कंस को मारने के वास्ते यदि मुझे स्वयं अवतार लेने की ज़रूरत होती तो जिस जगत् में कंस सरीखे करोड़ों बलवान् भरे हैं उस को प्रलय करने के वास्ते तो

मुझ में शक्ति ही सिद्ध न होगी, फिर अवतारों का भी ठिकाना नहीं है कि कितने हुये क्योंकि गोकुलिये गोसाईं सब अपने को विष्णु का अवतार ही समझते हैं, एक और भी आश्चर्य की बात है कि श्रीमद्भागवत में कृष्ण को अनेक स्थलों में सर्वज्ञ लिखा है और यह भी लिखा है कि कृष्ण ने अपने गुरु सान्तपन के मरे हुए पुत्रों को ला दिया था परन्तु जब उनके पोते अनिरुद्ध को बाणासुर ने अपने घर में कैद कर लिया था तब उन को यह भी न मालूम हुआ कि मेरा पोता कहां चला गया, जब नारद ऋषि ने जा के उनको सब गुप्त हाल सुनाया तब उनको मालूम हुआ कि अनिरुद्ध को बाणासुर की कन्या ने चित्र रेखा के द्वारा मंगा लिया है। न मालूम उस समय कृष्ण की सर्वशक्तिमत्ता और सर्वज्ञता कहां को उड़ गई थी, हां एक बात और भी कहना मैं भूल गया कि, जब बालक अवस्था में यशोदा ने कृष्ण को मट्टी खाने के अपराध में बांधा था उस समय कृष्ण ने अपने मुख में तीनों लोक दिखा दिये थे, भला कहिये तो मुख था या दुनियां का नकशा था परन्तु जब दुर्योधन ने कृष्ण को कैद करने का प्रबन्ध किया उस समय सब सिटीपटांग भूल गई, यदि कृष्ण वास्तव में मेरा अवतार वा सर्वज्ञ होते तो अपने प्यारे भानजे अभिमन्यु को यमराज के घर से क्यों न लौटा लाते? असल में न कृष्ण मेरे अवतार थे और न सर्वज्ञ थे।

जिन प्रह्लाद को विष्णु का परम भक्त लिखा है और जिन को नृसिंह की कृपा से परम विज्ञान प्राप्त होना एवम् मोह से रहित होना भागवतादि पुराणों में लिखा है उन का बदरिकाश्रम में रहने वाले उन नारायण के साथ (देवी भागवत) घोर युद्ध लिखा है जिन को पुराण वाले विष्णु का अवतार मानते हैं (भागवत स्कं० १ अ०—तुर्य्ये धर्मकलासर्गे नरनारायणावृषीभूत्वात्मशमोपेतमकरोद्दुश्चरन्तपः) कहिये तो वह प्रह्लाद की नारायण भक्ति कहां को चली गई, फिर जिन नृसिंह जी की सब से अधिक प्रशंसा और शक्ति लिखी है उन के ही विषय में पुराणों के दादा गुरू आकाश भैरव तन्त्र में लिखा है कि जब नृसिंह जी का क्रोध किसी प्रकार से शान्त न हुआ तब देवतों ने शिव महाराज से जाके प्रार्थना की, शिव जी भी देवतों को अभय दान देके उनके क्रोध को शान्त करने का उपाय सोचने लगे जब कोई और उपाय न सूझा तब शिव जी ने शरभशालव पक्षिराज का रूप धारण किया और नृसिंह जी को पञ्जों में दबा के उड़ गये अनेक वर्षों तक शिवमहाराज नृसिंह को पञ्जों में दबाये आकाश में फिरते रहे, जब नृसिंह जी थके और घबड़ाये तब शिव की स्तुति की यही स्तुति दारुण सप्तक नाम से प्रसिद्ध है, इन शरभ जी के रूप को आप लोग सुनेंगे तो और भी चकित होंगे इन का रूप यों वर्णन किया गया है ।

चन्द्रार्काग्नित्रिदृष्टिः कुलिशवदनखश्चंचजात्युग्रजिह्वः ।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगौ भैरवोवाडवाग्निः ॥
ऊरुस्थौव्याधिमृत्यूशरभवरखगश्चण्डवातातिवेगः ।
संहर्त्तासर्वशत्रून् जयतिसशरभः शालवः पक्षिराजः ॥

अब कहिये क्या यह अवतारों के बहाने से मुझे गाली देना नहीं है ? फिर वामन के नाम से मुझे धोखे बाज़ और जालसाज़ बनाया है क्या मुझे पुराण वालों ने पार्शिय वा पक्षपाती समझ रक्खा है कि मैं इन्द्र के वास्ते पहिले छोटा सा रूप बना के भिक्षा मांगने जाता और फिर विकट रूप बनाता और बिचारे निरपराध बलि को छल के क़ैद कर देता, क्या मैं अन्यायी हूं कि निरपराध को दण्ड देता हूं फिर पुराण वाले यह भी कहते हैं कि वामन सदा बलि के द्वार पर पहरा दिया करते हैं क्या यह सम्भव है कि ईश्वर किसी का पहरेदार हो सक्ता है। खैर एक और भी बात मुझे याद आई है जब कृष्ण महाराज से शालव लड़ने को द्वारिका में गया था तब कृष्ण बलराम को द्वारिका की रक्षा के वास्ते घर पर छोड़ के आप शालव से लड़ने को आये तब घोर घमसान मच गया कृष्ण को छलने के वास्ते शालव ने माया से वसुदेव का सिर बनाया और कृष्ण को दिखला के कहने लगा कि ले मैं तेरे पिता का सिर काट लाया उस समय सिर को देख के कृष्ण महाराज के होश हवास गुम होगये और रण में मुख मोड़ के रोने लगे, बहुत देर के बाद जब ध्यान आया कि मैं

बलराम को रक्षा के वास्ते छोड़ आया था और बलराम ऐसे साधारण वीर नहीं हैं जिन को शाल्व क्षण भर में जीत लेता, इस से निश्चय होता है कि यह दानवी माया है देखिये तो कृष्ण की सर्वज्ञता को कैसा साफ उड़ा दिया है यह तो देवीभागवत की बात हुई अब भागवत् का हाल सुनिये इस—में लिखा है कि जब रुकमणी के गर्भ से प्रद्युम्न की उत्पत्ति हुई तब ही सूतिका गृह से प्रद्युम्न को कोई उठा ले गया, श्रीकृष्ण पुत्र के विरह से अत्यन्त दुखी हुए और कई दिन तक रोते फिरते रहे परन्तु बालक का कुछ भी पता न लगा तब नारद ने आ के कृष्ण को समझाया कि सम्बर दैत्य तुम्हारे पुत्र को उठा के ले गया है तुम कुछ मत घबड़ाओ वह स्त्री के सहित तुम से आ के मिलेगा, खैर अन्त में ऐसा ही हुआ कि प्रद्युम्न सम्बर दैत्य को मार अपनी स्त्री रति के सहित कई वर्ष पश्चात् श्रीकृष्ण जी के पास आया। पुराण-वालों से कोई पूछे कि जो श्रीकृष्ण अपने गुरुपुत्रों को लाने के समय सर्वज्ञ बने थे और मरे हुये गुरुपुत्रों को यमराज के पास लेने को गये थे वह इतना भी न जान सके कि मेरे पुत्र को कौन ले गया और न उस को छुड़ा के लाये, कहां तक कहूं अवतारों के विषय में खूब ही लीला रची है, इस के अतिरिक्त मुझे भी खूब ही कलङ्क लगाये हैं जय विजय के विषय में जो कथा लिखी है वह भी हंसी से भरी हुई है देवगण ! यह क्या हंसी की

बात नहीं कि जो स्वयं मुक्तिदाता है उस के ही पार्षदों को राक्षस बना दिया फिर—

"आप गलन्ते पाण्डिया यजमान भी गाले"।

इस कहावत के अनुसार जय विजय के कारण मुझे भी मछरी और कछुआ बनना पड़ा-फिर हर वार मैं उन को मुक्ति देता रहा पर वह बराबर जन्म लेते ही रहे, महाशय! मैं कहां तक कहूं या तो आप लोग पुराणों को ख़ारिज कीजिये नहीं तो मैं ईश्वरपन से इस्तीफा देता हूं, विष्णु महराज को और भी कुछ कहना था परन्तु एक ही व्याख्यान में कई दिन व्यतीत हो जाने के भय से उन का व्याख्यान रोक दिया गया॥

विष्णु भगवान् के बैठते ही सूर्य्यनारायण खड़े हुए और कहने लगेः—

देववृन्द! मुझे आप लोग भलीभांति जानते हैं कि मैं सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की उस महिमा को प्रकाशित करनेवाला हूं जिस से उस की अपूर्व कारीगरी और असीम विज्ञान का प्राणीमात्र को परिचय मिलता है, सृष्टि के आरम्भ में ही परमेश्वर ने मुझे इस अभिप्राय से निर्माण किया था कि मेरे आकर्षण से अनेक लोक अपनी सीमा पर स्थित रहें परन्तु पुराणवालों ने मेरी उत्पत्ति अद्भुत प्रकार से लिखी है। लिखा है कि कश्यप की स्त्री अदिति के गर्भ से मेरी उत्पत्ति हुई भला कहिये तो कि यदि मैं किसी स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होता तो मेरे

जन्म से पूर्व के मनुष्य अर्थात् मेरे माता पिता ही क्यों कर देखते, क्या वह लोग अन्धे थे ? इस ही प्रसङ्ग में मैं यह भी कहे देता हूं कि पुराणवालों ने मेरे मित्र वायुदेव को भी ऐसा ही दोष लगाया है, लिखा है कि जब वायु अपनी माता के गर्भ में थे तब इन्द्र उस की माता के गर्भ में घुस गये और बालक के ४९ टुकड़े कर डाले जब वायु की माता को चेत हुआ तब उस ने इन्द्र को श्राप दिया, क्या यह असम्भव और अश्लील बात नहीं है कि देवराज इन्द्र अपनी विमाता (Step mother) के गर्भ में चले गये ? खैर मेरे विषय में जो पुराणवालों ने लिखा है वह बिलकुल असत्य है, लिखा है कि दुर्वासा ऋषि से कुन्ती ने मन्त्र ले के मुझे मन्त्रबल से अपने पास बुलाया यह कन्या थी मैं ने उस से व्यभिचार की इच्छा प्रकट की जब वह सहमत न हुई तब मैं ने उसे वर दे के प्रसन्न किया, कहा कि तेरा कन्यापन नष्ट न होगा और तेरा पुत्र मेरे ही समान तेजस्वी होगा कुन्ती इस बात को सुन के राजी हुई और मैं ज़नाबिलजब्र के कसूर से बरी हुआ मगर (Repe case) कन्यात्व नष्ट का दोष तो मेरे ऊपर लग ही गया खैर ! कुन्ती के गर्भस्थापन कर मैं फिर आकाश में जा चमका और १० मास के पश्चात् कुन्ती के पुत्र उत्पन्न हुआ इस पुत्र की उत्पत्ति भी विलक्षण ही लिखी है कि कुन्ती के कान से वह लड़का पैदा हुआ वाह जी वाह ! क्या ही कथा गढ़ी गई है (मैं ठीक

कहता हूं कि यह कथा लाल बुझक्कड़ की इस कहानी के अनुसार है कि एक वार लाल बुझक्कड़ के ग्राम में कोई सौदागर हाथी ले आया उस को देख के ग्रामवासी चकित हुए और लाल बुझक्कड़ से पूछने लगे कि बतलाओ यह क्या है? लाल बुझक्कड़ ने उत्तर दिया कि " लाल बुझक्कड़ बूझिया और न बूझे कोय। रात इकट्ठी हो गई या दिल्ली वाला होय" बस इस ही प्रकार से राधा पुत्र का कर्ण नाम सुन के ही कान से पैदा होने की कहानी गढ़ी गई है) भला कान से भी कहीं पुत्र उत्पन्न होते सुने हैं फिर तारीफ यह है कि लोहे का जिरह बखतर पहिने ही उस का जन्म होना लिखा है, क्या कोई वैद्य किसी विद्या से सिद्ध कर सक्ता है कि माता के पेट में लोहे का जिरह बखतर बन जाय, आप लोग खूब समझ सक्ते हैं कि राधेय कर्ण को क्षत्रिय बनाने के वास्ते जो यह कथा गढ़ी गई इस में मुझे और पाण्डवों की माता कुन्ती को बड़ा भारी दोष लगाया है, फिर छाया को मेरी स्त्री लिखा है, नृसिंह पुराण के १८ अध्याय में मेरे वंश की अद्भुत कथा लिखी हैं, लिखा है कि त्वष्टा की कन्या संज्ञा से मेरा विवाह हुआ, जब वह मेरे तेज को न सह सकी तब अपने पिता के पास गई उस के पिता ने यह कह के मेरे पास उसे भेजा कि मैं सूर्य के पास आके सूर्य के तेज को कम करदूंगा तब फिर वह मेरे पास आई और रहने लगी उस के गर्भ से

मेरे तीन सन्तान हुईं, वैवस्वत मनु, यम और यमी नाम कि एक कन्या इस के पश्चात् संज्ञा मेरे तेज को न सह सकी तब आप तो घोड़ी बन के उत्तर कुरु देश को चली गई और अपनी छाया को मेरी स्त्री बना के घर छोड़ गई तब मुझे इतना भी ज्ञान न रहा कि यह मेरी असल स्त्री नहीं है तब उस छाया से मेरे तीन सन्तान फिर हुईं, मनु शनैश्चर और तापती नाम की कन्या, छाया अपनी सन्तान से अधिक प्यार करती थी और संज्ञा की सन्तान से कम प्रेम रखती थी इस कारण यम और यमी ने मुझ से कहा तब मैंने छाया को समझाया पर छाया ने क्रोध कर के यम को शाप दिया कि तू प्रेतों का राजा हो और यमी को शाप दिया कि तू नदी हो जा, तब मैंने भी छाया की सन्तान को शाप दिया कि शनैश्चर तू क्रूर ग्रह हो जा, और तापती तू भी नदी हो जा, तब मैंने ध्यान कर के देखा तो मालूम हुआ कि संज्ञा घोड़ी का रूप धारण किये उत्तर कुरु देश में विचरती है तब मैं भी घोड़ा बन के भागा और उस से दो पुत्र उत्पन्न किये वही आप लोगों के डाक्टर अश्विनी कुमार हैं, भला कहिये तो मुझे कैसा घोड़ा बनाया है, कोई पुराण बनाने वाले पोप से पूछे कि जब मैं घोड़ा बन के कई वर्ष तक उत्तर कुरु देश में रहा था तब जगत् में प्रकाश कौन करता था, देववृन्द मैं आपलोगों से प्रार्थना करता हूं कि इन देवकुलकलङ्कारी पुराण पुस्तकों को

इतिहासों की लिष्ट (सूचीपत्र) से अवश्य काट दीजिये

सूर्य्य नारायण के वचन की ताईद महर्षि अगस्त ने की और कहा कि पुराणों का नाम आज से पंच (दि-ल्लगी के अखबार) रखा जाय क्योंकि इन में ऐसी ही हंसी की बातें लिखी है, मेरे विषय में लिखा है कि अगस्त का जन्म घड़े से हुआ और फिर लिखा है कि मैं समुद्र को पी गया, भला जो खुद घड़े से पैदा हो वह समुद्र को क्यों कर पी सक्ता है ? क्या घड़े में समुद्र समा सक्ता है ? अब मेरे चरित्रों को सुनिये कि दक्षिण पथ में आतापि और बातापि नाम के दो दैत्य रहते थे वह सदैव छल से ब्राह्मणों को निमंत्रित करके बुलाते थे और उन दैत्यों में से एक बकरा बन जाता था और दूसरा उसे मार के ब्राह्मण को खिला देता था एक दिन मेरा भी उन्हों ने निमंत्रण किया पर यहां तो ठहरे गुरु घण्टाल उसे खा के पचा गये फिर वह भी मारा गया इस के अनन्तर मैंने समुद्र को पिया और मूत्र के मार्ग से निकाल दिया गोया व मेरे इन्द्रियजुलाब था फिर विन्ध्याचल पर्वत सूर्य्य को रोकने के वास्ते ऊंचा हो जाता था तब देवतों ने मुझ से प्रार्थना की मैं पर्वत के पास गया वह प्रणाम करने को पृथिवी में गिरा मैंने उस के सिर पर हाथ रख के कहा कि जब तक मैं तीर्थ यात्रा कर के न लौटूं तब तक तुम ऐसे ही पड़े रहो बस मैं तो आके तारा बन गया और

विन्ध्याचल अब तक वैसे ही पड़ा है इस कथा में प्रथम तो मुझे धोखेबाज सिद्ध किया फिर सृष्टिक्रमविरुद्ध जड़ का चैतन्य के समान प्रणाम करना और मेरे वचन को मानना आदि असम्भव बातें सिद्ध की हैं क्या हम महर्षि होके भी मांस भक्षण करते ? समुद्र का क्षार होना पुराणों से जो प्राचीन पुस्तक हैं उन में बराबर लिखा हुआ है परन्तु उस को भी मेरा मूत्र लिख दिया इन कथाओं से हम लोगों को बड़े दोष लगते हैं इस कारण इन को ज़रूर ही मन्सूख कर देना चाहिये ।

इस के अनन्तर सांख्यशास्त्र के प्रणेता महर्षि कपिल खड़े हुए और कहने लगे कि मैंने जो सांख्यशास्त्र बनाया है उस को विना विचारे और पढ़े ही भागवत में मेरे मत को प्रकाशित किया है इस कारण मैं भागवत बनाने वाले पर मदाख़लत बेजा का जुर्म क़ायम कर के नालिश करने वाला था परन्तु अब आप लोगों ने पंचायत करके भागवत को रद्दी करने का प्रस्ताव किया है इस कारण मैं आप लोगों को धन्यवाद देता हूं पुराण वालों ने मुझे भी चोरों का रक्षक लिख दिया है उन्हों ने लिखा है कि जहां मैं तपश्चर्य्या करता था वहीं राजा इन्द्र राजा सगर के अश्वमेधार्थ छोड़े घोड़े को चुरा के बांध गया मैं समाधिस्थ था इस कारण मुझे कुछ ख़बर न पड़ी जब राजा सगर के ६०००० पुत्र घोड़े को सब जगह ढूंड के हार गये तब उन्हों ने पृथवी के नीचे ढूंढने

के अभिप्राय से पृथिवी को खोदना आरम्भ किया उन्हीं के खोदने से सात समुद्र बन गये (और जब गंगा जी आईं तब उन में पानी भरा) पृथ्वी को खोदते खोदते उन को मेरा आश्रम मिल गया तब उन्हों ने मुझे पीड़ा दी उस पीड़ा से मेरी समाधि खुल गई ज्योंही मैंने उन को नजर उठा के देखा, त्योंही वह सब भस्म हो गये भला कहिये क्या मैं ऐसा हत्यारा हूं कि ६०००० मनुष्यों को मार डालता हमलोग ऋषि क्या हुए मलकुलमौत हो गये फिर राजा प्रियव्रत के रथ की कथा इस से भी विलक्षण लिखी है अर्थात् सूर्य की स्पर्द्धा से जगत् में बराबर चान्दना रखने के वास्ते जो सात दिन स्वयम् रथ पर चढ़ के घूमे थे उन के प्रकाश से सात दिन तक जगत् भर में चांदना रहा था और उन के रथ के एक ही पहिये की लीक से सात समुद्र बन गये, इन ही राजा प्रियव्रत को ११ अरब वर्ष तक राज्य करते लिखा है सभ्यगण अब कहिये किस को सच्चा माना जाय अर्थात् राजा सगर के पुत्रों के खोदने से समुद्र बने वा राजा प्रियव्रत के पहिये से समुद्र बने हम तो इन दोनों ही कथाओं को मिथ्या समझते हैं क्योंकि वेदों में लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने समुद्र को बनाया।

महर्षि कपिल के व्याख्यान का अनुमोदन करने को महर्षि वशिष्ठ दण्डायमान हुए और यों कहना आरम्भ किया। सभ्यवृन्द! और सभापते पुराणोंके विषय में मैं क्या

कहूं वह तो असम्भव और प्रमाण शून्य कहानियोंका भण्डार है महर्षि विश्वामित्र और मेरे विरोध के कारण में लिखा है कि एक वार विश्वामित्र जी (जब राजा थे) वन में शिकार खेलनेको आये मैंने उनको धर्म्मज्ञ राजा समझके अपने आश्रम पर निमंत्रित किया उन्हों ने मेरे आश्रम पर खान पान की जब कुछ भी सामग्री न देखी तब बड़ा आश्चर्य करने लगे मैंने उन का अभिमान भङ्ग करने को उन की महती सेना और अमात्यवर्ग के सामने ही सुरभी गौ से कहा कि तुम सब का यथायोग्य सन्मान करो मेरे वचन को सुन के सुरभी ने हुंकार छोड़ी उसके हुंकारते ही सहस्रों दास और दासी उत्पन्न होगये फिर सुरभी की हुंकार से ही सब प्रकार के भक्ष्य भोज्य और चोष्य तथा लेह्य पदार्थ उत्पन्न हो गये और दास दासियों ने सब के पास पहुंचा दिये, इस अद्भुत बात को देख के गाधिसुअन विश्वामित्र बड़े चकित होके मुझ से कहने लगे कि हे महर्षे! यह गौ तो हमारे योग्य है तुम भिक्षुक इसे लेके क्या करोगे! मैंने कहा, राजन्, यह हमारी यज्ञ धेनु है इस को लेने की आप इच्छा न कीजिये, मेरे बहुत समझाने पर भी विश्वामित्र न माने और अपना क्षात्र बल दिखाने लगे, तब मैंने कहा कि तुम जबर्दस्त हो यदि शक्ति रखते हो तो मेरी यज्ञ धेनु को ले जावो, विश्वामित्र ने अपने सैनिकों को आज्ञादी कि वशिष्ठ की धेनु को खोल लो जब वि०मि० के सेवक

मेरी गौ को खोल के ले चले तब धेनु ने मुझ से कातर स्वर के साथ कहा कि महर्षे मेरा क्या अपराध है जो आप मुझे परित्याग करते हैं, मैंने कहा सुरभे! मैं तुझे परित्याग नहीं करता हूं वरन राजा विश्वामित्र जबर्दस्ती तुझे छीन के लिये जाता है, यदि तू अपनी रक्षा कर सकती हो तो कर मेरे वचन को सुन के धेनु ने हुंकार किया और उसके क्रोध करते ही उस के खुरों से खुरासानी राक्षस तथा और २ प्रकार के सहस्रों राक्षस उत्पन्न होगये और विश्वामित्र की सेना से युद्ध करने लगे उन राक्षसों ने क्षण मात्र में विश्वामित्र की सेना को विध्वंस कर दिया, जब विश्वामित्र की सब सेना मारी गई और वि०मि० एकले खड़े रह गये तब उन को क्षात्र बल पर अविश्वास और घृणा उत्पन्न हुई और वह उसही समय राज्य छोड़ तप करने वन को चले गये, आप लोग विचारिये कि वह गौ थी वा ब्रह्मा की भी दादी थी जिस के हुंकारतेही सहस्रों दैत्य पैदा होगये, यदि यही बात है तो इन्द्र ने क्यों नहीं अपने घर में एक वैसी गौ पाली जिस से कोई भी दैत्य दानव स्वर्ग पर चढ़ाई न कर सकते, खैर एक और अद्भुत कथा सुनिये मेरे यजमानों के साथ मेरी लड़ाई का कैसा बयान पुराणों में लिखा (दे० भा० स्क० ६ अ० १५) राजा इक्ष्वाकु के १२ वें पुत्र राजा निमि ने एक बार मुझे यज्ञ करने को बुलाया, राजा निमि का वह यज्ञ ५००० वर्ष में पूर्ण होने वाला था

परन्तु इस यज्ञ से पहिले मुझे देवराज इन्द्र ने यज्ञ करने को निमंत्रित किया इस कारण मैंने राजा निमि से कहा कि प्रथम मैं इन्द्र का यज्ञ कराय आऊं पश्चात् तुम्हारा यज्ञ कराऊंगा अभी तुम यज्ञ मत करो, राजा निमि ने कहा कि मैं सब ऋषियों को बुला चुका हूं और सब सामग्री भी इकट्ठी कर चुका हूं अब यज्ञ को नहीं रोक सकता हूं आप हमारे वंशके पुरोहित हैं इस कारण हमें छोड़ के धन के लोभ से इन्द्र के यहां तुम को जाना उचित नहीं है परन्तु मैंने राजा निमि का कहना न माना और मैं इन्द्र के यहां यज्ञ कराने चला गया तब राजा निमि ने महर्षि गौतम को पुरोहित बनाके यज्ञ करलिया जब मैं इन्द्र की यज्ञ को समाप्त करके ५००० वर्ष के पश्चात् राजा निमि के घर लौट के गया तब देखा कि राजा शयन करते हैं राजा के सेवकों ने राजा को न उठाया तब मुझे ऐसा क्रोध आया कि मैंने राजाको शाप दिया कि तेरा शरीर नष्ट होजाय जब मैंने शाप दिया तब राजा के सेवकों ने राजा को जगाया वह जागके मेरे पास आया और कहने लगा कि महर्षे! तुम ने अकारण मुझे शाप दिया और प्रथम लोभवश मुझ यजमान के यज्ञ को छोड़ के इन्द्र के घर चले गये थे यदि जागता होता और तुम्हारे पास न आता तब अवश्य अपराधी होता परन्तु तुम ने मुझ निद्राग्रस्त को शाप दिया इस कारण तुम्हारा अविवेक पूर्ण और क्रोधी शरीर भी नष्ट

होजाय, राजा के शाप को सुनके मैं ब्रह्मा के पास गया और उनसे सब वृत्तान्त सुनाया ब्रह्मा ने कहा तुम्हारा दूसरा जन्म मित्रावरुण के यहां होगा और तुम्हारा विज्ञान विनष्ट न होगा खैर मेरा दूसरा जन्म हुआ और फिर घड़े से मेरी उत्पत्ति हुई, अब राजा निमि का हाल सुनिये उस का भी शरीर नष्ट हुआ परन्तु ब्रह्मा के वर से उस का वास समस्त मनुष्यों के नेत्रों पर होगया, देखिये तो क्या दिल्लगी की कथा है कि राजा का निवास सब मनुष्यों के नेत्रों पर होगया क्या उस से पूर्व मनुष्यों का पलक (निमेष) नहीं लगती थीं ? यदि यही बात है तो महर्षि गौतम ने जो जीव के साधारण लक्षण लिखे हैं वह क्या मिथ्या है ? महर्षि वशिष्ठ जी की बात को सुन के सभापति जी ने अपने आसन से उठ के कहा कि अभी तक किसी वस्तु के अधिष्ठातृ देवता ने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है जिस से उस गरोह की राय भी जाहिर हो, लिहाजा अब किसी गरोह के देवता को अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये श्रीमान् सभापति जी की आज्ञा को सुन के सब नदियों के अधिपति श्रीमान् समुद्रदेव खड़े हुए और कहने लगे कि—

सभासद्वृन्द ! पुराण वालों ने जो मेरी दुर्दशा की है वह अकथनीय है, आप लोगों ने मेरे मथने की कहानी को अवश्य सुना होगा ? देखिये तो कैसा वाहियात झगड़ा मचाया है कि मेरे मथने के वास्ते मेरु पर्वत को

उठा के देवतों ने मेरे बीच में डाल दिया फिर सर्पराज बासुकी को नेती (रस्सी) बना के घर्राटे के साथ घुमाया उस घुमाने में भी विष्णु ने चालाकी की कि दैत्यों को सर्पराज के मुख की ओर खड़ा किया और देवतों को पूछ की ओर खड़ा किया जिस से सर्प का विष दैत्यों को ही चढ़े और देवता उससे बचे रहें खैर यह भी चालांकी चमत्कारिणी और हितकारिणी न हुई और न सर्प ने काटा तब जो २ चीज अच्छी २ निकलीं वह देवतों को मिलती गईं और बुरी २ चीज़ विचारे दैत्यों को दीं, उच्चैश्रवा घोड़ा तो खुद देवराज ने हथियालिया, लक्ष्मी विष्णु को पसन्द हुई और मरे विचारे भोलानाथ कि विष उन को पीना पड़ा फिर जब मदिरा निकली तब तो वह दिल्लगी हुई कि भांड़ों को भी मात कर दिया, दैत्यों को छलने के वास्ते स्वयम् विष्णु भगवान् को मोहनी रूप धारण करना पड़ा, उस रूप को देख के हमारे भोलानाथ जी ऐसे बहके कि विष्णु को भी छकड़ी भूल गई, उन को पिण्ड छुड़ाना कठिन होगया खैर विष्णु ने उस ही मोहिनी रूप से दैत्यों को छलके देवतों को अमृत पिलाया भला सोचिये तो कि खारी पानी में अमृत कहां से आया सो भी अगस्त ऋषि के मूत्र में, देव वृन्द! क्या पुराण वालों ने आप लोगों को यह गाली नहीं दी है कि अगस्त ऋषि के पेशाब से मेरी उत्पत्ति लिखी और उस से उत्पन्न हुये अमृत को आप लोगों को पान कराया; फिर यह भी

विचारने की बात है कि मुझ में क्या किसी ने गुड़ वा महुआ घोल रक्खे थे जो मुझ में से शराब निकल आई? इस के अतिरिक्त जिन धन्वन्तरि के पिता दीर्घतमा थे और जो काशी के राजकुल में पैदा हुए थे उन धन्वन्तरि की भी उत्पत्ति मेरे जल में से ही हुई बतलाते हैं क्या? धन्वन्तरि कछुए या मछरी थे जो पानी से उत्पन्न होते? फिर सुश्रुत में धन्वन्तरि ने स्वयम् कहा है कि—

"अहंहि धन्वन्तरिरादिदेवोजरारुजामृत्युहरोमराणाम्।
शल्याङ्गमङ्गैरपरैरुपेतम् प्राप्तोस्मिगाम्भूयइहोपदेष्टुम्" ॥

नहीं मालूम धन्वन्तरि ने यह शेखी क्यों बघारी है? यदि मेरे मथने से धन्वन्तरि की उत्पत्ति होती तो वह अपने मुंह से आदि देव क्यों बनते? क्या अपने मुंह से मिठ्ठू बनना सभ्यता से बाहर नहीं है ॥

महाशय! जिन नदियों का मुझे पति लिखा है उन की कथा सुनिये, दे० भा० में लिखा है कि एक दिन ब्रह्मा के दर्बार में गङ्गा जी खड़ी थी इन्द्र भी दर्बार में हाजिरी देने को उस ही समय पहुंच गये इन के अलावा और २ देवता भी दर्बार में हाजिर थे, इत्तफाकिया वायु से गङ्गा के शरीर का वस्त्र उड़गया इससे सब देवतों ने नीची नजर करली परन्तु देवराज टिग्गी बांधकर देखते रहे और गङ्गा जी भी मुसकराई, इस धृष्टता (बेअदबी) को देख कर ब्रह्मा ने दोनों को शाप दिया कि तुम मनुष्ययोनि

में जन्म लो इस ही कथा की भूल भलैया में पुराणवालों ने एक और भी कथा जोड़ दी है, जब गङ्गा जी शाप पाके ब्रह्मा के दर्बार से लौटी आती थीं तब न्हों ने देखा कि आठों वसु रास्ते में बैठे रो रहे हैं, वह सब गङ्गा जी को देखकर और भी रोये तब गङ्गा जी ने उन से पूछा कि तुम लोग क्यों रोते हो ? उन्हों ने उत्तर दिया कि हम सब को वशिष्ठ ऋषि ने मनुष्य योनि में जन्म लेने को शाप दिया है शाप का कारण पूछने पर वसुओं ने कहा कि हम सभी अपनी स्त्रियों को साथ ले के वनविहार (सर) करते २ वशिष्ठ जी के आश्रम पर पहुंचे वशिष्ठ जी ने अपनी यज्ञ धेनु से अतिथिसत्कार कर के सब पदार्थ लेके हम लोगों का सत्कार किया तब गौ की इस अपूर्व शक्ति को देख कर हम में से एक वसु की स्त्री ने अपने पति से कहा कि इस गौ को ले लेना चाहिये स्त्री के अनुचित हठ से उस वसु ने गौ को चुरा लिया परन्तु वह दिव्य गौ थी इस कारण बोल उठी कि इस से वशिष्ठ महाराज क्रुद्ध हुये और हम लोगों से बोले कि तुम मनुष्यों के समान बुद्धि रखते हो इस कारण तुम सब मनुष्ययोनि में जन्म लो महर्षि के इस शाप को सुन कर हम लोगों ने बड़ी विनय की उस से वशिष्ठ जी का जब क्रोधशान्त हुआ तब उन्हों ने कहा कि जिस ने गौ चुराई है वह अधिक दिन तक मनुष्य रहेगा और अन्य वसु जन्म लेते ही शाप से मुक्त हो जायंगे हे गंगे

इस ही दुःख से हम लोग रो रहे हैं, गङ्गा जी ने यह सुन के उन्हें संतोष दिया और अपने दुःखड़े को सुनाया तब यह सलाह ठहरी कि वसु गङ्गा के गर्भ में जन्म लें और यही किया गया और देवराज इन्द्र राजा शान्तनु बने और गङ्गा उन की पत्नि हुईं जब वह अपनी प्रतिज्ञानुसार सात पुत्रों को मार चुकीं तब वही आठवां पुत्र भीष्म उत्पन्न हुये और पिता के वर से स्वाधीन मरण होगये। यह तो गङ्गा जी की कथा हुई, यमुना और तापती का हाल आप लोग सुन ही चुके हैं इन के अतिरिक्त और भी कई एक ऐसी नदी हैं जिन को पौराणिक लाल बुझक्कड़ों ने पहिले जन्म की मानुषी लिखी हैं और वह परस्पर के शापों से नदी हो गई हैं परन्तु यह किसी पुराण में नहीं लिखा कि लण्डन की टेम्स नदी पहिले जन्म में कौन थी हां एक बात तो मैं कहना भूल गया कि एक नदी राजा की राल से बनी है और वह राजा जिस को परम धर्मात्मा महाराज हरिश्चन्द्र का पिता लिखा है वह अभी तक आधे स्वर्ग में टंगा है और उस के मुख से राल गिर रही है बस वही राल नदी होके बहती है इस नदी का नाम कर्मनाशा इस कारण है कि उस में स्नान करने से व उस का जल स्पर्श करने से ही मनुष्य के पूर्वकृत सब सुकर्म नष्ट हो जाते हैं क्या मैं आप लोगों से यह प्रश्न कर सक्ता हूं कि उस नदी के आस पास निवास करने वाले पाप पुंज नहीं बन गये

गे ? क्या उन लोगों के वास्ते ईश्वर दयालु और न्यायकारी नहीं रहा है ? फिर आश्चर्य यह है कि उस ही नदी के किनारे पर बसी हुई गया पुरी में पितरों का श्राद्ध करने से स्वर्ग का फाटक खुल जाता है उपर भी तुर्रा यह है कि जिन पितरों का गया में श्राद्ध हो जाता है उन को मुक्ति हो जाती है पर फिर भी उन का वार्षिक श्राद्ध होता रहता है। देववृन्द ! मैं प्रकरण विरुद्ध श्राद्ध के विषय को कहने लगा था अब मैं केवल यही कहके अपने व्याख्यान को समाप्त करूंगा कि श्री पौराणिक गोपराज ने अपने मन घड़त भूगोल में लिख दिया है कि शराब का घीव का और ऊख के रस का भी समुद्र है यदि यह बात सत्य होती तो सब लोग मजे से घीव के समुद्र से घड़े क्यों न भरलेते और मद्य प्रिय अंग्रेज उस खुदाई शराब का व्यापार क्यों न करते ? इस के अतिरिक्त यदि शराब का समुद्र होता तो मुझे मद्य के शराब क्यों निकाली जाती ? सभ्यवृन्द ! मैं तो यही चाहता हूं कि जो पुस्तक मुगालते से भरे हुये हैं उन को मान्य पुस्तकों की सूची में से अवश्य काट देना चाहिये।

समुद्र का व्याख्यान हो जाने के अनन्तर भगवती भूमि उठीं और यों कहने लगीं देववृन्द ! आप लोग जानते हैं कि जिन परमाणुओं से मेरा संगठन हुआ है वह परमाणु नित्य हैं और उन का संयोग ईश्वर ने सृष्टि के

आरम्भ में किया है, परन्तु पुराण वालों ने मेरी पवित्रता को घटाने के निमित्त लिख दिया है कि मधु और कैटभ की चर्बी से पृथ्वी बनी है भला विचारिये तो कि यदि मधु कैटभ से पहिले मैं न होती तो जिस जल पर विष्णु सोये थे वह किस के आधार पर ठहरता ? फिर मेरे आधार के विषय में वह बहार की है कि जिस से आप लोग अवश्य हंसेंगे, मेरा आधार शेष नाग को लिखा है भला यह क्या दिल्लगी की बात है कि एक वह सर्प जो कद्रू के गर्भ से उत्पन्न हुआ वह मुझे क्यों कर धारण करता और उस के जन्म से पूर्व मैं काहे पर रखी थी फिर उस का भी एक आधार लिख दिया है परन्तु हज़रतों को यह न मालूम हुआ कि हम सब लोग परस्पर के आकर्षण से ठहरे हुए हैं, फिर यह भी पुराण वालों को मालूम नहीं है कि जड़ पर्वतों के सन्तान क्यों कर होती, पर्वतों का विवाह पर्वतों की सन्तति और पर्वतों का निमन्त्रणों में जाना न मालूम किस विज्ञान से सिद्ध करते हैं ? पौराणिक महात्माओं ने लाख लाख योजन का एक एक वृक्ष लिख दिया है और द्वीपों का जो विस्तार लिखा है उस को पढ़ते ही हंसी आती है सभ्य महाशय ! आज इतना समय नहीं है कि मैं अपनी पूरी सम्मति वा द्वीपादिकों की पूरी कथा को प्रकाशित करूं किन्तु इतना अवश्य कहती हूं कि पुराणों ने मेरे विषय में सं-

कहीं असम्भव बातें लिखी हैं इस कारण पुराणों को अवश्य खारिज कर देना चाहिये।

भगवती भूमि की वक्तृता को सुन के श्रीमान् सभापति जी ने सिंहासन से उठ कर कहा कि सभ्यवृन्द! आप लोगों ने इस महती सभा में जितने व्याख्यान सुने मेरी सम्मति में उन सब का सारांश यही है कि पुराणों के बनाने वालों ने आप लोगों पर सहस्रों मिथ्या दोष लगाये हैं अतएव आप लोगों की सम्मति है कि उन सब पुराणों को रद्दी खाने में फेंक दिया जाय, यह भी सिद्ध हो गया है कि भगवान् विष्णु और शिव महाराज भी आप लोगों से सहमत हैं यद्यपि ब्रह्मा जी ने अभी तक अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है तौ भी वह आप लोगों से ज़रूर इत्तफ़ाक़ राय होंगे क्योंकि उन को भी पुराणों वालों ने पुत्रीगमन का महाकलङ्क लगाया है इस के सिवाय भागवत के कर्त्ता ने उन को अज्ञानी और चोर भी लिखा है सुतराम् उन की राय आप लोगों से मिलती है मगर अभी तक बहुत से देवता और देवियों ने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है और उन की राय इस बारे में निहायत ज़रूरी है, आप लोग यह भी ख्याल कर लीजिये कि अब बहुत ही अतिकाल हो गया है यदि अब किसी देवता का व्याख्यान होगा तो सन्ध्योपासन का समय भी व्यतीत हो जायगा इस का-

रण मेरी सम्मति में आज सभा का विसर्जन करना उत्तम जान पड़ता है और फिर दूसरे दिन सभा करके इस विषय पर विचार किया जाय।

सभापति की सम्मति को सुन के स्वामी शङ्कराचार्य्य ने तथा राजाराम मोहन राय आदि अद्वैतवादी धर्म्माचार्यों ने नाक भौंह सिकोड़ के कहा कि सन्ध्योपासन के वास्ते सभा के कार्य को रोकना उचित नहीं है क्योंकि जिन लोगों को आत्मा का साक्षात्कार हुआ है उन परिपक्व ज्ञान वाले देवतों को बहिरङ्ग साधन स्वरूपउपासना की आवश्यकता नहीं है इन के प्रस्ताव को यूरोप के अनेक लोगों के साथ श्रीमती मैडमब्लेवेटसकी ने अनुमोदन किया परन्तु श्रीरामानुजाचार्य्य तथा परमपदारूढ़ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के शिष्य ने इस प्रस्ताव का बड़े बल से विरोध किया और महम्मद साहिब ने यूरोपीय लोगों को अपनी तेग़ दिखा के धमकाया कि इस्तग़फ़रुल्ला आप लोग कैसे बन्दे खुदा हैं जो खुदा की इबादत में ख़लल डालना चाहते हैं" मुहम्मद साहिब की धमकी को सुन के मौलानारूम खड़े हो के कहने लगे कि हम लोग आज़ाद हैं किसी के बन्दे नहीं हैं हमारा तो यही क़ौल है कि "नुक्ते के हेर फेर में हम से जुदा हुआ। नुक्ता जो फेर दे दिया आप ही खुदा हुआ" इन सब की बहस को सुन के बाबू केशवचन्द्रसेन बड़े जोष के साथ उठे और यों कहने लगे कि "माइयगोन! आ-

पमाराएई छूड़ा छूड़ी आर मारामारी केनो कात्रेन, उभय दोलेर अभी मीमान्शा कोरे दोत्री आपनारा गाड बोलुन खोदा बोलुन वा इश्शोरई बोलुन किन्तु याहाटी उपास्स अवश्शई मानिते एबे ओर उपासनारकोनोई शमय निर्द्धारित होतेपारे ना शुतराम् विषये कोलहकोरा अनावश्शक।

इन सब की बातों को सुन के सभापति मुस्करा के बोले कि देववृन्द ! सभा को विसर्जित करने में धर्म्माचार्यों की अनेक सम्मति जान पड़ती हैं इस कारण इस विषय में समस्त सभासदों की सम्मति का लेना आवश्यक है अतएव मैं सब की सम्मति को जानने की इच्छा से सब से कहता हूं कि जो लोग इस समय सभा का विसर्ज्जन चाहते हैं वह अपने हाथ उठावें, सभापति की वाणी को सुन के इतने देवताओं ने हाथ उठाये कि न हाथ उठानेवालों की संख्या अत्यन्त स्वल्प रह गई इस कारण सभा का विसर्जन हो गया।

पाठकवृन्द को निराश न होना चाहियेक्योंकि शेष वृत्तान्त यथावकाश हमारे संबाददाता फिर भेजने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं और हम भी डिवाइन मेल सर्विस की प्रतीक्षा में अपनी लेखनी को थोड़े दिन के वास्ते विश्राम देते हैं ॥

स्वर्ग में महासभा का प्रथम प्रोसीडिङ्ग (अधिवेशन)

॥ समाप्त ॥

☞ मिलनेका पता—बाबूराम शर्मा इटावा ।

ओ३म्

स्वर्गमें महासभा ।

श्रीमान् पं० रुद्रदत्त शर्मा रचित

तथा—

बाबूराम शर्मा इटावा द्वारा

प्रकाशित ।

Printer B. D. S. Brahma Press Etawah.

द्वितीयवार २००० } संवत १९७४ { मूल्य ≡)

☞ प्रकाशकके अतिरिक्त किसीको छपानेका

अधिकार नहीं ।

पुस्तकालय ... परिग्रहण क्रमांक २८१९

संजीवनबूटी

यह बूटी मूर्छितोंकी मूर्छा दूरकर श्रीलक्ष्मणयती, शूरवीर, रणधीर, बनाती है इसके सेवनसे चिरप्रतापी, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, ऋषि, मुनि, योगी, संन्यासी, महावीर, योधा, बलधारी, जगत्गुरु, परिव्राट् तथा सम्राट् जगत प्रसिद्ध अमर नाम करगये हैं। केवल इसीके बल बालब्रह्मचारी भीष्मपितामह महा-मृत्युञ्जय कर शरशय्यापर सुखासीन हो धर्मोपदेश करते रहे। यह बूटी सत्यार्थप्रकाशके प्रकाशमें तृतीय खण्ड पर जगमगा रही है। यह अमरबूटी घर बैठे ।) निछावर मात्र करनेसे मिलेगी।

प्रसिद्ध पं० रुद्रदत्त शर्मा कृत ॥

आर्यमत मार्तण्ड नाटक १ भाग अनेक मतोंका वृत्तान्त।)

स्वर्गमें सबजेक्ट कमेटी ॥

इस पुस्तकमें बड़े ही अद्भुत ढंगसे पुराणोंका खण्डन है अतिरोचक है पुस्तक बिना समाप्त किये मन नहीं मानता है इसे नहीं पढ़ोगे तो बहुत पछताओगे मूल्य -)॥

पुराणपरीक्षा—यह पुस्तक भी पं० रुद्रदत्त जी लिखित है इसकी भी प्रशंसा हम क्या करें—आप स्वयं पढ़ सुन लीजिये—वाहरी पुस्तक! पुराणोंके खूब ही धुर्रे उड़ाये छक्के पञ्जे छुड़ाये पुराण जाली बनावटी ठहरा दिये मूल्य ≡)

मिलनेका पता-बाबूराम शर्मा-इटावा

३५५२
(वे ५

॥ ओ३म् ॥

स्वर्गमें महासभा ।

कालचक्रके पहिये को घुमाते हुए सूर्य्यनारायण ज्योंही उत्तरायण हुये त्योंही देवलोकमें घोर घबराहट मच गई। इस घबराहटके कारणोंको यदि लिखा जाय तो एक करोड़ श्लोकों का महा महा महाभारत बन जाय तौ भी पाठकोंके सन्तोषार्थ संक्षेपसे दो चार कारणोंका वर्णन करना आवश्यक जान पड़ताहै।

इस घबराहट का खास कारण तो यह था कि मिस्टर टक्करने फक्कर बनके जबसे मुक्तिसेना बनाई और वारक्राई (War cry) समाचार पत्र निकाला तबसे देवता लोगों को हर समय यही सन्देह और भय बना रहता है कि न मालूम किस समय टक्करासुर के सैनिक स्वर्गमें सीढ़ी लगा के चढ़ आवें और हम लोगों को मारके स्वर्गसे निकाल दें। गत २० दिसम्बर सन् १८९६ को फ्री मेशन के देवता ने स्वर्ग में आ के देवताओं से प्रार्थना की कि महाराज मुझे कृष्टानोंने मार के भगा दिया, मर्त्यलोकसे मेरी उपासना को ईसाई उठाना चाहते हैं आप सब कौमपरवर हैं लिहाजा मेरी रक्षा करना आप लोगोंका फर्ज है, फ्रीमेशन चर्चके देवताकी

प्रार्थना को सुन के देवराज इन्द्र को ध्यान आया कि सब्जेक्ट कमेटीमें जो पबलिक मीटिङ्ग वा महासभा करनेका प्रस्ताव हुआ था उसको अब करना चाहिये। देवराज इन्द्र इस विचारमें बैठे ही थे कि इतनेमें असंख्य पितरोंने देवदर्बारको घेर लिया और चिल्ला के दुहाई देनेलगे। इनकी चिल्लाहट को सुन के महाराज इन्द्र भी घबराये और अपने द्वारपालसे बोले कि इन सबको खामोश करके दर्बार में हाजिर करो हुक्म पाते ही द्वारपाल सब को बुला लाया।

उन सब ने हाथ जोड़के विनय करी कि महाराज हम लोग बड़े कष्ट में हैं। हम मेंसे अधिक लोग अब इङ्गलिस्तान के रहनेवाले हैं हम लोगोंने जितने सुकर्म किये थे उनमें से किसी का भी हमको फल नहीं मिला और न हमारे पुत्र हमारा श्राद्ध ही करते हैं जो हमको यहां खानेको मिले लिहाजा हम सब भूखों मरे जाते हैं अगर हमको पहिले से यह अन्धेर मालूम होता तो हम कभी सुकर्म नहीं करते।

इन लोगों की बातकी आर्य्यावर्त्तीय पितरोंनेभी ताईदकी और कहा कि बेशक यह लोग सत्य कहते हैं अगर हम लोग जानते कि सुकर्म और कुकर्म करनेवालों को स्वर्गमें एक ही स्थान मिलता है तो हम लोग क्यों सुकर्म करते? देखिये! जिस महिषासुरने बड़े २ महर्षियों को सताया आप सब लोगोंको युद्ध में थकाया वही आज मुक्तपदवी पाके आनन्द भोग रहा है इसके

अतिरिक्त रावण और बाणादि अनेक अन्यायी राक्षसभी मुक्तहो चैन उड़ा रहे हैं तब अन्य लोगोंका सुकर्म करना झख मारना नहीं तो क्या है? महाराज! आप इस लवण धौंधौंको मिटाइये नहीं तो जगत्में अन्धेर होजायगा।

इन लोगोंकी अर्ज पूरी नहीं हुई थी कि इतनेमें देवतोंके एक दलने आकर इन्द्र महाराज से प्रार्थना की कि हे देवराज! आज कल हम लोग भूंखे मर रहेहैं कहीं पर यज्ञ नहीं होता जो हम को भाग मिले, यज्ञ के बिना उत्तम धुआं नहीं होता, धुआं ही नहीं तो बादर काहेके बनें, बस बादरोंके अभाव से वर्षा का अभाव हो रहा है, अवर्षण से संसार की यह दशाहै कि शाकम्भरी देवी (मार्कण्डेय पुराणमें लिखा है कि शाकम्भरी देवी ने १२ वर्ष तक देवताओंको शाक खिला के जिलाया था) की तर्कारी भी सूख गई, जो हमारे भक्त पहिले वर्फी और पेड़ोंका भोग लगाया करते थे अब उन को बाजरे की रोटी भी नहीं मिलती है।

इन लोगों की ताईद करते हुए काशीपति विश्वनाथ बोल उठे, महाराज! बेशक आज कल देवतों को बड़ा कष्ट है मेरी ही दशा देखिये न! मैं जो एक बार भङ्ग की तरङ्ग में यवनके डर से ज्ञानवापी कुएमें आ गिरा था तो काशीके पण्डोंने मेरी एवजमें एक अन्य कायम मुकाम (Officiating) विश्वनाथ बना लिया मगर आश्चर्य यह है कि अब तक भी कोई मेरा भक्त मुझे कुए से नहीं निकालता है, हालांकि मेरा मगज़ चावल

और सड़े पानीकी बदबू से सड़ा जाता है और मैं कुए में पड़ा २ महाकष्ट भोग रहा हूं और मेरा दायम मुकाम मुस्तकिल (Permanent) विश्वनाथ बनके गुलजरें उड़ा रहा है, हे देवराज! यदि आप हम लोगोंके कष्ट को दूर न करेंगे तो हम सब मिलके बलिको देवराज बना लेंगे॥

इन सबकी बातों को सुनके देवराज इन्द्रने मुस्करा के कहा हां भाई अब तो तुम्हारी नजर बढ़ गई है अब आपलोग अमेरिका की ओर क्यों न देखेंगे! मगर याद रखिये कि अब वहां बलिका बल नहीं है अब तो पातालमें रिपबलिकन गवर्नमेण्ट (प्रजातंत्र) हो गई है अगर स्वर्गमें भी वही साम्यवाद आपलोग चलावेंगे तो हम भी मर्त्यलोक के मनुष्योंकी महाकांग्रेस कराके आप लोगोंकी भक्ति को नेस्त नाबूद कर देंगे। स्मरण रखिये कि जैसी उन्नति हम आप लोगोंकी करसक्ते हैं वैसी उन्नति विदेशीय राजा बलि नहीं कर सकता है मैं अभी सब संसार के देवतों की महासभा करके आप लोगोंके दुःख दूर करनेके उपायों को बड़े यत्नसे करूंगा

इतना कहके महाराजा इन्द्र ने समस्त दिग्पाल और सूर्य चन्द्रमा आदि प्रधान २ देवतों को सम्मति करने के वास्ते बुलाया वह लोग पलक मारते देवराज की अमरावती इन्द्रपुरी में आ विराजे॥

प्रथम सबकी सम्मतिसे एक मैनेजिङ्ग कमेटी कायम की गई चूंकि इस कमेटीका खास काम नोटिस देना व सभाके वास्ते स्थानादि का प्रबन्ध करना था इस

कारण श्री सूर्य्य नारायण इसके सभापति, चन्द्रमा उप-सभापति और अग्निदेव सेक्रेटरी नियत किये गये, प्रथम मैनेजिङ्ग कमेटी के मेम्बरोंकी राय हुई कि श्री विघ्न विनाशक लम्बोदर से विज्ञापन लिखाके वितीर्ण किये जायं परन्तु श्री शुक्राचार्य्यने कहा कि अब वह जमाना नहीं है जब कि हाथसे लिख लिखकर परदेश दिशावरों को चिट्ठी भेजी जाती थीं अब तो एनूलाइटेण्ड (रोशनी का) जमाना है इस लिये किसी प्रेस में दो चार अरब नोटिस छपाके बांट देने चाहिये, आजकल फीमेल एजूकेशन (स्त्री शिक्षा) तरक्की पर है लिहाजा सरस्वती देवी पलमात्र में नोटिस कम्पोज करके छपा सकती हैं इन सब की बातों को सुन के भुवन भास्कर भगवान् बोले कि नोटिस बांटने व छपानेकी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि इण्टेलीजेन्स डिपार्टमेण्ट (समाचार विभाग) ने इतनी उन्नति करली है कि पलक मारते सारे संसार में सभा के समाचार पहुंच जांयगे, मैं हेलोग्राफ (सूर्य्य की किरणोंके द्वारा जो समाचार भेजे जाते हैं) के द्वारा मेरे मित्र शीतरश्मि (चन्द्रमा) नाइट सिगनेलके द्वारा और अग्निदेव जी महाराज तड़िद्ग्राम (तार) के द्वारा पलक मारते सर्वत्र समाचार पहुंचा देंगे आप लोग विज्ञापनबांटनेकी चिन्ताको छोड़के दूसरेप्रबन्ध कीजिये॥ मैनेजिङ्ग कमेटीकी सम्मति से अमरावती के टौन हाल में वसन्तपंचमी को सभा का होना स्थिर हुआ, सभा में अधिक भीड़ होने की सम्भावना थी इस

कारण इन्सपेक्टर जनरल आफ डिवाइन् (हास्पिटेल्स सिविल ऐण्ड मिलेटरी) (अश्विनी कुमारों को) बुला के आज्ञा दी गई कि आप अपनी डिसपेन्सरीके सहित सभा मण्डप के दाहनी ओर हर समय हाजिर रहिये क्योंकि आजकल बोवोनिकप्लेग (महामारी) का अधिक भय है, इसके अतिरिक्त डिवाइन मेल सर्विस के सुपरिण्टेण्डेण्ट वायु देव को आज्ञा मिली कि तुम हर समय यहां हाजिर रहो और जिस सभासद्का कहींसे कोई पत्र आवे फौरन उसे उसके पास पहुंचा दो।

इन प्रबन्धोंके करनेके पश्चात् मैनेजिङ्ग कमेटीने विदेशी देवताओं के वास्ते टौनहाल के हाते में एक होटल तयार कराया और योरोपियन देवतोंके वास्ते भोजन पकानेके निमित्त मातङ्गिनी देवीको उच्छिष्ट चाण्डालनी के सहित सम्पूर्ण सामग्री देके नियत कर दिया, बंगदेशीय देवतोंके वास्ते मत्स्यप्रिया बगलामुखी नियुक्त की गईं, यवनदेशी और अफ्रीकाके देवतोंके खान पानका प्रबन्ध करने को कज्जलगिरिनिभा कालो जो नियतकी गईं, ऐशिया चीन, जापान और मलाया आदि द्वीपोंके देवतोंके खान पान का प्रबन्ध करनेको नागेश्वरी और पद्मा देवीको (यह दोनों देवी बौद्ध सम्प्रदायमें मानी जाती हैं) आदेश मिला, मैनेजिङ्ग कमेटी ने इस प्रकारसे सबके खान पानका प्रबन्धकर,के टौन-हालके द्वार पर (welcome to Holy Gods) सुन्दर अक्षरोंमें लिखके लगवा दिया और द्वारपालोंको आज्ञा-

देदो कि जो कोई सभामें विघ्न डालनेके अभिप्राय से कुछ काम करे उसको जहन्नुम रसीद करो और जो सीधे स्वभावसे सभामें जाना चाहे उसे हर्गिज मत रोको ।

प्रबन्ध करतेही करते बसन्तपञ्चमीका दिन आगया उस रोज प्रातःकालही से सभामण्डप में देवतोंका आना आरम्भ हुआ सबलोग अपने २ क्लाकमें जा बैठे, ए० क्लाकमें ओरिजिनेल (असली) देवतों के वास्ते कुर्सियोंकी कतार लगी हुई थी और उसही के बीच में सभापतिके वास्ते एक रत्नजटित सिंहासन बिछा हुआ था इनके दाहिनी ओर बी० क्लाक था इसमें महर्षि मण्डल तथा वेदोंके मानने वाले मुक्त जीवों के वास्ते कुर्सियां बिछी हुई थीं, बाईं ओर सी० क्लाकमें योरोप तथा अरब आदि देशोंके देवता तथा पैगम्बरलोग विद्यमान थे और डी० क्लाकमें मोडर्न (नये जमाने के) ऋषि तथा धर्म्माचार्य्य लोग विराजमान थे ।

देवियोंको आसन देनेके समय प्रबन्धकर्त्ताओं में वैमनस्य हो गया क्योंकि कई एककी सम्मति थी कि देवियोंको देवतोंके बीचमें आसन न मिलना चाहिये क्योंकि सनातनधर्म वाले स्त्रियोंको सभामें बिठलाना पाप समझते हैं । दूसरे कहते थे कि जिस दुर्गा देवीने महिषासुरको और शुम्भ निशुम्भ आदि दैत्योंको युद्धमें मारा वह अब किस्से पड़दा करेंगीं? खैर अन्तमें यह स्थिर हुआ कि ए० क्लाकके पासही एक फीमेल क्वार्टर बना

या जाय और सब देवी उसही में बैठके सभाको देखें और आवश्यकतानुसार सम्मति भी दें।

इसके अनन्तर प्रबन्धकर्त्ताओंने जो डी० क्लाक की ओर देखा तो वहां पूरी अशान्ति पाई कुछ लोग आगे बैठनेके वास्ते आपसमें झगड़ा कर रहे थे इस कोलाहलको सुनकर मैनेजिङ्ग कमेटीके सभापतिने सब को यथा स्थान बिठलाके शान्ति की जब सब लोग यथा स्थान बैठगये और सभामें शान्ति स्थापित हो गई, तब रिसेप्शन कमेटी वा अभ्यर्थना सभाके सभापति कुमार जयन्तने इस प्रकारसे अपना व्याख्यान आरम्भ किया।

व्याख्यान ।

देव, देवी, ऋषि, मुक्त और धर्म्माचार्यवृन्द !

मैं आप लोगोंको धन्यवाद देने योग्य नहीं हूं क्यों कि कलियुगी रामायणमें मुझे कौवा लिख दिया है भला सोचिये तो सही कि मैं अपने देवस्वरूपको त्यागकर काक क्यों बनता ? प्रथम तो योगीके विना किसीको यह शक्तिही ईश्वरने नहीं दी कि अपने शरीर को विना मृत्युके छोड़के दूसरा शरीरधारणकरे यदि मुझे योगीही माना जाय तो क्या योगी इतनाभी नहीं समझ सक्ता,कि श्रीरामचन्द्रजीकी धर्मपत्नी सती साध्वी पतिव्रता सीताजी परपुरुषसे प्रीति नहीं कर सक्ती हैं मैं झख मारने क्यों जाऊं, फिर उस ही रामायणमें यह भी लिखा है कि महाराज रामचन्द्रजीने मेरी एक आंख फोड़डाली परन्तु देखिये मेरे दोनों नेत्र कमलसे खिले

हुये हैं, यदि कहिये कि कौवेरूपकी आंख फोड़दी थी और इसहीकारण अबतकभी सब कौवे काणे होते हैं तो यह महाअन्याय है कि अपराध करूं मैं आंख फोड़ीजाय कौवों की, इसके अतिरिक्त श्रीरामचन्द्रजी के और मेरे जन्म से भी पूर्व काकभुसुण्डका होना पुराणोंमें लिखा है परन्तु उसके भी दो नेत्र नहीं लिखे अस्तु—मैं अपनी अधिक सफाई देना नहीं चाहता हूं क्योंकि मर्त्यलोकके मनुष्यों ने कुछ मुझेही दोष नहीं लगाया है वरन भगवान् विष्णु को भी दोषोंका भण्डार बनादिया है, देवतोंकी दुर्दशा को दूर करनेके वास्ते जो आप लोग लाखों कोशसे यहां आये और अमरावती के टौनहाल को सुशोभित किया इस कारण मैं आप लोगोंको अरबों धन्यवाद देता हूं।

देववृन्द! पुराणोंको माननेवालोंने स्वर्गको थियेटर, हमलोगोंको नगाड़ची और देवाङ्गनाओंको नटनी समझ रखा है क्योंकि अपने देशके छोटे २ आनन्दोत्सव में लिखदिया है कि "देवादुन्दुभयो नेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणा (अथवा) अवादयन्तः पटहान् पुष्पवृष्टि मुचोदिवि,, इन के अलावा दीन इसलामियां वालोंके ख्यालसे तो बहिश्त भी हूरोंका बाज़ार है। इन सब लबड़ धौं २ को दूर करने के वास्ते जो आप लोग आज इस टौनहाल में इकट्ठे हुए हैं आपके इस परिश्रमके वास्ते मैं आप लोगोंको रिसेप्शन कमेटीकी ओरसे धन्यवाद देता हूं॥

इस स्पीचके समाप्त होते ही महाराज कुवेर ने प्रस्ताव किया कि आज की जनरल कमेटी में भगवान्

विष्णु सभापति बनाये जायं यद्यपि इसका अनुमोदन अनेक लोगोंने किया परन्तु विष्णुभगवान्‌ने यह कह के इसे अनङ्गीकार किया कि हम तो आज कल किसी कामके ही नहीं रहे हैं, जबसे शङ्कराचार्यने वेदोंकी जड़ काटनेको सेल्फ गवर्नमेण्ट चलाया, तबसे छोटे २ बालक भी खुदखुदा बनगये, सृष्टि करने और वेद बनाने के समय हम एकही स्वतन्त्र थे पर सृष्टिका और वेदों का नाश करनेको करोड़ों ब्रह्म बनगये हैं, अब तो हम केवल स्त्रियोंकी कसम खानेको ही रह गये हैं और देखिये जो हमारे भक्त बननेका दम भरते हैं वही हमको गाली देते हैं, महावराहो गोविन्दः (विष्णु सहस्र नाम) अर्थात् विष्णु बड़ा वराह है कहिये किसे गरज़ है जो आप का सभापति बनके गाली खाय ।

विष्णु भगवान्‌की बातको सुनके भोलानाथ शङ्कर जी हंसते २ खड़े हुये और मुस्कराके कहने लगे कि गाली से क्यों घबड़ाते हो? १६१०८ पटरानी और मनोहारिणी-व्रज वनिताओंका रसास्वादनभी तो आप को ही कराया गया, क्या २ कडुये २ थू और मीठे मीठे गप की कहावतको चरितार्थ करना चाहते हैं ! रास करते वक्त तो छः महीनेकी रात कर दी और कुछभी न शर्माये पर अब जरादेर तकको सभापति बनते आपकी नानी मरती है, क्या गोपियोंका यह गीत अच्छा लगता था कि-

फणफणार्पितन्ते पदाम्बुजम् ।
कृणुकुचेषुनश्चान्धिहृच्छयम् ॥

और प्रेमातुर भक्तोंके मुखसे महावराह शब्दको सुन के कान कटे पड़ते हैं। कैलाशवासी शम्भु की बात को सुनके सरस्वती देवीके पिता श्री ब्रह्माजी खड़ेहो के बोले, चूंकि विष्णु के दोषों पर इस सभामें विचार किया जायगा लिहाजा विष्णुको सभापति बनाना मुनासिब नहीं है मेरी राय नाक़िस में आजकी सभा में भी देवराज इन्द्रही सभापतिके आसन को ग्रहण करें।

अनेक वादानुवाद तथा अनुमोदन प्रमोदन होनेके पश्चात् देवराज इन्द्रने सभापतिका आसन ग्रहण किया जिस समय इन्द्र व्याख्यान देनेको खड़े हुए उस समय चियर्स और करतालिकी ध्वनि से टौनहाल गूंज उठा।

सभापतिका व्याख्यान।

देववृन्द! आप लोगोंने जो मुझे इस महती देव सभाका प्रधान बनाया यह आप लोगोंने मेरे आफिशियल रैंकका मान्य बढ़ाके अपनी नियमवर्त्तिता का अपूर्व परिचय दिया है, इस महती सभाके महाधिवेशन का उद्देश्य यह है कि मर्त्यलोक के निवासियों ने जो देवता लोगों पर सहस्रों दोष लगाये हैं और धोखा धड़ी लगा रक्खी है इससे हम लोगोंका ही अपमान नहीं होता है वरन परम कृपालु परमेश्वरका भी पूरा अपमान होता है मेरे तो पूरे परिवारको ही पुराण बनाने वालोंने चोर और व्यभिचारी लिख दिया है। नृसिंहपुराणके २८ अध्यायमें मेरे पुत्र जयन्तकुमार को लिखा

है कि राजा शान्तनुने एक वृन्दावन बसादे जो अत्यन्त मनोहर बाग बनाया था उसके फूलोंको मेरा पुत्र चुरा लाता था, एक दिन मालीने मेरे पुत्रको फूल चुराते देखा और नृसिंहकी स्वप्न प्राप्ति आज्ञासे दीवारोंपर नृसिंहका निर्म्माल्य छिड़क दिया उसके लांघनेसे जयन्तकुमार ऐसा शक्तिहीन होगया कि वह रथ पर न चढ़ सका तब सारथीके उपदेश से वृन्दावनमें १२ वर्ष रहा और ब्राह्मणोंका उच्छिष्टबटोरता रहा तब उसके शरीर में शक्ति आई। भला इस कथाके बनानेवालोंसे कोई पूछे कि जब यवनोंने भारत पर आक्रमण किया और देवमन्दिरोंको तोड़ा खास नृसिंहकी अनेक मूर्त्तियोंको तोड़ के फेंक दिया तब क्या नृसिंहका निर्म्माल्य नहीं रहा था? जो भारतकी सीमा पर छिड़क देते और उसको नांघने से सब यवन शक्तिहीन हो जाते, इसके अतिरिक्त उसही नृसिंहपुराणके ४३ अध्याय में मुझे व्यभिचारी लिखा है, जब हिरण्यकश्यप तपश्चर्या करने गया था (तब इन्द्र उस की गर्भवती स्त्रीको उठाके लेगया और उससे व्यभिचार करना चाहा तब नारदने इन्द्रको समझाया और कहा कि यह गर्भवती है उसके उदर में परम भागवत है) क्या मैं ऐसा अज्ञानी था कि इतना भी न समझता था कि यह गर्भवतीहै, खैर यह तो कुछ बड़ी निन्दा ही नहीं है मुझसे बढ़के विष्णु को लूल बनाया है एक जगह तो लिखाहै कि सब देवतोंके कहने से भृगु ऋषिने विष्णुके वक्षस्थल में लात मारी परन्तु

विष्णु भगवान्की ऐसी शान्ति बढ़ी कि भृगुके पदको दाबने लगे और कहने लगे आपके कमल सम कोमल पदोंके मेरे कठोर वक्षस्थलकी बड़ी चोट लगी होगी दूसरी जगह (भविष्यपुराण५६ अध्याय) लिखा है कि विष्णु महाराजने भृगुकी स्त्री का चक्रसे सिर काट डाला, कहिये तो उस समय वह शान्ति विष्णुकी कहां को उड़ गई थी जो अवध्य ब्राह्मणोंको भी मार डाला और इसहीका यह फल मिला कि अब विष्णुको बराबर अवतार लेना पड़ता है मैं सत्य कहता हूं कि जब से ऐसी ऐसी फाल्सरिपोर्ट मेरे आफिसमें आने लगी तब से मेरा दफ़्तर भी गन्दा होगया मैं सत्य कहता हूं कि मुझे अब इन रिपोर्टों पर तनक भी विश्वास नहीं रहा है, जो दान धर्म दानपात्रके उपकारार्थ था वह अब दिल्लगी मात्र रह गया है, गोदान केवल इस वास्तेथा कि वेदाभ्यासी ब्रह्मचारीके निश्शक्त शरीरमें शक्तिका संचार हो परन्तु स्वार्थान्ध लोगोंने सुवर्ण धेनु हीरे के दांत लगाके (भविष्य पु०उत्तरार्द्ध १३७ अध्याय भवि० उ० १३८ अध्याय भवि० उ० १६० अध्याय) दान करना लिखा है । फिर उससे भी बढ़के रत्नधेनु के दान का माहात्म्य लिखा है यदि वास्तवमें सुवर्णधनु को गौही समझा जाता है तो उसके अङ्ग प्रत्यङ्गको बेचकर खाना क्या महापाप नहीं है? और आश्चर्य सुनिये शूकरकाभी दान करना लिखा है अर्थात् तिलका शूकर बनाके दान करें इस दानका ऐसा माहात्म्य लिखा है कि उस दान

का करनेवाला अपने पुत्र कलत्र और मित्रों सहित स्वर्गको च ा जाय ! सोचिये तो सही कि जो मनुष्य असलीशूकर का दान करै वहतो स्वर्गसेभी १० हाथ ऊंचा चला जाय ।

तीर्थोंके महात्म्योंका जहां वर्णन किया है वहां तो हास्यरसका अन्त ही कर दिया है मैंने स्वयम् अपने नेत्रोंसे देखा है कि प्रयागराजके माहात्म्यमें लिखा है कि जो मनुष्य ऊपरको पैर और नीचेको सिर करके गंगा और यमुनाके संगममें आचमन करे तो १८८०७० वर्ष तक स्वर्गमें सुख भोगे (देखो कूर्म्मपुराण) महाशय वृन्द ! मैं कहां तक कहूं इन फाल्सरि ोर्टोंमें देवतोंकी ऐसी बुराई लिखी है कि जिनको सुनते भी हंसी आती है गणेशको लम्बोदर और हाथीके सिर युक्त लिखकर फिर चूहेकी सवारी लिख दी है भला कहिये तो हाथी की सवारी चूही क्यों कर हो सकती है ! ।

प्रिय देववृन्द ! आ ज कल जो भारतवासियों पर स्वार्थी जनोंने टैक्स लगा रक्खे हैं उनके विषय में मैं केवल एक दृष्टान्त देके अपने व्याख्यानको समाप्त करूंगा

दृष्टान्त यह है कि एक उजबक नगर नामक शहर में एक गवरगराडसिंह नामक राजा था वह राजा अपने नामके अनुसार ऐसा मूर्ख और आलसी था कि उस के अमले और प्यादे मनमाने कार्य करते थे परन्तु वह इतनाभी नहीं जानता था कि मेरे राज्यमें कितने ग्राम हैं और उनका शासन कौन करता है एक दिन उसकी राजधानीमें किसी और राज्यका एक मनुष्य

घीव बेंचनेको आया परन्तु बाजार तक आते आते उ-
स का सम्पूर्ण घीव कर अर्थात् ड्युटी (महसूल) में ही
उड़ गया कहीं राजाका कर कहीं युवराजका कर कहीं
रानी का कर कहीं राजमाता का कर कहीं राज-
भ्राता का कर कहीं मन्त्री और कहीं उपमन्त्री आदि
का कर लेते जब उस व्यापारीके कपड़े तकभी सिपाहियों
ने छीन लिये तब वह रोता हुआ राजाके पास गया प-
रन्तु राजाने उसको धक्के देके निकलवा दिया तब उ-
सने समझा कि इस राज्यमें अन्धेर है अतएव मैं भी अन्धेरमें
अपना कार्य सिद्ध कर सकता हूं बस वहभी श्मशानके पास
जा बैठा और जो मुर्दा उधर आवे उसके ही साथियों
से कहे कि हमारा १।) रु० राज करके नामसे पहिले दे
दो तब प्रेतकी क्रिया करो जब उससे कोई पूछे कि तुम
कौन हो तबही वह कह दे कि हम राणीके शाले हैं-
अनेक वर्षों तक वह इस ही रीतिसे कर लेता रहा कुछ
कालके अनन्तर गबरगण्डसिंह राजाकी माताभी मरीं
और स्वयं राजा साहिब श्मशानमें गये और राणीके
सालेका नाम सुनके बहुत चकित हुए जब १।) रु० उ-
स का कर देके आगे बढ़े तब अवसर पाके राणी साहि-
बा ने राजासे पूछा कि आपने किसको कर दिया आप
तो स्वयं राजा हैं राजाने कहा कि यह राणीके साले
का कर दिया जाता है रानी ने हंस के कहा
कि स्त्रियोंके साले नहीं होते हैं आप समझ के बात
कीजिये राजाने क्रोधके साथ उत्तर दिया कि इस

बातको तो हमभी जानते हैं कि त्रियोंके वाले नहीं होते परन्तु सनातनधर्मकी रीतिको मेंटनाभी तो पाप है देववृन्द ! आजकल दान की भी यही दुर्दशा जगत् में हो रही है कोई मृत्युञ्जयके जपसे अमर होना चाहता है कोई शनैश्चर और केतुके मुजावरको थोड़ासा लोहा वा तिल उड़द देके शरीरको अजर और निरोग बनाना चाहता है कोई दो चार रुपये की चांदी दे के अपने कर्म फलको उल्लंघन करके ईश्वरके नियम को भङ्ग करनेकी चेष्टा कर रहा है मुक्तिके विषयमें भी संसारी जनोंकी यही दशा है जिन लोगोंने रिशवत ले ले के जन्म भर शराबखोरी और सीने जोरी की है वह भी ईसामसीह की शरणमें आके मुक्तिको मुंह बाय रहेहैं ऐसे ही खुदाके मखलूकको खाकमें मिलाके और मुहम्मदके मुहताज बनके नजात पानेको उत्सुक होरहेहैं परन्तु परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं है और न सुकर्मों का भरोसा है सुतराम् हम लोगोंको अब ऐसा उद्योग करना चाहिये जिससे जगत्में ईश्वरकी भक्ति बढ़े और मनुष्योंकी श्रद्धा सत्य धर्ममें बढ़े यदि अब भी हम लोग आलस्य करेंगे तो जगत्में नास्तिक और आस्तिकाभासोंका ही प्रस्ताव फैल जायगा, और सत्य धर्मनाममात्र को भी न रहेगा, मैं चाहता हूं कि आपकी सभामें सब लोग स्वतन्त्र भावसे अपनी २ राय प्रकाशित करें।

सभापति के अवस्थानानन्तर देवर्षि नारद खड़े हो के कहने लगे चूंकि पुराण वालोंने मेरी असीम निन्दा-

की है लिहाजामें प्रस्ताव करता हूं कि पुराण (ब्रह्मवैवर्त्तादि) और मेरे नामको कलङ्कित करने वाले नारद पंचरात्रादि पुस्तक रद्दी खानेमें फेंक दिये जांयं मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैंने उन पुस्तकोंको हर्गिज नहीं बनाया भला मुझे क्या जरूरत थी कि मैं षट्कोपी मत का प्रतिपादन और शैवादिमतों का खण्डन करता न मैं रिशवतखोर हूं कि डोम आदि नीचोंसे कुछ धन ले के किसी आधुनिक पुस्तक पर अपनी मुहरकर देता देवीभागवत्के बनाने वाले ने जो अकारण मुझ पर दोष लगाये हैं वह अवश्य ही आप लोगोंने सुने होंगे (दे० भा० स्कन्द ६ अ० २८, २९, व ३०) देखिये तो मुझ विष्णु ने कैसा धोखा दिया कि मेरे कपड़े लत्ते और बीन आदि ले के भाग गये और मैं तालाबमें स्नान करता ही रह गया जब मैं तालाब में से निकला तब स्त्री हो गया फिर राजा तालध्वज से मेरा विवाह हुआ देखिये तो क्या लाल बुझक्कड़ी कथा है ? देवी भागवत् वालेको मेरी इतनी ही निन्दा करनेसे सन्तोष नहीं हुआ बल्कि और भी अपूर्वकथा लिख डाली, उस में तो मुझे बन्दर ही बना दिया है, उसमें भी राजा सञ्जय की कन्या से मेरा विवाह करा दिया है सोचिये तो सही कि मैं देवर्षि हो के मानुषी से विवाह क्यों करता।

देववृन्द ! आप लोगों ने यह न सुना होगा कि हमारे सभापति देवराज भी एक बार बैल बने थे (दे० भा० स्क० ७ अ० ९) राजा ककुत्स्थ जब देवतों की

प्रार्थनाको सुनके दैत्योंसे लड़नेको चले तब उन्होंने कहा कि यदि इन्द्र हमारे बाहन बनें तो हम दैत्योंसे लड़ें भला, कहिये तो कितनी गाली है कि जिन इन्द्र महाराजको विष्णु आदि सब ही राजा मानते हैं उन को ही बैल लिख दिया और मुझे तो पुराणवालों ने डाक का थैला और लड़ाई कराने का औजार व चुगलखोर नियतकर दिया है इस कारण मैं प्रस्ताव करता हूं कि पुराणों को मन्सूख कर दिया जाय।

इस प्रस्तावको महर्षि पराशरने अनुमोदन करते समय कहा कि बेशक पुराणोंको मन्सूख कर देना चाहिये क्योंकि इन पुराणोंमें हजारों बातें असम्भव लिखी हैं मेरे परिवारको और मुझे जैसे वाहियात दोष पुराणवालोंने लगाये हैं उन को मैं फिर वर्णन करूंगा किन्तु अब एक ऐसी गाथाका वर्णन करता हूं जिसको सुनके आपसब लोगकई दिनतक हंसते रहेंगे। देवीभागवत सप्तमस्कन्ध ९ अध्याय में लिखा है कि राजा यौवनाश्वके १०० स्त्री थीं परन्तु पुत्र किसीके नहीं था इस से राजा को अत्यन्त चिन्ता रहती थी, इस ही चिन्ता से व्याकुल हो के राजा यौवनाश्व बनको चले गये और वहां अनेक महर्षियोंसे कहा कि मेरे सन्तति नहीं है अतएव आप लोग ऐसा यत्न कीजिये जिससे मेरे पुत्र हो ऋषियोंने सन्तान प्राप्ति के वास्ते यज्ञ आरम्भ किया, ऋषियों ने जो मन्त्रोंसे अभिमन्त्रित करके जल से पूर्णघट स्थापन किया था वह इस अभिप्रायसे था

कि जो नारी इस जल को पान करे उसके अवश्य ही पुत्रहो, एक दिन रात्रिमें राजा यौवनाश्वको बहुत प्यास लगी और उन्होंने उस ही यज्ञकलश के जलको भूलसे पी लिया प्रातःकाल जब यज्ञकर्त्ता ब्राह्मणोंने कलशको खाली देखा तो राजा से पूंछा कि वह जल कहां गया तब राजा ने कहा कि वह जल मैंने पी लिया इसबात को सुनके सबने कहा कि तुम्हारे अवश्य पुत्र होगा उस जल के प्रताप से राजा के गर्भ रहा, जब १० महीने पूरे हुए तब राजा यौवनाश्वके पेटको चीरके बालक निकाला गया तब राजाके मन्त्रीने कहा " कन्धाता " यह बालक किसका दूध पियेगा तबही देवराज इन्द्र ने आके कहा कि "मान्धाता" मेरा दूध पियेगा इसही कारण उसका नाम मान्धाता रक्खा। देववृन्द ! कहिये यह कथा क्या इस पहेलीको चरितार्थ नहीं करती है कि

सास कुंवारी बहू पेटसे ननद पंजीरी खाय।
देखनवाली लड़का जन्में बांझिन दूध पिलाय॥

क्या यह जाफर जटल्लीका किस्सा नहीं है भला विचारिये तो कि जिस गर्भाशयको मनुष्यों के पेट में ईश्वरने ही नहीं रचा उसको मन्त्रके पानी ने क्यों कर बना दिया ? यदि अभिमन्त्रित पानीमें यह शक्ति थी तो राजाके स्तनों में दूध क्यों नहीं उत्पन्न करदिया वास्तवमें इन लालबुझक्कड़ी कथाओंने देव भाषा को और वेदोंको बड़ाही बदनाम कर रक्खा है।

देववृन्द! इन पुराणोंने मेरे दादा वशिष्ठ से ही हमारे कुलको कलङ्कित करना आरम्भ किया है लिखा है कि वशिष्ट विश्वामित्रसे लड़नेको वगुला बन गये और लिखा है कि उन्होंने ऐसी ईर्षा करी कि अपने नौपुत्रों को मरवा के तब विश्वामित्रको ब्रह्मर्षि कहा फिर मेरी (माताके गर्भमें) वेद पाठ करना लिखा है क्या यह सम्भव है कि कोई मनुष्य गर्भ में मुख खोल सके? यदि गर्भमें मुंह खुल जाय तो माता के गर्भ के मल बालकके मुखमें भर जाय। ईश्वरने गर्भस्थ बालक की पुष्टि के वास्ते यही नियम कर दिया है कि बालक का मुख बन्द रहे और नाभि की नालके द्वारा माता के भक्षण किये अन्नादिका रस बालकके उदरमें जाय अस्तु अब एक और अद्भुत बात सुनिये कि मैं परम धर्मज्ञ और वेदज्ञ होके भी अविवाहित मत्स्यगन्धा पर मोहित हो गया (देवी भागवत द्वितीय स्कन्ध द्वितीय अध्याय) और अपनी कामवृत्तिको दिन ही में चरितार्थ करनेको मैंने कुहिरा उत्पन्न किया आप सब जानते हैं कि कुहिरे का नाम वेदोंमें भी लिखा है (नीहारेण प्रावृता उक्थशाश्चरन्ति) इसके अतिरिक्त कुहिरा केवल उस बाष्पका नाम है जो सूर्य की किरणों के द्वारा पृथिवीसे आकाशको जाती है और जबसे सूर्य तथा पृथिवी और जल बने हैं तबसे ही कुहिरा भी बना है भला मैं उसको क्यों कर बनाता फिर मेरे जन्म से भी पूर्वकी अनेक कथाओंमें भी कुहिरे का नाम

आता है जिस मत्स्यगन्धासे मेरे व्यभिचारकी कथा लिखी है अब उसके जन्मका अद्भुत हाल सुनिये जिसको सुनके आप लोगों की भी बुद्धि चकरा जायगी देवी भागवत के प्रथम स्कन्धकी प्रथम अध्यायमें ही यह असम्भव कथा लिखी है कि राजा उपरिचर की गिरिका नामकी भार्या जिस दिन ऋतुस्नाता थी उस दिन उपरिचरके पिताने उन्हें शिकार खेलनेके वास्ते बन को जाने की आज्ञा दी राजा उपरिचर पिता की आज्ञा कोपरमधर्म समझके बनको गये परन्तु उनको अपनी ऋतुस्नाता भार्याका स्मरण रहा इस कारण वन में उनका वीर्य स्खलित हुआ राजाने उस वीर्य को वटपत्रके दोनेमें रखके अपने एकबाजसे कहा कि इस वीर्यको मेरी स्त्री के पास ले जावो इससे अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा उपरिचरके बाजने जब उस वीर्य युक्त दोने को लेके आकाश मार्गसे गमन किया तब और बाजों ने समझा कि यह मांस लिये जाता है तब और बाज उससे छीनने को आये इस कारण बाजोंमें खूब युद्ध हुआ वह दोना यमुना जी में गिर गया उस दोनेके वीर्यको एक मछरी (आद्रिका जो शाप से मछरी होगई थी) खा गई उसको एक मछुआने पकड़ के चीरा तो उसके पेटसे एक पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुए मछुआ उन दोनों बालकोंको राजा उपरिचर के पास ले गया राजा उपरिचरने लड़केको अपने रूपका देखके ले लिया और कन्याको उसही मछुवे को

दे दिया वही मछरी के पेटका लड़का राजमत्स्य हुआ और कन्या व्यासकी माता सत्यवती हुई कहिये आप लोगों ने कभी ऐसी लालबुझक्कड़ी कथा सुनी थी? क्या अश्विनीकुमार और धन्वन्तरि का यह कहना मिथ्या है कि बालकके अनेक प्रत्यङ्ग माता के रज से बनते हैं, यदि मान भी लिया जाय कि राजा उपरिच॰ रका वीर्य अमोघ था तो उसमें रज किसका और क्यों कर मिला? यदि, कहाजाय कि मछलीका रज मिलगया होगा तौभी अयुक्त है क्योंकि जिनके अण्डे उत्पन्न होते हैं उनके गर्भाशयमें उस प्रकारका रज नहीं होता जैसे जरायुज स्त्रियों के होता है। इसके अतिरिक्त अण्डज स्त्रियोंका गर्भाशय भी भिन्न रीतिका होता है वह म॰ नुष्य के वा गधे के वीर्य को धारण नहीं करसक्ती हैं, चिकित्सा शास्त्रमें जो शरीरकी रचनाका वर्णन लिखा है उसके देखनेसे स्पष्ट ज्ञान पड़ता है कि मुखके मार्ग से गर्भमें गया वीर्य स्त्री के उस स्थानमें नहीं पहुंच सक्ता है जहां पहुंचनेसे गर्भाधान होता है।

खैर हमारी तो दुर्दशाकी ही थी परन्तु व्यासकी भी वह दुर्दशा की है जिस को सुनके भद्रजन अशान्त होजाते हैं, व्यासको दासी पुत्र लिखके फिर लिखा है कि उन्होंने १०० वर्ष शिवकी आराधना करके पुत्र होने का वर पाया, परन्तु व्यासके घर स्त्री तो थी ही नहीं जो पुत्र होता एक दिन प्रातःकाल व्यास जी अग्निहोत्र करनेके वास्ते अग्नि उत्पन्न करनेको अरणी मथ रहेथे

उसही समय घृताची अप्सरा उधर आ निकली, उसे देख कर व्यासजी कामातुर हुए परन्तु मनमें व्यभिचार कर्म से डरे और मनमें कुछ चिन्ता करने लगे, व्यास मुनिको चिन्तातुर देखके घृताची भी घबड़ाई और भयसे शुकी (सुग्गी, तोती) बनके भागी व्यासजी शुकीको देखकर अत्यन्त विस्मित हुए और अप्सराका ध्यान करने लगे तब उनका वीर्य अरणी पर पतित हुआ और उस से ही शुकदेव (लकड़ी) से उत्पन्न होगये। देववृन्द! विचार (देवी भागवत प्रथमस्कन्ध अध्याय १४) कर देखिये कि इस महा लालबुझक्कड़ी कथामें कैसी गप्प मारी है कि लकड़ीसे ही पुत्र उत्पन्न होगया, एक और भी मुझे आश्चर्य है कि जिस श्रीमद्भागवतको पौराणिक लोग पुराणों का शिरोमणि मानते हैं उसमें शुकदेव का विवाहादि कुछ नहीं लिखा परन्तु हजारों ब्राह्मण अपनेको वशिष्ठगोत्री बतलाते हैं जब कि शुकदेवका वंशही नहीं चला और व्यासके भी दूसरी सन्तान नहीं थी तब जगत् में वशिष्ठ का गोत्र कहां से आया ? क्या विना माता पिताके भी पुराण वाले किसीकी उत्पत्ति कलियुग में मानने लगे हैं परन्तु देवी भागवतमें शुकदेवका विवाह पीवरी स्त्री के साथ लिखा है और उससे कृष्ण, गौरप्रभ भूरि तथा देवश्रुत नामक ४ पुत्रोंकी उत्पत्ति लिखी है। हम नहीं जानते कि पुराणोंमें परस्पर क्यों विरोध है? पुराण वालोंने हमारे वंश पर एक तो कृपा की है कि शुकदेवको कोई दोष नहीं लगाया, परन्तु "जबफंसेदादा

तो किस गिनतीमें फिर पोते रहे" इस कहावतके अनुसार हमारे कुल भर को ही कलङ्कित बना दिया है।

सभ्य महाशयो ! मैंने आप लोगोंको बहुत देर तक कष्ट दिया, परन्तु अब मैं केवल एक बात कहके अपने व्याख्यानको समाप्त करूंगा आजकलके सन्यासी अपनी गुरु परम्परा में कहते हैं।

नारायणं पद्मभवं वशिष्ठम् ।
शक्तिं च तत्पुत्रपराशरंच ॥
व्यासंशुकङ्गौडपादंमहान्तं ।
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्यशिष्यम्
श्रीशङ्कराचार्यमथास्यपद्म ।

पादं च हस्तामलकं चशिष्यन्तन्तोटकं वार्त्तिककारमन्या, नस्मद्गुरून्सन्ततमानतोस्मि ।

कि शुकदेवके शिष्य गौड़पादाचार्य, गौड़पाद के शिष्य गोविन्दाचार्य गोविन्दाचार्यके शिष्य श्री शङ्कराचार्य हुए परन्तु इन सबके समयको मिलाने से यह बात सत्य नहीं मालूम होती क्योंकि शुकदेवका स्वर्गवास पाण्डवोंके जन्मसे भी ५० सौ वर्ष पूर्व ही हो चुका था और गोविन्दाचार्य तथा शङ्कराचार्यका जन्म बुद्धदेवके समयसे सैकड़ों वर्ष पश्चात् हुआ था तब गौड़पादाचार्यका शुकदेवके समयमें होना क्योंकर सिद्ध हो सक्ता है? गौड़पादाचार्यको कलियुगमें भी कई सहस्र वर्षकी अवस्थाका होना वेदों से तो विरुद्ध ही है किन्तु कलियुग के राज्यमें पुराणोंसे भी निषिद्ध है।

महर्षि पराशरके स्पीच(व्याख्यान)को बढ़ता हुआ देख-कर श्रीमान् सभापति खड़े होके कहने लगे कि महर्षे! पराशर! आपको यह अधिकार नहीं है कि आप सन्यासियोंके विषयमें भी कुछ कहें क्योंकि इस विषय में दत्तात्रेय तथा शंकराचार्य स्वयम् वर्णन करने को उपस्थित हैं। मेरी सम्मतिमें अब पक्षदेवों में से किसीको अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये।

सभापतिकी बातको सुनके स्वयम् भगवान् विष्णु हंसते हंसते खड़े हुए और इस प्रकारसे कहने लगे, सभ्य-वृन्द! इस महती सभामें जो कुछ मैं कहूंगा उसे आप लोग दिक् प्रदर्शन वा नमूना मात्र समझियेगा क्योंकि संसारके कृतघ्न लोगों ने मुझे एक बात का पुतला स-मझ रक्खा है और मेरे नामसे स्वयम् विषय भोग करते लज्जित नहीं होते, भला यह कौन इन्साफकी बात है कि जिसको उपास्य देव वा देवी समझें उसको ही रास में नचावें, फिर मेरे नाम से मन्दिरों में वेश्याओं को नचावें और व्यभिचार करें, अपने अपने हठ को पूरा करने के वास्ते विषयी लोगोंने मुझे बदनाम कर रक्खा है. कोई कहता है कि विष्णु गोलोकमें रहते हैं और गोलोक में सिवाय विष्णु के सम्पूर्ण स्त्रियां रहती हैं कोई कहता है कि विष्णु दैत्यों को मारनेके वास्ते स-दैव अवतार लिया करते हैं जिन मनुष्योंको वह मेरा अवतार बतलाते हैं उन महात्माओंके जीवनचरित्रोंको सृष्टिक्रम विरुद्ध बातों से भर देते हैं, खैर अवतारोंकी

कथाओं को मैं फिर कहूंगा, प्रथम अपनी ही दुर्दशाको सुनाता हूं, सब ही लोग मुझे मधुसूदन और कैटभारि कहते हैं परन्तु मधुकैटभ के मारने के समय न मालूम मुझे किस २ का उपासक पुराणवालों ने बना दिया है। गणेश पुराण के १७ और १८ अध्याय में लिखा है कि जब मैं मधु और कैटभ नामक दैत्यों से लड़ता २ थक गया और वह न मरे तब मैंने गन्धर्वका रूप धारण किया मैंने जो बनमें जाके बीन बजाई और गाया उस से शिव महाराज बड़े प्रसन्नहुए और अपने दूतके द्वारा मुझे अपने पास बुलाया और मेरे गानेको सुनके बड़े प्रसन्न होके वर देनेको तैयार हुए मुझसे तब मधुकैटभ की कथाको सुनके शिव महाराज बोले कि तुमने गणेश की पूजा नहीं की थी इससे ही तुम्हारा विजय नहीं हुआ अब मैं तुमको गणेशका मन्त्र बताता हूं उसको जपने से गणेश तुम पर प्रसन्न होंगे और उससे ही तुम को विजय प्राप्त होगा. शिवने यह भी कहा कि गणेश के ७०००००००० मन्त्र हैं मैं उनमें से षडक्षर मंत्र तुम को उपदेश करता हूं मैंने शिवसे उस मंत्रको ग्रहण करके १०० वर्ष तक जपा तब गणेशजी ने प्रत्यक्ष होके दर्शन दिये, देखिये तो यह गणेश जी और शिवजी कैसे धोखे बाज हैं कि जब मेरे गीत सुनने को शिवजी ने मुझे अपने पास बुलाया था उस समय गणेशजी वहीं मौजूद थे परन्तु वहां पर उनसे वर न दिया गया फिर जो गणेशजी मेरे ऊपर मिहर्बानी करनेको १०० वर्ष के बाद

आये थे उनके रूपका तेज ३००००१०० सूर्यों के समान लिखा है भला विचारिये तो सही कि एक सूर्यके उत्ताप से तो जगत् भर उत्तप्त रहता है परन्तु तीन करोड़ सूर्य के समान तेजवाले गणेशसे मैं भी न जला और न मधु कैटभ जले, गणेश पुराण में तो यह लिखा है और मार्कण्डेय पुराण तथा देवी भागवतमें लिखा है कि देवी की कृपासे मैंने मधुकैटभको मारा हां एक बात तो मैं भूल ही गया जिन गणेश जी का मंत्र मुझे १०० वर्ष तक जपना पड़ा था वा यों कहिये कि जिनकी उपासना से मुझे सिद्धि मिली थी' वह गणेशजी कौन हैं। देववृन्द ! वह गणेशजी भी पार्वती के शरीर के मैल से उत्पन्न हुए थे, लिखा है कि एक समय पार्वतीजी महादेवसे रुष्ट होके दूसरे वनमें चली गई थीं, उन्होंने वन में जाके अपनी रक्षा के वास्ते अपने शरीरके मैल से एक मनुष्याकार पुतला बनाया और उसे सजीव करके द्वार पर बिठला दिया, जब महादेव अपने गणों के सहित पार्वतीको ढूंढते हुए वहां आये और भीतर जाने लगे तब गणेश ने उनको रोका इस कारण परस्पर घोर संग्राम हुआ उस संग्राम में महादेवने गणेशका सिर काट डाला इस बातको देख कर पार्वती जी बड़ी चिन्तायुक्त हुईं और शिव महाराज से कहने लगीं कि इसको जिला दो अन्यथा मैं प्राण त्याग दूंगी इस हठको सुनके शिव महाराजने अपने दूतोंको इधर उधर भेजके गणेशके सिरको तलाश कराया

परन्तु गणेशके सिरको प्रथम ही देवता लोग उठाके ले गये थे और चन्द्रलोकमें रक्खा था अतएव महादेव के दूत एक हाथीके बच्चेको और उसकी माताको अचेत सोया हुआ देखके उस बच्चेके सिरको काट लाये शिव महाराजने उसही हाथी के बच्चे के सिर को गणेशके कबन्ध पर रख दिया और उसे जिला दिया देखिये देववृन्द ! कैसी शल्यक्रिया है कि दूसरेके सिर को धड़पर रखके छू मंतर किया और झट से वह जी गया यदि कहा जाय कि शिव महाराज सर्वशक्तिमान् थे तो क्यों नहीं विना सिरकेही गणेश को जिलाया ? ।

ऐसी हास्यास्पद कथा कुछ गणेशकेही विषय में नहीं लिखी वरन् मुझको भी देवताने एकबार ऐसे छू मंतरसे जिलाया था महाशय ! इस बात को मैं पारसाल की सबजेक्ट कमीटीमें बयान कर चुका हूं अब एक बात और सुनिये जिस गरुड़जी को मेरा वाहन बताते हैं उससे ही मेरा घोर युद्धभी लिख दिया है यह कहा नो ऐसी अद्भुत रीतिसे लिखी है कि जिसको सुनतेही हंसी आती है लिखा है कि कश्यप की स्त्री कद्रू (सर्पों की माता) और विनता गरुड़की मातामें एक दिन सूर्यके घोड़ेके विषयमें विवाद हुआ कद्रु कहती थी कि सूर्यके रथमें जो घोड़े जुते हैं वह काले हैं और गरुड़की माता उनको सफेद बतलाती थी सर्प अपनी माताको सच्ची सिद्ध करनेके वास्ते सूर्य के घोड़े के शरीरमें जा लिपटे इससे वह घोड़े काले मालूम होने

लग जब विनता शपथके अनुसार कद्रुकी दासी हो गई तब दासी भावके सब कार्य करने लगी एक दिन गरुड़ने अपनी मातासे पूछा कि तुम इसके घर दासी का काम क्यों किया करती हो गरुड़ की माता ने प्रथमकी सब कथा कह सुनाई गरुड़ने उस कथाको सुनके पूछा कि क्या कोई ऐसा कार्य है जिसके करने से तुम्हारा दासीपन छूट जाय ? गरुड़ की माताने अपनी सौतिन से पूछके गरुड़से कहा कि यदि तुम अमृत लाके सर्पोंको पिलाओ तो मैं दासीपन से मुक्त हो जाऊं इस बातको सुनके गरुड़जी अमृत लानेके वास्ते चले मार्गमें अपने पिताके दर्शनकी उनको श्रद्धा हुई तब वह अपने पिताके पास गये और दण्डवत प्रणाम करके उनसे कहा कि पिता ! मुझे क्षुधाने बहुत सताया है, आप मुझे बताइये कि मैं क्या खाऊं गरुड़ के पिताने कहा कि एक द्वीपमें शूद्रही बसते हैं तुम उन सबको खाजाओ परन्तु खबरदार किसी ब्राह्मण को मत खाना गरुड़ने अपने पितासे पूछा कि मैं ब्राह्मणको क्योंकर पहिचानूंगा उसके पिताने कहा कि जो मनुष्य तेरे पेट में न गले उसेही तुम ब्राह्मण समझना गरुड़ उस द्वीप में गये और सम्पूर्ण द्वीपवासियोंको चोंचमें भरके निगलने लगे उनमें ही एक ब्राह्मण भी था वह गरुड़ के पेटमें तो चला गया परन्तु पेट में जब न गला तब पेट में थोड़ासा उछलने लगा तब गरुड़ने उससे पूछा कि तू कौन है जो मेरे पेटमें नहीं गलता है उसने पेटमें से

ही उत्तर दिया कि ब्राह्मण हूं गरुड़ने उससे कहा कि तुम फौरन मेरे पेटसे निकल आओ ब्राह्मणने कहा कि मैंने जिस कहारिनको अपनी भार्या बनाके रक्खा था उसको भी आप निकाल दीजिये तब मैं निकलूंगा गरुड़ने तथास्तु कहके दोनोंको पेटसे निकलने की आज्ञा दी इस आज्ञाको पातेही वह ब्राह्मण कहारिन के सहित पेटसे निकल आया गरुड़ वहां से पेट भरके जब चले तब एक बटवृक्ष पर बैठे कि जो कई योजनका था था गरुड़के बैठनेसे उस वृक्षकी शाखायें टूट पड़ीं और उस ही शाखापर कई हजार बालखिल्य ऋषि तप करते थे यदि गरुड़जी उस शाखाको छोड़ देते तो वह सब ऋषि दबके मर जाते इस लिये गरुड़जी उस शाखाको अपने पंजों में दबाके उड़े और बहुत दिन तक उड़ते ही फिरते रहे फिर अपने पितासे पूछा कि इनको मैं कहां रक्खूं कश्यप ऋषिने कहा कि इनको अमुक पर्वत पर जाके रख दो और उनको रखके गरुड़ जी अमृत लेनेको चले जब स्वर्गमें पहुंचे तब अमृतकुण्ड के रखवालोंसे और गरुड़से भयानक युद्ध हुआ फिर उन के हार जाने पर समस्त इन्द्रादि देवता गरुड़से लड़नेको आये जब वह भी हार गये तब मुझको सबने बुलाया और मैं भी गरुड़से लड़ने लगा जब लड़ते २ मैं भी थका तब गरुड़ने प्रसन्न होके कहा कि हे विष्णु मैं तुमसे बड़ा प्रसन्न हुआ मुझसे ईप्सित वर मांगो मैंने गरुड़ से यही वर मांगा कि तुम मेरे वाहन बनो (इत्यादि) देखिये

देववृन्द! कैसी असम्भव कथा है क्या हमलोग छलसे किसी को अपने वशमें करते हैं जब कि मुझे पुराण वाले सर्वशक्तिमान् मानते हैं तो फिर ऐसे २ ढकोसलोंसे मुझे शक्तिहीन क्यों सिद्ध करते हैं? मेरे अवतारोंमें से जिस कृष्णको पूर्णावतार मानते हैं उसके विषयमें जो २ असम्भव और अश्लील कथा लिखी हैं उनका आप लोगोंके सन्मुख वर्णन करना केवल समयको नष्ट करना मात्र है तौभी दो अपूर्व कथाओंको मैं अवश्य यहां वर्णन करूंगा आप लोगोंने सुना होगा कि कृष्णके बड़े भाई बलरामसे रेवतीका विवाह हुआ था यह रेवती महाराज रैवत की कन्या थी इस कन्याको अत्यन्त रूपवती और गुणवती देखके उसके समान वरकी जिज्ञासा करनेको महाराजा रैवत अपनी कन्याके सहित ब्रह्माके पास ब्रह्मलोकमें गये ब्रह्माके पास उस समय एक और मामला पेश था इस कारण राजा रैवत वहां बैठ गये और ब्रह्मासे विनय करनेको अवसरकी प्रतीक्षा करने लगे जब अवसर मिला तब राजाने ब्रह्माजी से सुयोग्य वरकी जिज्ञासाकी ब्रह्माजी ने हंसके उत्तर दिया कि राजन् जितनी देर तुम यहां बैठे रहे उतनी देरमें मृत्युलोक में अनेक युग बीत गये इस कारण तुम्हारे वश में अब कोई भी नहीं रहा है अब तुम शीघ्र चले जाओ और इस कन्याका यदुवंशीय बलरामसे विवाह कर दो ब्रह्मा की आज्ञा ले राजा रैवत मृत्युलोकमें आये और बलराम से रेवती का विवाह करदिया। क्यों महाशय!

रेवतीका शरीर क्या पार्थिव परमाणुओंका नहीं था ? जो उसको मृत्युने न घेरा, यदि यही बात थी तो अब तक क्यों न जीवित रही ? यदि यही कहिये कि ब्रह्मलोक में चलेजानेसे मृत्यु न हुई तो विना शरीर त्यागकिये ब्रह्मलोकमें जानाही क्योंकर सम्भव है ? सत्य तो यह है कि लाल बुझक्कड़ोंने दूसरी कथा मुचकुन्दकी भी ऐसी ही रची है कि राजा मुचकुन्द देवतोंको दैत्योंसे बचाने के निमित्त स्वर्गमें गये परन्तु यहां उनका कुलक्षय हो गया, यदि यह दोनों कथा सत्य होतीं तो महाराजा दुष्यन्त जब इन्द्रको सहायता देने स्वर्गमें आये थे तब मृत्युलोकमें उनकी स्त्री शकुन्तला और उन का पुत्र भरत क्यों जीता रहा था, क्या उनके वास्ते मृत्यु का दूसरा नियम था, और महाराजा रैवत तथा मुचकुन्द के वास्ते दूसरा नियम था ॥

देववृन्द ! इन कथाओंसे ही सिद्ध होता है कि मेरे अवतारोंके विषयमें भी सब मिथ्या कथायें लिखी हैं। अवतार लेनेके जो कारण पुराणवालोंने लिखे हैं वह भी हास्यास्पद ही हैं भला सोचिये तो कि जरासे बल वाले कंसको मारने के वास्ते यदि मुझे स्वयं अवतार लेनेकी ज़रूरत होती तो जिस जगत्में कंस सरीखे करोड़ों बलवान् भरे हैं उसको प्रलय करने के वास्ते तो मुझमें शक्ति ही सिद्ध न होगी, फिर अवतारोंका भी ठिकाना नहीं है कि कितने हुए क्योंकि गोकुलिये गोसाईं सब अपने को विष्णु का अवतार ही समझते हैं। एक

और भी आश्चर्यकी बात है कि श्रीमद्भागवतमें कृष्ण को अनेक स्थलोंमें सर्वज्ञ लिखा है और यह भी लिखा है कि कृष्णने अपने गुरु सान्दिपन के मरेहुए पुत्रों को जिला दिया था परन्तु जब उनके पोतेअनिरुद्धकोबाणा-सुरने अपने घरमें कैद कर लिया था तब उनको यह भी न मालूम हुआ कि मेरा पोता कहां चलागया? जब नारद ऋषिने आके उनको सब गुप्त हाल सुनाया तब उनको मालूम हुआ कि अनिरुद्धको बाणासुरकी कन्या ने चित्ररेखा के द्वारा मंगा लिया है। न मालूम उस समय कृष्णकी सर्वशक्तिमत्ता और सर्वज्ञता कहांको चली गई थी, हां एकबात और भी कहना मैं भूलगया कि, जब बालक अवस्थामें यशोदाने कृष्णको मिट्टी खानेके अपराध में बांधा था उस समय कृष्णने अपने मुखमें तीनों लोक दिखा दिये थे, भला कहिये तो मुख था या दुनियां का नक्शा था परन्तु जब दुर्योधनने कृष्ण को कैद करनेका प्रबन्ध किया उस समय सब सिटीपटांग भूलगई, यदि कृष्ण वास्तवमें मेरा अवतार वा सर्वज्ञ होते तो अपने प्यारे भानजे अभिमन्युको यमराजके घर से क्यों न लौटालाते? असलमें न कृष्ण मेरे अवतार थे और न सर्वज्ञ थे ॥

जिन प्रह्लादको विष्णुका परम भक्त लिखा है और जिनको नृसिंह की कृपा से परम विज्ञान प्राप्त होना एवम् मोहसे रहित होना भागवतादि पुराणोंमें लिखा है उनका बदरिकाश्रम में रहने वाले उन नारायण के

साथ (देवी भागवत) घोर युद्ध लिखा है जिनको पुराण वाले विष्णुका अवतार मानते हैं (भागवत स्कं० १ अ० तुर्य्यधर्मकलासर्गे नरनारायणावृषीभूत्वात्मभोपेतमक- रोद्दुश्चरन्तपः) कहिये तो अब प्रह्लादकी नारायण भक्ति कहांको चली गई, फिर जिन नृसिंहजी की सब से अ- धिक प्रशंसा और शक्ति लिखी है उनके ही विषय में पुराणोंके दादा गुरु आकाशभैरव तन्त्रमें लिखाहै कि जब नृसिंह जीका क्रोध किसी प्रकारसे शान्त न हुआ तब देवतोंने शिव महाराज से आके प्रार्थना की शिव जी भी देवतोंको अभय दान देके उनके क्रोधको शान्त करनेका उपाय सोचने लगे जब कोई और उपाय न सूझा तब शिव जी ने शरभशालव पक्षीराज का रूप धारण किया और नृसिंह जी को पञ्जोंमें दबा के उड़ गये अनेक वर्षों तक शिवमहाराज नृसिंहको पञ्जों में दबाये आकाश में फिरते रहे, जब नृसिंह जी थके और घबड़ाये तब शिवकी स्तुतिकी यही स्तुति दारुण सप्तक नाम से प्रसिद्ध है, इन शरभ जी के रूपको आप लोग सुनेंगे तो और भी चकित होंगे इनका रूप यों वर्णन किया गया है ॥

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवदनखश्चंचलात्युग्रजिह्वः ।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवोवाडवाग्निः ॥
ऊरुस्थौव्याधिमृत्यूशरभवरखगश्चण्डवातातिवेगः ।
संहर्त्तासर्वशत्रून् जयतिशरभः शालवः पक्षिराजः ॥

अब कहिये क्या यह अवतारों के बहाने से मुझे गाली देना नहीं है ? फिर वामन के नामसे मुझे धोखे बाज़ और जालसाज़ बनाया है क्या मुझे पुराण वालों ने पार्शियल वा पक्षपाती समझ रक्खा है कि मैं इन्द्रके वास्ते पहिले छोटा सा रूप बनाके भिक्षा मांगने जाता और फिर विकट रूप बनाता और विचारे निरपराध वलिको छल के क़ैद कर देता, क्या मैं अन्यायी हूं कि निरपराध को दण्ड देता हूं फिर पुराण वाले यह भी कहते हैं कि वामन सदा बलिके द्वार पर पहरा दिया करते हैं क्या यह सम्भव है कि ईश्वर किसीका पहरेदार हो सक्ता है। खैर एक और भी बात मुझे याद आई है जब कृष्ण महाराजसे शाल्व लड़नेको द्वारिकामें गया था तब कृष्ण बलरामको द्वारिकाकी रक्षाके वास्ते घरपर छोड़के आप शाल्वसे लड़नेको आये तब घोर घमसान मच गया कृष्णको छलनेके वास्ते शाल्वने मायासे वसुदेवका सिर बनाया और कृष्णको दिखलाके कहने लगा कि ले मैं तेरे पिताका सिर काट लाया उस समयसिर को देखके कृष्ण महाराजके होश हवाश गुम होगये और रणमें मुख मोड़ के रोने लगे, बहुत देरके बाद जब ध्यान आया कि मैं बलराम को रक्षाके वास्ते छोड़ आया था और बलराम ऐसे साधारण वीर नहीं हैं जिनको शाल्व क्षण भरमें जीत लेता, इससे निश्चय होता है कि यह दानवी माया है देखिये तो कृष्णकी सर्वज्ञताको कैसा साफ उड़ा दिया है यह तो देवीभागवतकी बात हुई अब भागवत का

हाल सुनिये इस—में लिखा है कि जब रुक्मिणीके गर्भ से प्रद्युम्नकी उत्पत्ति हुई तब ही सूतिका गृहसे प्रद्युम्न को कोई उठा ले गया, श्रीकृष्ण पुत्रके विरहसे अत्यन्त दुःखी हुए और कई दिन तक रोते फिरते रहे परन्तु बालक का कुछ भी पता न लगा तब नारदने आके कृष्ण को समझाया कि शम्बर दैत्य तुम्हारे पुत्रको उठा के ले गया है तुम कुछ मत घबड़ाओ वह स्त्री के सहित तुमसे आके मिलेगा, खैर अन्त में ऐसा ही हुआ कि प्रद्युम्न शम्बर दैत्यको मार अपनी स्त्री रति के सहित कई वर्ष पश्चात् श्रीकृष्ण जी के पास आया। पुराण वालोंसे कोई पूंछे कि जो श्रीकृष्ण अपने गुरुपुत्रों को लानेके समय सर्वज्ञ बने थे और मरे हुए गुरुपुत्र को यमराजके पास लेनेको गये थे वह इतना भी न जान सके कि मेरे पुत्र को कौन ले गया और न उसको छुड़ा के लाये, कहां तक कहूं अवतारों के विषयमें खूब ही लीला रची है, इसके अतिरिक्त मुझे खूब ही कलङ्क लगाये हैं जय विजय के विषय में जो कथा लिखी है वह भी हंसीसे भरी हुई है देवगण! यह क्या हंसी की बात नहीं कि जो स्वयं मुक्तिदाता है उसके ही पार्षदों को राक्षस बना दिया फिर—

"आप गलन्ते पाण्डिया यजमान भी गाले"

इस कहावत के अनुसार जय विजयके कारण मुझे भी मछली और कछुआ बनना पड़ा फिर हर बार मैं उनको मुक्ति देता रहा पर वह बराबर जन्म लेते ही

रहे, महाशय ! मैं कहां तक कहूं या तो आप लोग पुराणोंको ख़ारिज कीजिये नहीं तो मैं ऐश्वर्यपद से प्रस्तीफा देता हूं. विष्णु महाराजको और भी कुछ कहना था परन्तु एक ही व्याख्यान में कई दिन व्यतीत हो जानेके भयसे उनका व्याख्यान रोक दिया गया ॥

विष्णु भगवान् के बैठते ही सूर्यनारायण खड़े हुए और कहने लगेः—

देववृन्द ! मुझे आप लोग भलीभांति जानते हैं कि मैं सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की उस महिमा को प्रकाशित करनेवाला हूं जिससे उसकी अपूर्व कारीगरी और असीम विज्ञान का प्राणीमात्र को परिचय मिलता है, सृष्टि के आरम्भमें ही परमेश्वर ने मुझे इस अभिप्राय से निर्माण किया था कि मेरे आकर्षण से अनेक लोक अपनी सीमा पर स्थित रहें परन्तु पुराणवालों ने मेरी उत्पत्ति अद्भुत प्रकारसे लिखी है। लिखा है कि कश्यप की स्त्री अदितिके गर्भसे मेरी उत्पत्ति हुई भला कहिये तो कि यदि मैं किसी स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न होता तो मेरे जन्मसे पूर्वके मनुष्य अर्थात् मेरे माता पिताही क्यों कर देखते, क्या वह लोग अन्धे थे ? इस ही प्रसङ्गमें मैं यह भी कहे देता हूं कि पुराणवालोंने मेरे मित्र वायुदेव को भी ऐसाही दोष लगाया है, लिखा है कि जब वायु अपनी माताके गर्भ में थे तब इन्द्र उस की माता के गर्भमें घुस गये और बालकके ४९ टुकड़े कर डाले जब वायुकी माताको चेत हुआ तब उसने इन्द्र को श्राप

दिया, क्या यह असम्भव और अश्लील बात नहीं है कि देवराज इन्द्र अपनी विमाता (Step mother) के गर्भ में चले गये ? खैर मेरे विषयमें जो पुराणवालोंने लिखा है वह बिल्कुल असत्य है, लिखा है कि दुर्वासा ऋषिसे कुन्तीने मन्त्र लेके मुझे मन्त्रबलसे अपने पास बुलाया यह कन्या थी मैंने उससे व्यभिचारकी इच्छा प्रकटकी जब वह सहमत न हुई तब मैंने उसे वर देके प्रसन्न किया, कहा कि तेरा कन्यापन नष्ट न होगा और तेरा पुत्र मेरे ही समान तेजस्वी होगा कुन्ती इस बात को सुनके राजी हुई और मैं जनाबिलजब्र के कसूर से बरी हुआ मगर (Repe case) कन्यात्व नष्टका दोष तो मेरे ऊपर लग ही गया खैर ! कुन्तीके गर्भस्थापन कर मैं फिर आकाश में जा चमका और १० मासके पश्चात् कुन्तीके पुत्र उत्पन्न हुआ इस पुत्रकी उत्पत्ति भी विलक्षण ही लिखी है कि कुन्तीके कानसे वह लड़का पैदा हुआ वाह जी वाह ! क्या ही कथा गढ़ी गई है (मैं ठीक कहता हूं कि यह कथा लाल बुझक्कड़ की इस कहानी के अनुसार है कि एक वार लाल बुझक्कड़ के ग्राम में कोई सौदागर हाथी ले आया उसको देख के ग्रामवासी चकित हुए और लाल बुझक्कड़ से पूछने लगे कि बतलाओ यह क्या है ? लाल बुझक्कड़ ने उत्तर दिया कि "लाल बुझक्कड़ बूझिया और न बूझे कोय। रात इकट्ठी हो गई या दिल्ली वाला होय' बस इस ही प्रकार से राधा पुत्रका कर्ण नाम सुनते ही कानसे पैदा होने

की कहानी गढ़ी गई है) भला कानसे भी कहीं पुत्र उत्पन्न होते सुने हैं फिर तारीफ यह है कि लोहे का जिरह बख्तर पहिने ही उसका जन्म होना लिखा है, क्या कोई वैद्य किसी विद्यासे सिद्ध कर सक्ता है कि माताके पेटमें लोहे का जिरह बख्तर बन जाय आप लोग खूब समझ सक्ते हैं कि राधेय कर्ण को क्षत्रिय बनानेके वास्ते जो यह कथा गढ़ी गई इसमें मुझे और पाण्डवोंकी माता कुन्तीको बड़ा भारी दोष लगाया है, फिर छायाको मेरी स्त्री लिखा है, नृसिंह पुराणके १८ अध्याय में मेरे वंशकी अद्भुत कथा लिखी है, लिखा है कि त्वष्टाकी कन्या संज्ञासे मेरा विवाह हुआ, जब वह मेरे तेजको न सह सकी तब अपने पिता के पास गई उसके पिताने यह कह के मेरे पास उसे भेजा कि मैं सूर्य्यके पास आके सूर्य्यके तेजको कम कर दूंगा तब फिर वह मेरे पास आई और रहने लगी उसके गर्भ से मेरे तीन सन्तान हुई, वैवस्वत मनु, यम और यमी नाम की एक कन्या इसके पश्चात् संज्ञा मेरे तेज को न सह सकी तब आप तो घोड़ी बनके उत्तर कुरु देश को चली गई और अपनी छायाको मेरी स्त्री बना के घर छोड़ गई तब मुझे इतना भी ज्ञान न रहा कि यह मेरी असल स्त्री नहीं है तब उस छायासे मेरे तीन सन्तान फिर हुई मनु शनैश्चर और तापती नामकी कन्या, छाया अपनी सन्तानसे अधिक प्यार करती थी और संज्ञा की सन्तानसे कम प्रेम रखती थी इस कारण यम और यमी

ने मुझसे कहा तब मैंने छायाको समझाया पर छाया ने क्रोध करके यमको शाप दिया कि तू प्रेतोंका राजा हो और यमीको शाप दिया कि तू नदी हो जा, तब मैंने भी छायाकी सन्तान को शाप दिया कि शनैश्चर तू क्रूर ग्रह हो जा, और तापती तू भी नदी हो जा तब मैंने ध्यान करके देखा तो मालूम हुआ कि संज्ञा घोड़ीका रूप धारण किये उत्तर कुरु देशमें विचरती है तब मैं भी घोड़ा बनके भागा और उससे दो पुत्र उत्पन्न किये वही आप लोगोंके डाक्टर अश्विनी कुमार हैं, भला कहिये तो मुझे कैसा घोड़ा बनाया है, कोई पुराण बनाने वाले पोप से पूछे कि जब मैं घोड़ा बन के कई वर्ष तक उत्तर कुरु देश में रहा था तब जगत्में प्रकाश कौन करता था, देववृन्द ! मैं आपलोगोंसे प्रार्थना करता हूं कि इन देवकुलकलङ्कधारी पुराण पुस्तकों को इतिहासोंकी लिस्ट (सूचीपत्र) से अवश्य काट दीजिये

सूर्य्य नारायणके वचनकी ताईद महर्षि अगस्त ने की और कहा कि पुराणोंका नाम आजसे पंच (दिल्लगी के अखबार) रक्खा जाय क्योंकि इनमें ऐसी ही हंसीकी बातें लिखी हैं, मेरे विषय में लिखा है कि अगस्तका जन्म घड़ेसे हुआ और फिर लिखा है कि मैं समुद्र को पी गया, भला जो खुद घड़ेसे पैदा हो वह समुद्रको क्योंकर पी सक्ता है ? क्या घड़ेमें समुद्र समा सक्ता है ? अब मेरे चरित्रोंको सुनिये कि दक्षिण पथ में आतापि और वातापि नामके दो दैत्य रहते थे—

वे सदैव छलसे ब्राह्मणों को निमंत्रित करके बुलाते थे और उन दैत्योंमें से एक बकरा बन जाता था और दूसरा उसे मार के ब्राह्मणों को खिला देता था एक दिन मेरा भी उन्हों ने निमंत्रण किया पर यहां तो ठहरे गुरु घण्टाल उसे खाके पचा गये फिर वह भी मारा गया इसके अनन्तर मैंने समुद्र को पिया और मूत्रके मार्गसे निकाल दिया गोया वह मेरे लिये इन्द्रियजुलाब था फिर विन्ध्याचल पर्वत सूर्य्यको रोकने के वास्ते ऊंचा हो जाता था तब देवतोंने मुझसे प्रार्थनाकी मैं पर्वतके पास गया वह प्रणाम करने को पृथिवीमें गिरा मैंने उसके सिर पर हाथ रख के कहा कि जब तक मैं तीर्थ यात्रा करके न लौटूं तब तक तुम ऐसे ही पड़े रहो बस मैं तो आके तारा बन गया और विन्ध्याचल अब तक वैसे ही पड़ा है इस कथामें प्रथम तो मुझे धोखेबाज सिद्ध किया फिर सृष्टिक्रमविरुद्ध जड़ का चैतन्यके समान प्रणाम करना और मेरे वचन को मानना आदि असम्भव बातें सिद्धकी हैं क्या हम महर्षि होके भी मांस भक्षण करते? समुद्रका क्षार होना पुराण से जो प्राचीन पुस्तक हैं उनमें बराबर लिखा हुआ है परन्तु उसको भी मेरा मूत्र लिख दिया इन कथाओंसे हम लोगोंको बड़े दोष लगते हैं इस कारण इनको ज़रूर ही मन्सूख कर देना चाहिये ।

इसके अनन्तर सांख्यशास्त्र के प्रणेता महर्षि कपिल खड़े हुए और कहने लगे कि मैंने जो सांख्यशास्त्र

बनाया है उसको विना विचारे और पढ़े ही भागवत में मेरे मतको प्रकाशित किया है इस कारण में भागवत बनानेवाले पर मदाखलत बेजा का जुर्म कायम करके नालिश करनेवाला था परन्तु अब आप लोगोंने पंचायत करके भागवतको रद्दी करने का प्रस्ताव किया है इस कारण मैं आप लोगोंको धन्यवाद देता हूं पुराण वालों ने मुझे भी चोरोंका रक्षक लिख दिया है उन्होंने लिखा है कि जहां मैं तपश्चर्या करता था वहीं राजा इन्द्र राजा सगरके अश्वमेधार्थ छोड़े हुए घोड़ेको चराके बांध गया मैं समाधिस्थ था इस कारण मुझे कुछ खबर न पड़ी जब राजा सगर के ६०००० पुत्र घोड़े को सब जगह ढूंढ के हार गये तब उन्होंने पृथिवीके नीचे ढूंढने के अभिप्रायसे पृथिवीको खोदना आरम्भ किया उन्हीं के खोदनेसे सात समुद्र बन गये (और जब गंगा जी आईं तब उनमें पानी भरा) पृथ्वी को खोदते खोदते उनको मेरा आश्रम मिल गया तब उन्होंने मुझे पीड़ा दी उस पीड़ासे मेरी समाधि खुल गई ज्योंही मैंने उन को नजर उठाके देखा त्योंही वह सब भस्म हो गये भला कहिये क्या मैं ऐसा हत्यारा हूं कि ६०००० मनुष्यों को मार डालता हम लोग ऋषि क्या हुए मलकुलमौत हो गये फिर राजा प्रियव्रत के रथकी कथा इससे भी विलक्षण लिखी है अर्थात् सूर्यकी स्पर्द्धासे जगत् में बराबर चांदना रखनेके वास्ते जो रात दिन स्वयम् रथ पर चढ़के घूमे थे उनके प्रताप से रात दिन तक

जगत् भर में चांदना रहा था और उनके रथके एक ही पहिये की लीकसे सात समुद्र बन गये इनही राजा प्रियव्रत को ११ अरब बर्ष तक राज्य करते लिखा है सभ्यगण अब कहिये किसको सच्चा माना जाय अर्थात् राजा सगरके पुत्रोंके खोदने से समुद्र बने वा राजा प्रियव्रत के पहिये से समुद्र बने हमतो इन दोनों ही कथाओं को मिथ्या समझते हैं क्योंकि वेदोंमें लिखा है कि सृष्टि के आरम्भमें ही ईश्वर ने समुद्र को बनाया।

महर्षि कपिलके व्याख्यान का अनुमोदनकरने को महर्षि वशिष्ठ दण्डायमान हुए और यों कहना प्रारम्भ किया। सभ्यवृन्द! और सभापते!पुराणोंके विषयमें मैं क्या कहूं वह तोअसम्भव और प्रमाणशून्यकहानियोंकाभण्डार हैं महर्षि विश्वामित्र और मेरे विरोधके कारणमें लिखा है कि एक बार विश्वामित्रजी (जब राजा थे) बन में शिकार खेलनेको आयेमैंने उनको धर्म्मज्ञ राजा समझके अपने आश्रम पर निमंत्रित किया उन्होंने मेरे आश्रम पर खान पानकी जब कुछ भी सामग्री न देखी तब बड़ा आश्चर्य करने लगे मैंने उनका अभिमान भङ्ग करनेको उन की महती सेना और अमात्यवर्ग के सामने ही सुरभी गौ से कहा कि तुम सबका यथायोग्य सन्मान करो मेरे बचन को सुनके सुरभी ने हुंकार छोड़ी उसके हुंकारते ही सहस्रों दास और दासी उत्पन्न होगये फिर सुरभी की हुंकारसे ही सब प्रकारके भक्ष्य भोज्य और चोष्य तथा लेह्य पदार्थ उत्पन्न हो गये और दास दा-

षियों ने उनके पास पहुंचा दिये इस अद्भुत बातको देखके गाधिसुअन विश्वामित्र बड़े चकित होके मुझसे कहने लगे कि हे महर्षे! यह गौ तो हमारे योग्य है तुम भिक्षुक इसे लेके क्या करोगे मैंने कहा राजन् यह हमारी यज्ञ धेनु है इसको लेने की आप इच्छा न कीजिये, मेरे बहुत समझाने पर भी विश्वामित्र न माने और अपना क्षात्र बल दिखाने लगे, तब मैंने कहा कि तुम जबरदस्त हो यदि शक्ति रखते हो तो मेरी यज्ञ धेनु को ले जावो, विश्वामित्रने अपने सैनिकोंको आज्ञादी कि वशिष्ठकी धेनुको खोल लो जब विश्वामित्रके सेवक मेरी गौ को खोल के ले चले तब धेनु ने मुझसे कातर स्वरके साथ कहा कि महर्षे मेरा क्या अपराध है जो आप मुझे परित्याग करते हैं मैंने कहा शुभे! मैं तुझे परित्याग नहीं करता हूं वरन् राजाविश्वामित्र जबर्दस्ती तुझे छीनके लिये जाता है, यदि तू अपनी रक्षा कर सकती हो तो कर मेरे वचन को सुनके धेनु ने हुंकार किया और उसके क्रोध करते ही उसके खुरोंसे खुरासानी राक्षस तथा औरर प्रकारके सहस्रों राक्षस उत्पन्न होगये और विश्वामित्र की सेनासे युद्ध करने लगे उन राक्षसों ने क्षणमात्र में विश्वामित्र की सेनाको विध्वंस कर दिया जब विश्वामित्र की सब सेना मारी गई और विश्वामित्र एकले खड़े रह गये तब उनको क्षात्र बल पर अविश्वास और घृणा उत्पन्न हुई और वह उसही समय राज्य छोड़ तप करने वनको चले गये आप लोग

विचारिये कि वह गौ थी वा ब्रह्माकी भी दादी थी जिस के हुंकारलेही सहस्त्रों दैत्य पैदा होगये यदि यही बात है तो इन्द्रने क्यों नहीं अपने घर में एक वैसी गौपाली जिससे कोई भी दैत्य दानव स्वर्ग पर चढ़ाई न कर सकते खैर एक और अद्भुत कथा सुनिये मेरे यजमानोंके साथ मेरी लड़ाईका कैसा बयान पुराणोंमें लिखा (दे० भा०स्क० ६ अ०१५) राजा इक्ष्वाकु के १२ वें पुत्र राजा निमि ने एक बार मुझे यज्ञ करने को बुलाया राजा निमि का वह यज्ञ ५००० वर्ष में पूर्ण होने वाला था परन्तु इस यज्ञसे पहिले मुझे देवराज इन्द्रने यज्ञ करने को निमंत्रित किया इस कारण मैंने राजा निमिसे कहा कि प्रथम मैं इन्द्रका यज्ञ कराय आऊं पश्चात् तुम्हारा यज्ञ कराऊंगा अभी तुम यज्ञ मत करो, राजा निमिने कहा कि मैं सब ऋषियोंको बुला चुका हूं और सब सामग्री भी इकट्ठी कर चुका हूं अब यज्ञको नहीं रोक सकता हूं आप हमारे वंशके पुरोहित हैं इस कारण हमें छोड़के धनके लोभ से इन्द्र के यहां तुम को जाना उचित नहीं है परन्तु मैंने राजा निमिका कहना न माना और मैं इन्द्रके यहां यज्ञ कराने चला गया तब राजा निमिने महर्षि गौतमको पुरोहित बनाके यज्ञ करलिया अब मैं इन्द्रके यज्ञको समाप्त करके ५००० वर्ष के पश्चात् राजा निमिके घर लौट के गया तब देखा कि राजा शयन करते हैं राजा के सेवकोंने राजाको न उठाया तब मुझे ऐसा क्रोध आया कि मैंने राजाको शाप

दिया कि तेरा शरीर नष्ट होजाय जब मैंने शाप दिया तब राजाके सेवकोंने राजाको जगाया वह जागके मेरे पास आया और कहने लगा कि महर्षे ! तुमने अकारण मुझे शाप दिया और प्रथम लोभवश मुझ यजमान के यज्ञ को छोड़ के इन्द्र के घर चले गये थे यदि जागता होता और तुम्हारे पास न आता तब अवश्य अपराधी होता परन्तु तुमने मुझ निद्राग्रस्तको शाप दिया इस कारण तुम्हारा अविवेकपूर्ण और क्रोधी शरीर भी नष्ट होजाय, राजाके शापको सुनके मैं ब्रह्माकेपास गया और उनसे सब वृत्तान्त सुनाया ब्रह्माने कहा तुम्हारा दूसरा जन्म मित्रावरुणकेयहां होगा औरतुम्हारा विज्ञान विनष्ट न होगा खैर मेरा दूसरा जन्म हुआ और फिर घड़ेसे मेरी उत्पत्ति हुई, अब राजा निमिका हाल सुनिये उस का भी शरीर नष्ट हुआ परन्तु ब्रह्माके वरसे उस का वास समस्त मनुष्योंके नेत्रोंपर होगया, देखिये तो क्या दिल्लगी की कथा है कि राजाका निवास सब मनुष्यों के नेत्रों पर होगया क्या उससे पूर्व मनुष्योंका पलक (निमेष) नहीं लगती थी ? यदि यही बात है तो महर्षि गौतम ने जो जीवके साधारण लक्षण लिखे हैं वह क्या मिथ्या है ? महर्षि वशिष्ठ जी की बातको सुनके सभापति जी ने अपने आसनसे उठ के कहा कि अभी तक किसी वस्तु के अधिष्ठातृ देवताने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है जिससे उस गरोह की राय भी जाहिर हो, लिहाजा अब किसी गरोहके देवताको अ-

अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये श्रीमान् सभापति जी की आज्ञाको सुन के सब नदियोंके अधिपति श्रीमान् समुद्रदेव खड़े हुए और कहने लगे कि—

सभासद्वृन्द ! पुराण वालोंने जो मेरी दुर्दशा की है वह अकथनीय है, आप लोगोंने मेरे मथनेकी कहानी को अवश्य सुना होगा? देखिये तो कैसा वाहियात झगड़ा मचाया है कि मेरे मथने के वास्ते मेरु पर्वत को उठाके देवतों ने मेरे बीचमें डाल दिया फिर सर्पराज वासुकी को नेती (रस्सी) बनाके घरांटेके साथ घुमाया उस घुमानेमें भी विष्णुने चालांकी की कि दैत्यों को सर्पराजके मुखकी ओर खड़ा किया और देवतोंको पूंछ की ओर खड़ा किया जिससे सर्पका विष दैत्योंको ही चढ़े और देवता उससे बचे रहैं खैर यहभी चालांकी चमत्कारिणी और हितकारिणी न हुई और न सर्पने काटा तब जो २ चीज अच्छी २ निकलीं वह देवतोंको मिलती गईं और बुरी २ चीजें बिचारे दैत्यों को दीं उच्चश्रवा घोड़ा तो खुद देवराजने हथिया लिया लक्ष्मी विष्णुको पसन्द हुई और मरे विचारे भोलानाथ कि विष उनको पीनापड़ा फिर जब मदिरा निकली तबतो वह दिल्लगी हुई कि भांड़ोंको भी मात कर दिया दैत्योंके छलने के वास्ते स्वयम् विष्णुभगवान्को मोहिनी रूप धारण करना पड़ा उस रूप को देखके हमारे भोलानाथ जी ऐसे बहंके कि विष्णुकी भी छकड़ी भूल गई उन को पिण्ड छुड़ाना कठिन होगया। खैर विष्णुने उसही

मोहिनी रूपसे दैत्योंको छलके देवतोंको अमृत पिलाया भला सोचिये तो कि खारी पानीमें अमृत कहांसे आया सो भी अगस्त ऋषिके मूत्रमें! देववृन्द! क्या पुराणवालों ने आप लोगोंको यह गाली नहीं दी है कि अगस्त ऋषि के पेशाबसे मेरी उत्पत्ति लिखी और उससे उत्पन्न हुए अमृतको आप लोगों को पान कराया फिर यह भी विचारनेकी बात है कि मुझमें क्या किसीने गुड़ वा महुआ घोल रक्खे थे जो मुझमें से शराब निकल आई इसके अतिरिक्त जिन धन्वन्तरिके पिता दीर्घतमा थे और जो काशीके राजकुलमें पैदा हुए थे उन धन्वन्तरि की भी उत्पत्ति मेरे जलमें से ही हुई बतलाते हैं क्या! धन्वन्तरि कछुए या मछरी थे जो पानीसे उत्पन्न होते! फिर सुश्रुतमें धन्वन्तरि ने स्वयम् कहा है कि—

"अहं हि धन्वन्तरिरादिदेवोजरारुजामृत्युहरोऽमराणाम् ।
शल्याङ्गमङ्गैरपरैरुपेतम् प्राप्तोस्मिगाम्भूयइहोपदेष्टुम्" ॥

नहीं मालूम धन्वन्तरिने यह शेखी क्यों बघारी है? यदि मेरे मथनेसे धन्वन्तरिकी उत्पति होती तो वह अपने मुंहसे आदि देव क्यों बनते क्या अपने मुंह से मिट्ठू बनना सभ्यता से वाहर नहीं है?

महाशय! जिन नदियोंका मुझे पति लिखा है उन की कथा सुनिये देवी भागवत में लिखा है कि एक दिन ब्रह्माके दरबारमें गङ्गाजी खड़ी थीं इन्द्रभी दर्बारमें हाजिरी देनेको उसही समय पहुंच गये इनके अलावा और २ देवताभी दरबारमें हाजिर थे इत्तफाकिया वायु से

गङ्गाके शरीरका वस्त्र उड़ गया इससे सब देवतोंने नीची नजरकर ली परन्तु देवराजतिकलिंकी बांधकर देखते रहे और गंगाजीभी मुसकराई इस घृष्टता (बेअदबी) कोदेख कर ब्रह्माने दोनोंको शाप दिया कि तुम मनुष्ययोनि में जन्मलो इसही कथाकी भूल भलैयामें पुराणवालों ने एक और भी कथा जोड़ दी है जब गंगाजी शाप पाके ब्रह्माके दरबारसे लौटी आती थीं तब उन्होंने देखा कि आठों वसु रास्तेमें बैठे रो रहे हैं वह सब गंगा जी को देखकर और भी रोये तब गंगाजी ने उनसे पूछा कि तुम लोग क्यों रोते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि हम सबको वशिष्ठ ऋषिने मनुष्य योनि में जन्म लेनेको शाप दिया है शापका कारण पूछने पर वसुओं ने कहा कि हम सभी अपनी अपनी स्त्रियोंको साथ लेके वनविहार (सैर) करते २ वशिष्ठजी के आश्रम पर पहुंचे वशिष्ठजी ने अपनी यज्ञधेनुसे अतिथि सत्कार करके सब पदार्थ लेके हम लोगोंका सत्कार किया तब गौ की इस अपूर्वशक्तिको देखकर हम में से एक वसु की स्त्री ने अपने पतिसे कहा कि इस गौ को ले लेना चाहिये स्त्रीके अनुचित हठसे उस वसुने गौ को चुरा लिया परन्तु वह दिव्य गौ थी इस कारण बोल उठीकिन्तु इससे वशिष्ठ महाराज क्रुद्ध हुये और हम लोगोंसे बोले कि तुम मनुष्योंके समान बुद्धि रखते हो इस कारण तुम सब मनुष्ययोनि में जन्म लो महर्षि के इस शाप को सुनकर हम लोगोंने बड़ी विनय को उस से वशिष्ठ

जी का जब क्रोध शान्त हुआ तब उन्होंने कहा कि जिस ने गौ चुराई है वह अधिक दिन तक मनुष्य रहेगा और अन्य वसु जन्म लेतेही शापसे मुक्त हो जायंगे । हे गंगे! इसही दुःखसे हम लोग रो रहे हैं गंगाजी ने यह सुनके उन्हें सन्तोष दिया और अपने दुखड़ेको सुनाया तब यह सलाह ठहरी कि वसु गंगाके गर्भमें जन्म लें खैर यही किया गया और देवराज इन्द्र राजा शान्तनु बने और गंगा उनकी पत्नी हुई जब वह अपनी प्रतिज्ञानुसार सात पुत्रोंको मार चुकीं तब वही आठवां पुत्र भीष्म उत्पन्न हुये और पिताके वरसे स्वाधीन मरण हो गये। यह तो गंगा जी की कथा हुई यमुना और तापतीका हाल आप लोग सुनही चुके हैं इनके अतिरिक्त औरभी कई एक ऐसी नदी हैं जिनको पौराणिक लालबुझक्कड़ोंने पहिले जन्मकी मानुषी लिखी हैं और वह परस्पर के शापोंसे नदी हो गई हैं परन्तु यह किसी पुराणमें नहीं लिखा कि लण्डनकी टेम्स नदी पहिले जन्ममें कौन थी हां एक बात तो मैं कहना भूलही गया कि एक नदी राजाकी रालसे बनी है और वह राजा जिसको परम धर्मात्मा महाराज हरिश्चन्द्रका पिता लिखा है वह अभी तक आधे स्वर्गमें टंगा है और उस के मुखसे राल गिर रही है बस वही राल नदी होके बहती है इस नदीका नाम कर्मनाशा इस कारण है कि उसमें स्नान करनेसे व उसका जल स्पर्श करने से ही मनुष्य के पूर्वकृत सब सुकर्म नष्ट हो जाते हैं क्या मैं

आप लोगों से यह प्रश्न कर सकता हूं कि उस नदी के आस पास निवास करने वाले पाप पुंज नहीं बन गये होंगे ? क्या उन लोगोंके वास्ते ईश्वर दयालु और न्यायकारी नहीं रहा ? फिर आश्चर्य यह है कि उस ही नदी के किनारे पर बसी हुई गया पुरीमें पितरों का श्राद्ध करनेसे स्वर्गका फाटक खुल जाता है उस परभी तुर्रा यह है कि जिन पितरोंका गयामें श्राद्ध हो जाता है उनकी मुक्ति हो जाती है पर फिरभी उनका वार्षिक श्राद्ध होता रहता है । देववृन्द ! मैं प्रकरण विरुद्ध श्राद्धके विषयको कहने लगा था अब मैं केवल यही कहके अपने व्याख्यानको समाप्त करूंगा कि श्री पौराणिक पोपराजने अपने मन गढ़ित भूगोलमें लिख दिया है कि शराबका घीवका और ऊखके रस का भी समुद्र है यदि यह बात सत्य होती तो सबलोग मजेसे घी के समुद्रसे घड़े क्यों न भर लेते और मद्यप्रिय अंग्रेज उस खुदाईका शराबका व्योपार क्यों न करते ? इसके अतिरिक्त यदि शराबका समुद्र होता तो मुझे मथकर शराब क्यों न निकाली जाती ? सभ्यवृन्द ! मैं तो यही चाहता हूं कि जो पुस्तक मुगालतेसे भरे हुये हैं उनको मान्य पुस्तकोंकी सूचीमेंसे अवश्य काट देना चाहिये

समुद्रका व्याख्यान होजानेके अनन्तर भगवती भूमि उठीं और यों कहने लगीं देववृन्द ! आपलोग जानते हैं कि जिन परमाणुओंसे मेरा संगठन हुआ है वह परमाणु नित्य हैं और उनका संयोग ईश्वर ने सृष्टि के

आरम्भमें किया है परन्तु पुराण वालों ने मेरी पवि-त्रताको घटानेके निमित्त लिख दिया है कि मधु और कैटभकी चर्बीसे पृथिवी बनी है भला विचारिये तो कि यदि मधु कैटभसे पहिले मैं न होती तो जिस जल पर विष्णु सोये थे वह किसके आधार पर ठहरता ? फिर मेरे आधारके विषयमें वह वहार की है कि जिस से आप लोग अवश्य हंसेंगे मेरा आधार शेषनागको लिखा है भला यह क्या दिल्लगीकी बात है कि एक वह सर्प जो कद्रू के गर्भसे उत्पन्न हुआ वह मुझे क्यों कर धारण करता और उसके जन्मसे पूर्व मैं काहे पर रखी थी फिर उसका भी एक आधार लिख दिया है परन्तु ह-जरतोंको यह न मालूम हुआ कि हम सबलोग परस्पर के आकर्षणसे ठहरे हुए हैं फिर यहभी पुराण वालों को मालूम नहीं है कि जड़ पर्वतोंके सन्तान क्यों कर होती पर्वतोंका विवाह पर्वतोंकी सन्तति और पर्वतों का निमन्त्रणोंमें जाना न मालूम किस विज्ञानसे सिद्ध करते हैं ? पौराणिक महात्माओंने लाख योजन का एक एक वृक्ष लिख दिया है और द्वीपोंका जो वि-स्तार लिखा है उसको पढ़तेही हंसी आती है सभ्य महाशय ! आज इतना समय नहीं है कि अपनी पूरी सम्मति वा द्वीपादिकोंकी पूरी कथाको प्रकाशित करूं किन्तु इतना अवश्य कहती हूं कि पुराणोंने मेरे विषयमें सैकड़ों असम्भव बातें लिखी हैं इस कारण पुराणों को अवश्य खारिज कर देना चाहिये ।

भगवती भूमिकी वक्तृताको सुनके श्रीमान् सभापति जीने सिंहासनसे उठ कर कहा कि सभ्यवृन्द! आप लोगोंने इस महती सभामें जितने व्याख्यान सुने मेरी सम्मतिमें उन सबका सारांश यही है कि पुराणोंके बनाने वालोंने आप लोगों पर सहस्रों मिथ्या दोष लगाये हैं अतएव आप लोगोंकी सम्मति है कि उन सब पुराणोंको रद्दी खानेमें फेंक दिया जाय, यह भी सिद्ध हो गया है कि भगवान् विष्णु और शिव महाराज भी आप लोगोंसे सहमत हैं यद्यपि ब्रह्मा जी ने अभी तक अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है तो भी वह आप लोगोंसे जरूर इत्तफाक राय होंगे क्योंकि उनको भी पुराणों वालोंने पुत्री गमनका महाकलङ्क लगाया है इसके सिवाय भागवतके कर्त्ताने उनको अज्ञानी और चोर भी लिखा है सुतराम् उनकी राय आप लोगों से मिलती है मगर अभी तक बहुतसे देवता और देवियोंने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है और उन की राय इस बारेमें निहायत जरूरी है, आप लोग यह भी ख्याल कर लीजिये कि अब बहुत ही अतिकाल हो गया है यदि अब किसी देवताका व्याख्यान होगा तो सन्ध्योपासनका समय भी व्यतीत हो जायगा इस कारण मेरी सम्मतिमें आज सभाका विसर्जन करना उत्तम जान पड़ता है और फिर दूसरे दिन सभा करके इस विषय पर विचार किया जाय।

सभापतिकी सम्मतिको सुनके स्वामी शङ्कराचार्य्य ने तथा राजाराम मोहनराय आदि अद्वैतवादी धर्म्माचार्योंने नाक भौंह सिकोड़के कहा कि सन्ध्योपासनके वास्ते सभाके कार्यको रोकना उचित नहीं है क्योंकि जिन लोगोंको आत्माका साक्षात्कार हुआ है उन परिपक्व ज्ञान वाले देवतोंको बहिरङ्ग साधन स्वरूप उपासनाकी आवश्यकता नहीं है इनके प्रस्तावको यूरोप के अनेक लोगोंके साथ श्रीमती मैडमलेवेट्सकी ने अनुमोदन किया परन्तु श्रीरामानुजाचार्य्य तथा परमपदारूढ़ महर्षि स्वामीदयानन्द सरस्वती जी महाराजके शिष्यने इस प्रस्तावका बड़े बलसे विरोध कि

साहिबने यूरोपीय लोगोंको अपनी ते

काया कि इस्तग़फ़ुरुल्ला आप लोग कैसे ब

ख़ुदाकी इबादतमें ख़लल डालना चाहते हे,, मुहम्मद साहिबकी धमकीको सुनके मौलानारूम खड़े होके कहने लगे कि हम लोग आज़ाद हैं किसीके बन्दे नहीं हैं हमारा तो यही क़ौल है कि "नुक्तेके हेर फेरमें हमसे जुदा हुआ। नुक्ता जो फेर दे दिया आप ही खुदा हुआ" इन सबकी बहसको सुनके बाबू केशवचन्द्रसेन बड़े जोश के साथ उठे और यों कहने लगे कि महाशयगोन ' आपनारा एई हुड़ा हुड़ी आर मारामारी केनो कोर्छेन, उभय दोलेर अभी मीमान्सा कोरे दीच्ची आपनारा गाड बोलुन खोदा बोलुन वा इश्शोरई बोलुन किन्तु याकटी उपास्य अवश्शई मानिते एबे और उपासनारकोनोई

समय निर्द्धारित होतेपारे ना सुतराम् विषये कोलह-कोरा अनावश्यक।

इन सबकी बातोंको सुनके सभापति मुस्कराके बोले कि देववृन्द! सभाको विसर्जित करनेमें धर्म्मा-चार्य्योंकी अनेक सम्मति जान पड़ती हैं इस कारण इस विषयमें समस्त सभासदोंकी सम्मतिका लेना आ-वश्यक है अतएव मैं सबकी सम्मतिको जानने की इच्छासे सब से कहता हूं कि जो लोग इस समय सभा का विसर्ज्जन चाहते हैं वह अपने हाथ उठावें सभा-पतिकी वाणीको सुनके इतने देवताओं ने हाथ उठाये कि न हाथ उठानेवालोंकी संख्या अत्यन्त स्वल्प रह गई इस कारण सभाका विसर्जन हो गया।

पाठकवृन्दको निराश न होना चाहिये क्योंकि शेष वृत्तान्त यथावकाश हमारे संवाददाता फिर भेजने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं और हम भी डिवायन मेल सर्विस की प्रतीक्षामें अपनी लेखनीको थोड़े दिनके वास्ते विश्राम देते हैं॥

स्वर्ग में महासभाका प्रथम प्रोसीडिङ्ग (अधिवेशन)

॥ समाप्त ॥

ओ३म् शान्तिः ३

ओ३म्

आर्यसमाजके नियम ।

१–सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्यासे जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ॥

२–ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसीकी उपासना करनी योग्य है ॥

३–वेद सत्यविद्याओंका पुस्तक है, वेदका पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्योंका परम धर्म है ॥

४–सत्यके ग्रहण करने और असत्यके छोड़नेमें सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ॥

५–सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये ॥

६–संसारका उपकार करना इस समाजका मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ॥

७–सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ॥

८–अविद्याका नाश और विद्याकी वृद्धि करनी चाहिये॥

९–प्रत्येकको अपनी ही उन्नतिसे सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नतिमें अपनी उन्नति समझनी चाहिये ॥

१०–सब मनुष्योंको सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालनेमें परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियममें सब स्वतन्त्र रहें ॥

लीजिये ! लीजिये !! विलम्ब न कीजिये !!!

☞ इससे बढ़कर और क्या सस्ता होगा ?

धर्मार्थ बांटने योग्य सस्ते पुस्तक ॥

निम्नस्थ लघुपुस्तक (ट्रैक्ट) मेले, बाजार उत्सव, सभा समाज प्रचारादि शुभावसरों पर धर्मार्थ बांटनेको बड़े ही सस्ते तैयार हैं जो सैकड़ेके भाव दिये जाते हैं ।

☞ २५ से कम पूर्ण दाम पर मिलेंगे—हजार दो हजार पुस्तक इकट्ठे लेने पर और भी सस्ते मिलेंगे ! ! !

सजीवनबूटी =)॥ सैकड़ा १०) पञ्चयज्ञविधिः—सन्ध्योपासन)। सैकड़ा १) और ८) हजार धर्मप्रचार—शुद्धिविषय (पं० लेखराम कृत))॥ सैकड़ा १॥) शिवलिङ्गपूजा)॥ सैकड़ा १॥) मांसभक्षणनिषेध)। सैकड़ा ॥) ससुराललीला (ससुराल वासके दोष))। और ॥।) आने सैकड़ा जैनमत दर्शन (पं० रामदयालुझा कृत) -) और ४) सै० पुराण शिक्षा)। सैकड़ा ॥=) मृतक श्राद्धविषयक प्रश्न)। सैकड़ा ॥=) गाजीमियांकी पूजा हिन्दुओं को क्या सूझा, कबर पूजा का खण्डन)॥ सैकड़ा १॥) पुराण किसने बनाये पं० लेखराम कृत)। सैकड़ा ॥।) आरती (ईश्वर स्तुति) नित्य गाने योग्य ॥।) सै० आर्यसमाजके नियम ॥=) आ० हजार मद्यदर्पण भजन [श्री कलाकटानन्द, महन्त केशव देवादि कृत] -) सै० २॥) वेश्यालीला)॥ सैकड़ा १।) स्त्री भजनमाला ज्ञान गजरा)॥ सैकड़ा २।) आर्यसमाजके नियम संस्कृतभाषा)। सैकड़ा ॥।) ईसाईमतपरीक्षा)। और १) सै० आर्यसमाजके प्रवेशपत्र ।) सै० आतिशबाजी खण्डन)। सै०

।॥) भजनमाला)। और ।॥) सैकड़ा जैननास्तिकत्व)॥ ध्यानकी रीति पं० रुद्रदत्त कृत)॥ सैकड़ा २) मूर्त्ति पूजाविचार)। सैकड़ा ।॥) गंगाकी नींद)। और ।॥) सै॰ कुरीतिनिवारण -)॥ सैकड़ा ४) धर्मबलिदान प्रथिक वियोग पं० लेखरामशर्माका मृत्यु वृत्तान्त =) सैकड़ा ३)

* पांचपैरकी गौ *

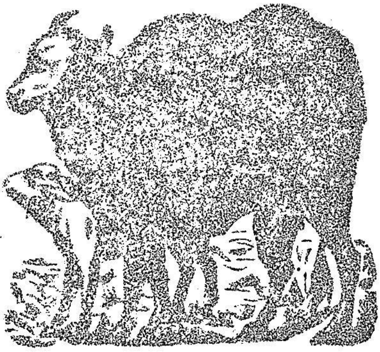

महादेवका नादिया ।

नादिया कैसे बनता है, यदि यह गुप्त भेद (रहस्य और गोकष्ट जानना तथा)। में कोटि २ गौओं का पुण्य लूटना चाहते हो तो यह पुस्तक पढ़िये औरों को पढ़ाइये मूल्य)॥ धर्मार्थ बांटनेवालों को १) रुपया सैकड़ा और ८) रुपया हजार ।

मिलनेका पताः—

☛ बाबूराम शर्म्मा

आर्य पुस्तकालय—इटावा ।

॥ ओ३म् ॥

॥ स्वर्ग में महासभा ॥

एक कालचक्र के पहिये को घुमाते हुए सूर्य नारायण ज्यों ही उत्तरायण हुए त्यों ही देवलोक में घोर घबराहट मच गई। इस घबराहट के कारणों को लिखा जाय तो एक करोड़ श्लोकों का महा महा महाभारत बनजाय तौभी पाठकों के सन्तोषार्थ संक्षेप से दो चार कारणों का वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक जान पड़ता है।

इस घबराहट का खास कारण तो यह था कि मिस्टर टक्कर ने फक्कर बन के जब से मुक्ति सेना बनाई और वारक्राई (War cry) समाचारपत्र निकाला तबसे देवता लोगों को हर समय यही सन्देह और भय बना रहता है कि न मालूम किस समय टक्करासुरके सैनिक स्वर्ग में सीढ़ी लगा के चढ़ आवें और हमलोगों को मार के स्वर्ग से निकाल दें। गत २४ दिसम्बर १८८६ को फ्री मैशन के देवता ने स्वर्ग में जाके देवतों से प्रार्थना की कि महाराज मुझे क्रष्टानों ने मार के भगा दिया, मर्त्यलोक से मेरी उपासना को ईसाई उठाना चाहते हैं आप सब कौमपरवर हैं लिहाज़ा मेरी रक्षा करना आपलो[illegible] फर्ज है, फ्री मैशन चर्च के देवता की प्रार्थना को सुन के दे[illegible] इन्द्र को ध्यान आया कि सब्जेक्ट कमेटी में जो पब्लिक [illegible] वा महासभा करने का प्रस्ताव हुआ था उसको अब करना चाहिये। देवराज इन्द्र इस विचार में बैठे ही थे कि इतने में असंख्य पितरों ने आके देवदर्बार को घेर लिया और चिल्ला के दुहाई देने लगे, इनकी चिल्लाहट को सुनके महाराज इन्द्र भी घबराये और अपने द्वारपाल से बोले कि इन सब को खामोश करके दर्बार में हाजिर करो हुक्म पाते ही द्वारपाल सबको बुला लाया।

उन सब ने हाथ जोड़ के विनय करी कि, हमलोग बड़े कष्ट में हैं। हम में से अधिक लोग अवध की ... के रहने वाले हैं हमलोगों ने जितने सुकर्म्म किये थे उनमें से किसी का भी हमको फल नहीं मिला और न हमारे पुत्र हमारा श्राद्ध हीं करते हैं जो हमको यहां खाने को मिले लिहाजा हम सब भूखे मरे जाते हैं अगर हमको पहिले से यह अन्धेर मालूम होता तो हम कभी सुकर्म्म न करते।

इन लोगों की बात को आर्य्यावर्त्तीय पितरों ने भी ताईद की और कहा कि बेशक यह लोग सत्य कहते हैं अगर हमलोग जानते कि सुकर्म्म और कुकर्म्म करने वालों को स्वर्ग में एक ही स्थान मिलता है तो हमलोग क्यों सुकर्म्म करते, देखिये जिस महिषासुर ने बड़े बड़े महर्षियों को सताया आप सब लोगों को युद्ध में छताया वही आज मुक्त पदवी पाके आनन्द भोग रहा है इसके अतिरिक्त रावण और बाणादि अनेक महा अन्यायी राक्षस भी मुक्त हो चैन उड़ा रहे हैं तब अन्य लोगों का सुकर्म्म करना झख मारना नहीं तो क्या है ? महाराज ! आप इस लबड़ धोंधों को मिटाइये नहीं तो जगत् में अन्धेर हो जायगा।

इन लोगों की अर्ज पूरी नहीं हुई थी कि इतने में देवतों के दल ने आके इन्द्र महाराज से प्रार्थना की कि हे देव राज ! काल हमलोग भूखे मर रहे हैं कहीं पर यज्ञ नहीं होता जो हमको भाग मिले, यज्ञ के बिना उत्तम धुआं नहीं होता, धुआं हो नहीं तो बादर काहे के बनें, बस बादरों के अभाव से वर्षा का अभाव हो रहा है, अवर्षण से संसार को यह दशा है कि शाकम्भरीदेवी (मार्कण्डेय पुराण में लिखा है कि शाकम्भरी देवी ने १२ वर्ष तक देवतों को शाक खिला के जिलाया था) की तकारी भी सूख गई, जो हमारे भक्त पहिले बर्फी और पेड़ों का भोग लगाया करते थे अब उनको बाजरे की रोटी भी नहीं मिलती है।

इन लोगों की ताईद करते हुए काशीपति विश्वनाथ बोल उठे, महाराज! बेशक आजकल देवतों को बड़ा कष्ट है मेरी ही दशा देखिये न! मैं जो एक बार भङ्ग की तरङ्ग में यवन के डर से ज्ञान वापीकुए में जा गिरा था तो काशी के पंडो ने मेरी एवज़ में एक क़ायम मुक़ाम (Officiating) विश्वनाथ बना लिया मगर आश्चर्य यह है कि अब तक भी कोई मेरा भक्त मुझे कुए से नहीं निकालता है, हालां कि मेरा मग़ज़ चावल और सड़े पानी की बदबू से सड़ा जाता है और मैं कुए में पड़ा महाकष्ट भोग रहा हूँ और मेरा क़ायम मुक़ाम मुस्तक़िल (Permanent) विश्वनाथ बन के गुल-छर्रे उड़ा रहा है, हे देवराज! यदि आप हमलोगों के कष्ट को दूर न करेंगे तो हम सब मिल के बलि को देवराज बनालेंगे।

इन सबकी बातों को सुनके देवराज इन्द्र ने मुस्करा के कहा हां भाई अब तो तुम्हारी नज़र बढ़ गई है अब आपलोग अमेरिका की ओर क्यों न देखेंगे! मगर याद रखिये कि अबवहां बलिका बल नहीं है अबतो पाताल में रिपबलिकन गवर्नमेण्ट (प्रजातंत्र) हो गई है अगर स्वर्ग में भी वही साम्यवाद आपलोग चलावेंगे तो हम भी मर्त्य लोक के मनुष्यों को महा कांग्रेस करा के आपलोगों की शक्ति को नेस्त नाबूद कर देंगे। स्मरण रखिये कि जैसी उन्नति हम आप लोगोंको करसक्ते हैं वैसी उन्नति विदेशीय राजाबलि नहीं करसक्ता है मैं अभी सब संसार के देवतों की महा सभा करके आपलोगों के दुःख दूर करने के उपायों को बड़े यत्न से करूंगा।

इतना कह के महाराज इन्द्र ने समस्त दिग्पाल और सूर्य्य चन्द्रमा आदि प्रधान प्रधान देवतों को सम्मति करने के वास्ते बुलाया वह लोग पलक मारते देवराज की अमरावतीपुरी में आ विराजे।

प्रथम सबकी सम्मति से एक मनेजिङ्ग कमीटी क़ायम की गई चूँकि इस कमीटी का खास काम नोटिस देना व सभा के वास्ते

स्नानादि का प्रबन्ध करना था इस कारण श्री सूर्य्य नारायण इसके सभापति चन्द्रमा उपसभापति और अग्निदेव सेक्रेटरी नियत किये गये, प्रथम मनेजिङ्ग कमीटी के मेम्बरों की राय हुई कि श्री विघ्न विनायक लम्बोदर से विज्ञापन लिखा के वितीर्ण किये जायं परन्तु श्रीशुक्राचार्य्यने कहा कि अब वह जमाना नहीं है जब हाथसे लिख लिख कर दिशावरों को चिट्ठी भेजी जाती थीं, अबतो इलेक्ट्रिक रोशनी का जमाना है इसलिये किसी प्रेसमें दो चार अरब नोटिस छपाके बांट देने चाहियें, आजकल फीमेल एजूकेशन (स्त्री शिक्षा) तरक्की पर है लिहाजा सरस्वती देवी पल मात्र में नोटिस कम्पोज कर के छपा सक्ती हैं। इन सबकी बातों को सुनके भुवन भास्कर भगवान् बोले कि नोटिस बांटने वा छपाने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि इण्टेलीजेन्स डिपार्टमेण्ट (समाचार विभाग) ने इतनी उन्नति करली है कि पलक मारते सारे संसार में सभा के समाचार पहुंच जायंगे, मैं हेलीग्राफ (सूर्य्य की किरणों के द्वारा जो समाचार भेजे जाते हैं) के द्वारा मेरे मित्र शीतरश्मि (चन्द्रमा) नाइट सिगनेलके द्वारा और अग्निदेवजी महाराज तड़िद्‌ग्राम (तार) के द्वारा पलक मारते सर्वत्र समाचार पहुंचा देंगे आपलोग विज्ञापन बांटने की चिन्ता को छोड़ के दूसरे प्रबन्ध कीजिये। मनेजिङ्ग कमीटी की सम्मति से अमरावती के टौन हाल में वसन्त पंचमी को सभा का होना स्थिर हुआ, सभा में अधिक भीड़ होने की सम्भावना थी इस कारण इन्सपेक्टर जनरल आफ़ डिवाइन् हास्पिटेल्स (सिविल ऐण्ड मिलिटरी) (अश्विनी कुमारों को) बुला के आज्ञा दी गई कि आप अपनी डिसपेन्सरी के सहित सभा मण्डप के दाहिनी ओर हर समय हाजिर रहिये क्योंकि आजकल बोबोनिकप्लेग (महामारी) का अधिक भय है, इसके अतिरिक्त डिवाइनमेलसर्विस के सुपरिण्टेण्डेण्ट वायु देव को आज्ञा मिली कि तुम हर समय यहां हाजिर रहो और जिस सभासद का कहीं से कोई पत्र आवे फौरन उसे उसके पास पहुंचा दो।

इन प्रबन्धों को करने के पश्चात् मनेजिङ्ग कमीटी ने विदेशी देवतों के वास्ते टौन हाल की छाती में एक होटल तयार कराया और योरोपियन देवतों के वास्ते भोजन पकाने के निमित्त मातंगिनी देवी को उच्छिष्ट चाण्डालनी के सहित सम्पूर्ण सामग्री देके नियत कर दिया, बंगदेशीय देवतों के वास्ते मत्स्य प्रिया बगला मुखी नियुक्त की गई, यवनदेशी और अफ्रीका के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को कज्जलगिरिनिभा काली जी नियत की गई, ऐसे ही चीन, जापान और मलाया आदि द्वीपों के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को वागेश्वरी और तारा देवी को (यह दोनों देवी बौद्ध सम्प्रदाय में मानी जाती हैं) आदेश मिला, मनेजिङ्ग कमीटी ने इस प्रकार से सब के खान पान का प्रबन्ध कर के, टौन हाल के द्वार पर (Welcome to Holy Gods) सुन्दर अक्षरों में लिख के लगवा दिया और द्वार पालों को आज्ञा दे दी कि जो कोई सभा में विघ्न डालने के अभिप्राय से कुछ लाक करै उसको जहन्नुमरसीद करो और जो सीधे स्वभाव से सभा में आना चाहे उसे हर्गिज मत रोको।

प्रबन्ध करते ही करते बसन्तपञ्चमी का दिन आगया उस रोज़ प्रातःकाल ही से सभा मण्डप में देवतों का आना आरम्भ हुआ सब लोग अपने २ ब्लाक में जा बैठे, ए० ब्लाक में ओरिजिनेल (असली) देवतों के वास्ते कुर्सीयों की कतार लगी हुई थी, और इस ही के बीच में सभापति के वास्ते एक रत्न जटित सिंहासन बिछा हुआ था, इसकी दाहिनी ओर बी० ब्लाक था इसमें महर्षि मण्डल तथा वेदों के मानने वाले मुक्त जीवों के वास्ते कुर्सियां बिछी हुई थीं, बांई ओर सी० ब्लाक में यूरोप तथा अरब आदि देशों के देवता तथा पैग़म्बर लोग विद्यमान थे और डी० ब्लाक में मोडर्न (नये जमाने के) ऋषि तथा धर्म्माचार्य्य लोग बिराजमान थे।

देवियों को आसन देने के समय प्रबन्ध कर्त्ताओं में वैमनस्य हो

गया क्योंकि डा॰ एक्क की सम्मति थी कि देवियों को देवतों के बीचमें आसन न मिलना चाहिये क्योंकि सनातन धर्म्म वाले स्त्रियोंको सभा में बिठलाना पाप समझते हैं। दूसरे कहते थे कि जिस दुर्गा देवी ने महिषासुर को और शुम्भ निशुम्भ आदि दैत्यों को युद्ध में मारा वह अब किससे पड़दा करेगी खैर अन्त में यह स्थिर हुआ कि ए॰ ह्यूम के पास ही एक फीमेल क्वार्टर बनाया जाय और सब देवी उस ही में बैठ के सभा को देखें और आवश्यकतानुसार सम्मति भी दें।

इसके अनन्तर प्रबन्ध कर्त्ताओं ने जो डी॰ ब्लाक की ओर देखा तो वहां पूरी अशांति पाई कुछ लोग आगे बैठने के वास्ते आपस में झगड़ा कर रहे थे इस कोलाहल को सुनके मनेजिङ्ग कमीटी के सभापति ने सब को यथा स्थान बिठला के शान्ति की जब सब लोग यथा स्थान बैठ गये और सभा में शान्ति स्थापित हो गई, तब रिसेप्शन कमीटी वा अभ्यर्थना सभा के सभापति कुमार जयन्त ने इस प्रकार से अपना व्याख्यान आरम्भ किया।

व्याख्यान।

देव, देवी, ऋषि, मुनि और धर्म्माचार्य्यवृन्द!

मैं आप लोगों को धन्यवाद देने योग्य नहींहूँ क्योंकि कलियुगी रामायण में मुझे कव्वा लिख दिया है, भला सोचिये तो सही कि मैं अपने देव स्वरूपको त्याग कर कव्वा क्यों बनता? प्रथम तो योगी के बिना किसी को यह शक्ति ही ईश्वर ने नहीं दी कि अपने शरीर का बिना मृत्यु के छोड़के दूसरा शरीर धारण करे, यदि मुझे योगी ही माना जाय तो क्या योगी इतना भी नहीं समझ सक्ता कि श्री-रामचन्द्रजी की धर्म्मपत्नी सती साध्वी पतिव्रता सीताजी परपुरुष से प्रीति नहीं कर सक्ती हैं मैं आंख मारने क्यों जाऊं, फिर उस ही रामायण में यह भी लिखा है कि महाराज रामचन्द्रजी ने मेरी एक आंख फोड़ डाली-परन्तु देखिये मेरे दोनों नेत्र कमल से खिले हुये हैं, यदि कहिये कि कव्वे रूप की आंख फोड़दी थी और इस ही

प्रारब्ध अब तक भी सब काव्वे काणे होते हैं तो यह महा अन्याय है कि अपराध करूं मैं आंख फोड़ी जाय कव्वों की, इसके अतिरिक्त श्रीरामचन्द्रजी के और मेरे जन्म से भी पूर्व्व काकभुशुण्ड का होना पुराणों में लिखा है परन्तु उसके भी दो नेत्र नहीं लिखे अस्तु—मैं अपनी अधिक सफाई देना नहीं चाहता हूं क्योंकि मर्त्य लोक के मनुष्यों ने कुछ मुझि ही दोष नहीं लगाया है वरन भगवान् विष्णु को भी दोषों का भण्डार बना दिया है, देवतों की दुर्दशा को दूर करने के वास्ते जो आप लोग लाखों कोस से यहां आये और अम-रावती के टौन हाल को सुशोभित किया इस कारण मैं आप लोगों को करोड़ों धन्यवाद देता हूं।

देववृन्द! पुराणों को मानने वालों ने स्वर्ग को थियेटर हमलोगों को नगाड़ची और देवङ्गनाओं को नटनी समझ रखा है क्योंकि अपने देश के छोटे २ आनन्दोत्सव में लिख दिया है कि "देवादुन्दु-भयो नेदुर्ननृतुश्चाप्सरोगणाः (अथवा) अवादयन्तः पटहान् पुष्पवृष्टि मुचोदिवि" इनके अलावा दीन इसलामियां वालों के खयाल से तो भिश्त भी हूरों का बाज़ार है इन सब लबड़धों २ को दूर करने के वास्ते जो आप लोग आज इस टौनहाल में इकट्ठे हुये हैं इस परि-श्रम के वास्ते मैं आप लोगों को रिसेपशन कमीटीकी ओर से धन्य-वाद देता हूँ।

इस स्पीच के समाप्त होते ही महाराज कुवेर ने प्रस्ताव किया कि आज की जनरल कमीटी में भगवान् विष्णु सभापति बनाये जायं यद्यपि इसका अनुमोदन अनेक लोगों ने किया परन्तु विष्णु भगवान् ने यह कहके इसे अनङ्गीकार किया कि हम तो आज कल किसी काम के ही नहीं रहे हैं, जब से शङ्कराचार्य्य ने वेदों की जड़ काटने को सेल्फ गवर्नमेण्ट चलाया, तब से छोटे २ बालक भी खुद-खुदा बन गये, सृष्टि करने और वेद बनाने के समय हम एक ही

स्वतन्त्रये पर सृष्टिका और वेदोंका नाश करने को करोड़ों ब्रह्म बन गये हैं, अब तो हम केवल स्त्रियों की कसम खाने को ही रहगये हैं और देखिये जो हमारे भक्त बनने का दम भरते हैं वही हम को गाली देते हैं, "महावराहो गोविन्दः" (विष्णु सहस्रनाम) अर्थात् विष्णु बड़ा सुअर है कहिये किसे गरज है जो आपका सभापति बन के गाली खाय !

विष्णु भगवान् की बात को सुनके भोलानाथ शङ्करजी हंसते २ खड़े हुये और मुस्कुराके कहने लगे कि गाली से क्यों घबड़ाते हो ? १६१०८ पटरानी और मनोहारणी व्रज बनिताओं का रसास्वादन भी तो आप को ही कराया गया है, क्या कडुये २ थू और मीठे मीठे गप की कहावत को चरितार्थ करना चाहते हो ? रास करते वक्त तो छ महीने की रात करदी और कुछ भी न शर्माये पर अब जरा देरको सभापति बनते आपकी नानी मरती है, क्या गोपियों का यह गीत अच्छा लगता था कि—

फणिफणार्पितन्ते पदाम्बुजम् ।
कृणुकुचेषुन शाधिहृच्छयम् ॥

और प्रेमातुर भक्तों के मुख से महावराह शब्द को सुन के कान कटे पड़ते हैं । कैलासवासी शम्भु की बात को सुनके सरस्वती के पिता श्री ब्रह्मा जी खड़े हो के बोले, चूंकि विष्णु के दोषों पर इस सभा में विचार किया जायगा लिहाजा विष्णु को सभापति बनाना मुनासिब नहीं है मेरी राय नाकिस में आज की सभा में भी देवराज इन्द्र ही सभापति के आसन को ग्रहण करें ।

अनेक वादानुवाद तथा अनुमोदन प्रमोदन होने के पश्चात् देवराज इन्द्र ने सभापति का आसन ग्रहण किया, जिस समय इन्द्र व्याख्यान देने को खड़े हुए उस समय चियर्स और करतालि की ध्वनि से टौनहाल गूंज उठा ।

सभापति का व्याख्यान।

देववृन्द! आपलोगों ने जो मुझे इस महती देवसभा का प्रधान बनाया यह आपलोगों ने मेरे आफिशियल रैंक का मान्य बढ़ा के अपनी नियमवर्त्तिता का अपूर्व परिचय दिया है, इस महती सभा के महाधिवेशन का उद्देश्य यह है कि मर्त्यलोक के निवासियों ने जो देवता लोगों पर सहस्रों दोष लगाये हैं और धोखा घड़ी लगा रखी है इससे हम लोगों का ही अपमान नहीं होता है वरन परम कृपालु परमेश्वर का भी पूरा अपमान होताहै, मेरे तो पूरे परिवार कोही पुराण बनाने वालों ने चोर और व्यभिचारी लिख दिया है। नृसिंहपुराण के २८ अध्याय में मेरे पुत्र जयन्तकुमार को लिखा है कि राजा शन्तनु ने एक वृन्दावन बसा के जो अत्यन्त मनोहर बाग बनाया था उसके फूलों को मेरा पुत्र चुरा लाता था, एक दिन माली ने मेरे पुत्रको फूल चुराते देखा और नृसिंह की स्वप्न प्राप्त आज्ञा से दीवारों पर नृसिंह का निर्म्माल्य छिड़क दिया उसके लांघने से जयन्तकुमार ऐसा शक्तिहीन होगया कि वह रथ पर न चढ़ सका तब सारथी के उपदेश से वृन्दावन में १२ वर्ष रहा और ब्राह्मणों का उच्छिष्ट बटोरता रहा तब उसके शरीर में शक्ति आई। भला इस कथाके बनाने वाले से कोई पूछे कि जब यवनों ने भारत पर आक्रमण किया और देवमन्दिरों को तोड़ा नृसिंह की भी मूर्त्तियों को तोड़ के फेंकदिया तब क्या नृसिंह का निर्म्माल्य न रहा था? जो भारत की सीमापर छिड़क देते और उसको लांघने से सब यवन शक्तिहीन होजाते, इसके अतिरिक्त उसही नृसिंह-पुराण की ४३ अध्याय में मुझे व्यभिचारी लिखा है, जब हिरण्य-कशिपु तपश्चर्य्या करने गया था (तब इन्द्र उसकी गर्भवती स्त्री को उठा के लेगया और उससे व्यभिचार करना चाहा तब नारद ने इन्द्र को समझाया और कहा कि यह गर्भवती है इसके उदर में परम भागवत है) क्या मैं ऐसा अज्ञानी था कि इतना भी न

समझता कि यह गर्भवती है, खैर! यह तो कुछ बड़ी निन्दाही नहीं है मुझ से बढ़ के विष्णु को लूलू बनाया है, एक जगह तो लिखा है कि सब देवतों के कहने से भृगु ऋषि ने विष्णु के वक्षस्थल में लातमारी परन्तु विष्णु भगवान् को ऐसी शान्ति बढ़ी कि भृगुके पदको दबाने लगे और कहने लगे कि आपके कमल सम कोमल पदों में मेरे कठोर वक्षस्थल की बड़ी चोटलगी होगी, दूसरी जगह (भविष्यपुराण ५६ अध्याय) लिखा है कि विष्णु महाराज ने भृगु की स्त्री का चक्र से सिर काट डाला, कहिये तो उस समय वह शान्ति विष्णुकी कहां को उड़गई थी जो अवध्य ब्राह्मणीको भी मार डाला और इसही का यहफल मिला कि अब विष्णुको बर बर अवतार लेना पड़ता है मैं सत्य कहताहूं कि जब से ऐसी ऐसी फाल्सरिपोर्ट मेरे आफिस में आने लगी तब से मेरा दफ़्र भी मन्दा होगया, मैं सत्य कहता हूं कि मुझे अब इन रिपोर्टों पर तनिक भी विश्वास नहीं रहा है, जो दान धर्म्म दानपात्र के उपकारार्थ था वह अब दिल्लगी मात्र रहगया है, गोदान केवल इस वास्ते था कि वेदाभ्यासी ब्रह्मचारी के निश्शक्त शरीर में शक्तिका संचार हो परन्तु स्वार्थान्ध लोगों ने सुवर्ण धेनु होरे के दांत लगा के (भविष्य पु० उत्तरार्द्ध १३७ अध्याय भवि० उ० १३८ अध्याय भवि० उ० १६० अध्याय) दान करना लिखा है! फिर उससे भी बढ़ धेनु के दानका माहात्म्य लिखा है यदि वास्तव में सुवर्णधेनु गौही समझा जाता है तो उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग को बेचकर खाना क्या महापाप नहीं है? और आश्चर्य सुनिये सुवरका भी दानकरना लिखा है अर्थात् तिलका सुवर बना के दान करें इस दान का ऐसा माहात्म्य लिखा है कि इस दान का करनेवाला अपने पुत्र कलत्र और मित्रों सहित स्वर्ग को चला जाय सोचिये तो सही कि जो मनुष्य असली सुवर का दान करे वह तो स्वर्ग से भी १० हाथ ऊंचा चला जाय।

तीर्थों के महात्म्यों का जहां वर्णन किया है वहां तो हास्यरस का अन्तही कर दिया है, मैंने स्वयम् अपने नेत्रों से देखा है कि प्रयागराज के महात्म्य में लिखा है कि जो मनुष्य ऊपर को पैर और नीचे को सिर करके गंगा और यमुना के संगम में आचमन करे तो १००००० वर्ष तक स्वर्ग में सुख भोगे (देखो कूर्मपुराण) महाशय वृन्द! मैं कहां तक कहूं इन फाल्स रिपोर्टों में देवतों को ऐसी बुराई लिखी है कि जिसको सुनते भी हंसी आती है गणेश को लम्बोदर और हाथी के सिर युक्त लिख के फिर चुहे की सवारी लिखदी है भला कहिये तो हाथीकी सवारी चुहो क्योंकर होसकी है?

प्रियदेववृन्द! आजकल जो भारतवासीयोंपर स्वार्थी जनों ने टैक्स लगा रखे हैं उनके विषय में मैं केवल एक दृष्टान्त देके अपने व्याख्यान को समाप्त करूंगा॥

दृष्टान्त यह है कि एक उजबक नगर नामक शहर में एक गवर गण्डसिंह नामक राजा राज्य करता था, वह राजा अपने नाम के अनुसार ऐसा मूर्ख और आलसी था कि उसके अमले और प्यादे मन माने कार्य्य करते थे परन्तु वह इतना भी नहीं जानता था कि मेरे राज्य में कितने ग्राम हैं और उनका शासन कौन करता है, एकदिन उसकी राजधानी में किसी और राज्य का एक मनुष्य घीव वेचने को आया परन्तु बाजार तक जाते जाते उसका सब घीव कर अर्थात् ड्युटी (महसूल) में ही उड़गया, कहीं राजा को कर, कहीं युवराज का कर, कहीं राणी का कर कहीं राजमाता का कर, कहीं राजभ्राता का कर, कहीं मंत्री और कहीं उपमंत्री आदि का कर लेते जब उस व्यापारी के कपड़े तक भी सिपाहियों ने छीनलिये तब वह रोता हुआ राजाके पासगया परन्तु राजाने उसको धक्के देके निकलवा दिया, तबउसनेसमझाकि इसराज्यमेंअन्धेर है अतएव मैं भी अपना कार्य्य सिद्ध करसक्ता हूं बस वह भी स्मशान

के पास जा बैठा और जो मुर्दा उधर आवे उसकीही साथियों से कहै कि हमारा १।) रु० राज करके नाम से पहिले दे दो तब प्रेत की क्रिया करो, जब उस्से कोई पूछे कि तुम कौन हो तब ही वह कहदे कि हम राणी के शाले हैं, अनेक वर्षों तक वह इस ही रीति से कर लेता रहा, कुछ काल के अनन्तर गवरगण्डसिंह राजा की माता भी मरी और स्वयम् राजा साहिब स्मशान में गये और राणी के साले का नाम सुनके बहुत चकितहुए, जब १।) रु० उसका कर देके आगे बढ़े तब अवसर पाके राणी साहिबाने राजासे पूछा कि आपने किस को करदिया आपतो स्वयम्राजाहैं राजाने कहाकि यहराणीके साले का साले का कर दिया जाता है, राणी ने हंस के कहा कि स्त्रियों के साले नहीं होते हैं आप समझ के बात कीजिये, राजा ने क्रोधके साथ उत्तर दिया कि इस बात को हम भी जानते हैं कि स्त्रियों के साले नहीं होते परन्तु सनातन धर्म्म की रीति को मेटना भी तो पाप है। देववृन्द ! आजकल दान की भी यही दुर्दशा जगत् में हो रहीहै, कोई मृत्युञ्जय के जप से अमर होना चाहता है, कोई शनै-श्चर और केतुके मुजावर को थोड़ासा लोहा वा तिल उड़द देकेशरीर को अजर और निरोग बनाना चाहताहै कोई दो चाररु०की चान्दी दे के अपने कर्म्म फल को उलङ्घन करके ईश्वर के नियम को भङ्ग करने की चेष्टा कर रहा है, मुक्ति के विषय में भी संसारी जनों की दशा है, जिन लोगों ने रिश्वत लेलेके जन्म भर शराबखोरी सीने जोरी की है वह भी ईसामसीह की शरण में आके मुक्ति मुहबाय रहे हैं ऐसे हो खुदा की मखलूक को खाक में मिला के और मुहम्मद के मोहताज बनके नजात पाने को उत्सुक होरहे हैं परन्तु परमेश्वर पर भी विश्वास नहींहै और न सुकर्म्मों का भरोसा है सुतराम् हम लोगों को अब ऐसा उद्योग करना चाहिये जिस्से जगत् में ईश्वरकी भक्ति बढ़े और मनुष्योंकी श्रद्धा सत्य धर्म्ममें बढ़े यदि अब भी हम लोग आलस्य करेंगे तो जगत् में नास्तिक और

आस्तिकाभासों का ही प्रभाव फैल जायगा, और सत्य धर्म नाम-मात्र को भी कहीं न रहैगा, मैं चाहता हूं कि आज की सभा में सब लोग स्वतन्त्र भाव से अपनी २ राय प्रकाशित करें।

सभापति के अवस्थानानन्तर देवर्षि नारद खड़े होके कहने लगे चूंकि पुराण वालों ने मेरी असीम निन्दा की है लिहाज़ा मैं प्रस्ताव करता हूं कि पुराण (ब्रह्मवैवर्त्तादि) और मेरे नाम को कलङ्कित करनेवाले नारद पंचरात्रादि पुस्तक रद्दी खाने में फेंकदिये-जायं मैं शपथपूर्व्वक कहताहूं कि मैंने उन पुस्तकों को हर्गिज़ नहीं बनाया भला मुझे क्या जरूरत थी कि मैं षट्कोपी मत का प्रतिपादन और शैवादि मतों का खण्डन करता न मैं रिश्वतखोर हूं कि डोम आदि नीचोंसे कुछ धनलेके किसी आधुनिक पुस्तकपर अपनी मुहर कर देता, देवी भागवत के बनाने वाले ने जो अकारण मुझ पर दोष लगायेहैं वह अवश्य ही आप लोगों ने सुने होंगे (दे० भा० स्कन्ध ६ अ० २८, २९ व ३०) देखिये तो मुझे विष्णु ने कैसा धोखा दिया कि मेरे कपड़े लत्ते और बीन आदि लेके भाग गये और मैं तलाव में स्नान करताही रह गया जब मैं तालाब में से निकला तब स्त्री होगया फिर राजा तालध्वज से मेरा बिवाह हुआ देखिये तो क्या लालबुझक्कड़ी कथा है ? देवी भागवत वाले को मेरी इतनी ही निन्दा करने से सन्तोष नहीं हुआ बल्कि और भी अपूर्व्व कथा लिख डाली, उसमें तो मुझे बन्दरही बना दियाहै, उसमें भी राजा (की कन्या से मेरी बिवाह करा दिया है सोचिये तो सही कि मैं र्षि होके मानुषी से बिवाह क्यों करता।

देव वृन्द ! आप लोगों ने यह न सुना होगा कि हमारे सभापति देवराज भी एक बार बैल बने थे (दे० भा० स्क० ७ अ० ६) राजा ककुत्स्थ जब देवतों की प्रार्थना को सुन के दैत्यों से लड़ने को चले तब उन्हों ने कहा कि यदि इन्द्र हमारे वाहन बने तो हम दैत्यों से लड़ें, भला कहिये तो यह कितनी गालीहै कि जिन इन्द्र महाराज

को विष्णु आदि सब ही राजा मानते हैं उनको ही वैल लिख दिया और मुझे तो पुराण वालों ने डाक का थैला और लड़ाई कराने का औजार वा चुगलखोर नियत कर दिया है इस कारण मैं प्रस्ताव करता हूँ कि पुराणों को मन्सूख कर दिया जाय।

इस प्रस्ताव को महर्षि पराशर ने अनुमोदन करते समय कहा कि बेशक पुराणों को मन्सूख कर देना चाहिये क्योंकि इन पुराणों में हजारों बातें असम्भव लिखी हैं मेरे परिवार को और मुझे जैसे वाहियात दोष पुराणवालों ने लगाये हैं उनको मैं फिर वर्णन करूंगा किन्तु अब एक ऐसी असम्भव गाथा का वर्णन करता हूँ जिसको सुनके आप सबलोग कई दिन तक हंसते रहैंगे। देवी भागवत सप्तम स्कन्ध ८ अध्याय में लिखा है कि राजा यौवनाश्वके १०० स्त्री थीं परन्तु पुत्र किसी के नहीं था इस से राजा को अत्यन्त चिन्ता रहती थी, इसही चिन्ता से व्याकुल होके राजा यौवनाश्व वन को चले गये और वहां अनेक महर्षियों से कहा कि मेरे सन्तति नहीं है अतएव आपलोग ऐसा यत्न कीजिये जिस से मेरे पुत्र हो, ऋषियों ने सन्तान प्राप्ति के वास्ते यज्ञ आरम्भ किया, ऋषियों ने जो मंत्रों से अभिमंत्रित करके जल से पूर्ण घट स्थापन किया था वह इस अभिप्राय से था कि जो नारी इस जल को पान करे उसको [illegible]य ही पुत्र हो, एक दिन रात्रि में राजा यौवनाश्व को बहुत [illegible]लगी और उन्हो ने उसही यज्ञ कलश के जल को भूल से पी [illegible]ा प्रातः काल जब यज्ञकर्त्ता ब्राह्मणों ने कलश को खाली देखा तो राजा से पूंछा कि वह जल कहां गया तब राजा ने कहा कि वह जल मैंने पी लिया इस बात को सुनके सब ने कहा कि तुम्हारे अवश्य पुत्र होगा उस जल के प्रताप से राजा के गर्भ रहा, जब १० महीने पूरे हुए तब राजा यौवनाश्व के पेट को चीर के बालक निकाला गया, तब राजा के मंत्री ने कहा "कन्धाता" यह बालक किसका दूध पीयेगा तब ही देवराज इन्द्र ने आके कहा कि "मा-

न्धाता" मेरा दूध पियेगा इसही कारण उसका नाम मान्धाता रखा गया, देववृन्द ! कहिये यह कथा क्या इस पहेली को चरितार्थ नहीं करती है कि—

सास कुंवारी बहू पेट से ननद पंजीरी खाय।
देखन वालो लड़का जन्मो बांझिन दूध पिलाय

क्या यह जाफर जटल्ली का क़िस्सा नहीं है भला विचारिये तो कि जिस गर्भाशय को मनुष्योंके पेटमें ईश्वर ने ही नहीं रचा उसको मंत्र के पानी ने क्यों कर बना दिया? यदि अभिमंत्रित पानी में यह शक्ति थी तो राजा के स्तनों में दूध क्यों नहीं उत्पन्न कर दिया वास्तव में इन लाल बुझक्कड़ी कथाओं ने देव भाषा को और वेदों को बड़ा ही बदनाम कर रखा है।

देववृन्द ! इन पुराणों ने मेरे दादा वशिष्ठ से ही हमारे कुल को कलंकित करना आरम्भ किया है लिखा है कि वशिष्ट विश्वामित्र से लड़ने को बगुला बन गये और लिखा है कि उन्हों ने ऐसी ईर्षा करी कि अपने सौ पुत्रों को मरवा के तब विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि कहा फिर मेरा माता के गर्भ में वेद पाठ करना लिखा है क्या यह सम्भव है कि कोई मनुष्य गर्भ में मुख खोल सके? यदि गर्भ में मु खुल जाय तो माता के गर्भ के मल बालक के मुख में भर — ईश्वर ने गर्भस्थ बालक की पुष्टि के वास्ते यही नियम कर है कि बालक का मुख बन्द रहे और नाभी की नाल के द्वारा के भक्षण किये अन्नादि का रस बालक के उदर में जाय, अ एक और अद्भुत बात सुनिये कि मैं परम धर्मज्ञ और वेदज्ञ होके भी अविवाहित मत्स्यगन्धा पर मोहित हो गया (देवी भागवत द्वितीय स्कन्ध द्वितीय अध्याय) और अपनी कामवृत्ति को दिन ही में चरितार्थ करने को मैंने कुहिरा उत्पन्न किया आप सब जानते हैं कि कुहिरे का नाम वेदों में भी लिखा है (नीहारेण प्रावृत्ता उक्थशासश्चरन्ति) इसके अतिरिक्त कुहिरा केवल उस बाष्प का नाम

है जो सूर्य की किरणों के द्वारा पृथिवी से आकाश को जाती है और जब से सूर्य तथा पृथिवी और जल बने हैं तब से ही कुहिरा भी बना है भला मैं उसको क्यों कर बनाता फिर मेरे जन्म से भी पूर्व की अनेक कथाओं में भी कुहिरे का नाम आता है जिस मत्स्यगन्धा से मेरे व्यभिचार की कथा लिखी है अब उसके जन्म का अद्भुत हाल सुनिये, जिसको सुनके आप लोगों की भी बुद्धि चकरा जायगी देवी भागवत के प्रथम स्कन्ध की प्रथम अध्याय में ही यह असम्भव कथा लिखी है कि राजा उपरिचर की गिरिका नाम्नी भार्य्या जिस दिन ऋतुस्नाता थी उस ही दिन उपरिचर के पिता ने उन्हें शिकार खेलने के वास्ते बन को जाने की आज्ञा दी, राजा उपरिचर पिता की आज्ञा को परम धर्म्म समझ के बन को गये परन्तु उनको अपनी ऋतुस्नाता भार्य्या का स्मरण रहा इस कारण बन में उनका वीर्य्यस्खलित हुआ, राजा ने उस वीर्य्य को वटपत्र के दोने में रख के अपने एक बाज से कहा कि इस वीर्य्य को मेरी स्त्री के पास लेजाओ इससे अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा, उपरिचर के बाज ने जब उस वीर्य्य युक्त दोने को लेके आकाश मार्ग से गमन किया तब और बाजों ने समझा कि यह मांस लिये जाता है तब और बाज उस से छीनने को आये इस कारण बाजों में खूब युद्ध ह दोना यमुना जी में गिर गया, उस दोने के वीर्य्य को एक (आद्रिका जो शाप से मछरी हो गई थी) खा गई उसको कुए ने पकड़ के चीरा तो उसके पेट से एक पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुए, मछुआ उन दोनों बालकों को राजा उपरिचर के पास लेगया, राजा उपरिचर ने लड़के को अपने रूप का देख के ले लिया और कन्या को उसही मछुए को दे दिया, वही मछरी के पेट का लड़का राजामत्स्य हुआ और कन्या व्यास की माता सत्यवती हुई, कहिये आपलोगों ने कभी ऐसी लाल बुझक्कड़ी कथा सुनी थी, क्या अश्विनीकुमार और धन्वन्तरि का यह कहना

मिथ्या है कि बालक के अनेक प्रत्यङ्ग माता के रज से बनते हैं, यदि मानभी लिया जाय कि राजा उपरिचरका वीर्य्य अमोघ था तो उस में रज किसका और क्योंकर मिला ? यदि, कहा जाय कि मछरी का रज मिलगया होगा तोभी अयुक्त है क्योंकि जिनके अण्डे उत्पन्न होते हैं उनके गर्भाशय में उस प्रकार का रज नहीं होता जैसे जरायुज स्त्रियों के होता है। इसके अतिरिक्त अण्डज स्त्रियों का गर्भाशय भी भिन्न रीति का होता है वह मनुष्यके वा गधे के वीर्य्य को धारण नहीं करसक्ती हैं, चिकित्सा शास्त्र में जो शरीर की रचना का वर्णन लिखा है उसके देखने से स्पष्ट जान पड़ता है कि मुख के मार्ग से गर्भ में गया वीर्य्य स्त्री के उस स्थान में नहीं पहुंच सक्ता है जहां पहुंचने से गर्भाधान होता है।

खैर हमारी तो दुर्दशा की ही थी परन्तु व्यास की भी वह दुर्दशा की है जिसको सुनके भद्रजन अशान्त होजाते हैं, व्यास को दासी पुत्र लिखके फिर लिखा है कि उन्होंने १०० वर्ष शिव की आराधना करके पुत्र होने का वर पाया, परन्तु व्यास के घर स्त्री तो थी ही नहीं जो पुत्र होता एक दिन प्रात: काल व्यासजी अग्नि-होत्र करने के वास्ते अग्नि उत्पन्न करने को अरणी मथ रहे थे उसही समय घृताची अप्सरा उधर आ निकली, उसे देख कर व्यास जी कामातुर हुए परन्तु मन में व्यभिचार कर्म्म से डरे और कुछ चिन्ता करने लगे, व्यास मुनिको चिन्तातुर देख के घृ[illegible] घबड़ाई और भय से शुकी (सुग्गी, तोती) बन के भागी [illegible] शुकी को देखकर अत्यन्त विस्मित हुए और अप्सरा का ध्यान करने लगे तब उनका वीर्य्य अरणी पर पतित हुआ और उससे ही शुक देव (लकड़ी) से उत्पन्न होगये, देववृन्द ! विचार (देवी भागवत प्रथमस्कन्ध अध्याय १४) कर देखिये कि इस महालालबुझक्कड़ी कथा में कैसी गप्प मारी है कि लकड़ी से ही पुत्र उत्पन्न हो गया, एक और भी मुझे आश्चर्य है कि जिस श्रीमद्भागवत को पौराणिक

लोग पुराणों का शिरोमणि मानते हैं उसमें शुकदेव का विवाहादि कुछ नहीं लिखा परन्तु हजारों ब्राह्मण अपने को वशिष्ठ गोत्री बतलाते हैं जब कि शुकदेव का वंशही नहीं चला और व्यास के भी दूसरी सन्तान नहीं थी तब जगत्में वशिष्ठ का गोत्र कहां से आया! क्या विना माता पिताके भी पुराण वाले किसी की उत्पत्ति कलियुग में मानने लगे हैं परन्तु देवी भागवत में शुकदेव का विवाह पीवरी स्त्री के साथ लिखा है और उससे कृष्ण, गौरप्रभ, भूरि तथा देवश्रुत नामक ४ पुत्रों की उत्पत्ति लिखी है हम नहीं जानते कि पुराणों में परस्पर क्यों विरोध है? पुराण वालों ने हमारे वंश पर एक तो कृपा की है कि शुकदेव को कोई दोष नहीं लगाया, परन्तु "जब फंसे दादा तो किस गिनती में फिर पोते रहे" इस कहावत के अनुसार कुल भर ने ही हमारे कलङ्कित बना दिया है।

सभ्य महाशयों! मैंने आप लोगों को बहुत देर तक कष्ट दिया, परन्तु अब मैं केवल एक बात कहके अपने व्याख्यान को समाप्त करूंगा आजकल के सन्यासी अपनी गुरु परम्परा में कहते हैं।

नारायणम् पद्मभवम् वशिष्ठम्, शक्तिं चतत्पुत्रपराशरंच।
व्यासं शुकङ्गौडपदम्महान्तम्, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्यशिष्यम्॥
श्रीशङ्कराचार्य्यमथास्यपद्म, पादंच हस्तामलकंचशिष्य।
तन्त्रोटकम्वार्त्तिककारमन्या, नस्मद्गुरून्सन्ततमानतोस्मि॥

देव के शिष्य गौड़पादाचार्य्य. गौड़पादके शिष्य गोविन्दाचार्य्य न्दाचार्य्य के शिष्य श्री शङ्कराचार्य्य हुए परन्तु इन सब के समय का ।मलाने से यह बात सत्य नहीं मालूम होती क्योंकि शुकदेव का स्वर्ग वास पाण्डवों के जन्म से भी ५० सौ वर्ष पूर्व्व हो ही चुका था और गोविन्दाचार्य्य तथा शङ्कराचार्य्य का जन्म बुद्धदेव के समय से सैकड़ों वर्ष पश्चात् हुआ था तब गौड़पादाचार्य्य का शुकदेव के समय में होना क्योंकर सिद्ध होसक्ता है? गौड़पादाचार्य्य की कलियुग में भी कई सहस्र वर्ष की अवस्था का होना वेदों से तो

विरुद्ध हुई है किन्तु कलियुग के राज्य में पुराणों से भी निषिद्ध है

महर्षि पराशर के क्षोभ को बढ़ताहुआ देख कर श्रीमान् सभापति खड़े होके कहने लगे कि महर्षे! पराशर! आप को यह अधिकार नहीं है कि आप सन्यासियों के विषय में भी कुछ कहें क्योंकि इस विषय में दत्तात्रेय तथा शङ्कराचार्य्य स्वयम् वर्णन करने को उपस्थित हैं। मेरी सम्मति में अब पञ्चदेवों में से किसी को अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये।

सभापति की बात को सुनके स्वयम् भगवान् विष्णु हंसते हंसते खड़े हुए और इस प्रकार से कहने लगे, सभ्यवृन्द! इस महती सभा में जो कुछ मैं कहूंगा उसे आप लोग दिक् प्रदर्शन वा नमूना मात्र समझियेगा क्योंकि संसार के कृतघ्न लोगों ने मुझे एक काठ का पुतला समझ रखा है और मेरे नाम से स्वयम्. विषय भोग करते लज्जित नहीं होते, भला यह कौन इन्साफ की बात है कि जिसको उपास्य देव वा देवी समझें उसकोही रासमें नचावें, फिर मेरे नाम से मन्दिरों में वेश्याओं को नचावें और स्वयम् व्यभिचार करें, अपनी अपनी हठ को पूरी करने के वास्ते विषयी लोगों ने मुझे बदनाम कर रखा है, कोई कहता है कि विष्णु गोलोक में रहते हैं और गोलोक में सिवाय विष्णु के सम्पूर्ण स्त्रियां रहती हैं, कोई कहता है कि विष्णु दैत्यों को मारने के वास्ते सदैव अवतार लिया करते हैं जिन मनुष्यों को वह मेरा अवतार बतलाते हैं उन महात्म जीवन चरित्रोंको सृष्टिक्रम विरुद्ध बातों से भर देतेहैं, खैर अ की कथाओंको मैं फिर कहूंगा, प्रथम अपनीही दुर्दशा को सुनाता हूं, सब ही लोग मुझे मधुसूदन और कैटभारि कहते हैं परन्तु मधु-कैटभ के मारने के समय न मालूम मुझे किस २ का उपासक पुराणवालों ने बना दिया है। गणेश पुराण की १७ और १८ अध्याय में लिखाहै कि जब मैं मधु और कैटभ नामक दैत्योंसे लड़ता लड़ता थक गया और वह न मरे तब मैंने गन्धर्व्वका रूप धारण किया मैंने

जो बन में जा के बीन बजाई और गाया उस्से शिव महाराज बड़े प्रसन्न हुए और अपने दूत के द्वारा मुझे अपने पास बुलाया और मेरे गानेको सुनके बड़े प्रसन्न होके बर देनेको तय्यार हुए मुझसे तब मधु-कैटभकी कथाको सुनके शिव महाराज बोलेकि तुमने गणेशकी पूजा नहीं की थी इस्से ही तुम्हारी विजय नहीं हुई, अब मैं तुम को गणेश का मन्त्र बताता हूं उसको जपने से गणेश तुम पर प्रसन्न होंगे और उस्से ही तुमको विजय प्राप्त होगी, शिव ने यह भी कहा कि गणेश के ७०००००००० मंत्र हैं, मैं उन में से षड़क्षर मंत्र तुमको उपदेश करता हूं, मैंने शिव से उस मंत्र को ग्रहण करके १०० वर्ष तक जपा तब गणेश जी ने प्रत्यक्ष होके दर्शन दिये, देखिये तो यह गणेश जी और शिव जी कैसे धोखेबाज़ हैं कि जब मेरे गीत सुननें को शिव जी ने मुझे अपने पास बुलाया था उस समय गणेश जी वहीं मौजूद थे परन्तु वहां पर उनसे बर न दियागया फिर जो गणेश जी मेरे ऊपर मेहर्बानी करने को १०० वर्ष के बाद आये थे उनके रूप का तेज ३०००००००० सूर्य्यों के समान लिखा है भला विचारिये तो सही कि एक सूर्य्य के उत्ताप से तो जगत् भर उत्तप्त रहता है परन्तु तीन करोड़ सूर्य्य के समान तेजवाले गणेश से मैं भी न जला और न मधु कैटभ जले, गणेश पुराण में तो यह लिखा है और मार्कण्डेय पुराण तथा देवी भागवत में लिखा है कि देवी की ...न मैंने मधुकैटभ को मारा, हां एक बात तो मैं भूल ही गया गणेश जी का मंत्र मुझे १०० वर्ष तक जपना पड़ा था वा यों ...ये कि जिनकी उपासना से मुझे सिद्धि मिली थी, वह गणेश जी कौन हैं ? देववृन्द ! वह गणेश जी भी पार्वती के शरीर के मैल से उत्पन्न हुए थे, लिखा है कि एक समय पार्वती जी महादेव से रुष्ट हो के दूसरे बन में चली गई थीं, उन्होंने बन में जाके अपनी रक्षा के वास्ते अपने शरीर के मैलसे एक मनुष्याकार पुतला बनाया और उसे सजीव करके द्वार पर बिठला दिया, जब महादेव अपने

गणों के सहित पार्वती को ढूंढ़ते हुये वहां आये और भीतर जाने लगे तब गणेश ने उनको रोका, इस कारण परस्पर घोर संग्राम हुआ, उस संग्राम में महादेव ने गणेश का सिर काट डाला इस बात को देख कर पार्वती जी बड़ी चिन्तायुक्त हुई और शिव महाराज से कहने लगीं कि इसको जिला दो अन्यथा मैं भी प्राण त्याग दूंगी, इस हठको सुनके शिव महाराज ने अपने दूतों को इधर उधर भेज के गणेश के सिर को तलाश कराया परन्तु गणेश के सिर को प्रथम ही देवता लोग उठाके लेगये थे और चन्द्रलोक में रखा था अतएव महादेव के दूत एक हाथी के बच्चे को और उसकी माता को अचेत सोया हुआ देख के उस बच्चेके सिर को काट लाये, शिव महाराज ने उसही हाथी के बच्चे के सिर को गणेश के कबन्ध पर रख दिया और उसे जिला दिया, देखिये देववृन्द! कैसी शल्य क्रिया है कि दूसरे के सिर को धड़ पर रखके छू मंतर किया और झप से वह जी गया, यदि कहा जाय कि शिव महाराज सर्वशक्ति-मान् थे तो क्यों नहीं बिना सिर के ही गणेश को जिलाया?

ऐसी हास्यास्पद कथा कुछ गणेश के ही विषय में नहीं लिखी बरन मुझे भी देवतों ने एक बार ऐसे ही छू मन्तर से जिलाया था, महाशय! इस बात को मैं पारसाल की सब्जेक्ट कमीटी में बयान कर चुका हूं अब एक बात और सुनिये, जिस गरुड़ जी को ... बाहन बताते है उस से ही मेरा घोर युद्ध भी लिख ... यह कहानी ऐसी अद्भुत रीति से लिखी है कि जिसको सु... हंसी आती है, लिखा है कि काश्यप की स्त्री कद्रु (सर्पों की माता) और विनता गरुड़ की माता में एक दिन सूर्य्य के घोड़ों के विषय में विवाद हुआ, कद्रु कहती थी कि सूर्य्य के रथ में जो घोड़े जुते हैं वह काले हैं और गरुड़ की माता उनको सफेद बतलाती थी, सर्प अपनी माता को सच्ची सिद्ध करने के वास्ते सूर्य्य के घोड़ों के शरीर में जा लिपटे इस से वह घोड़े काले मालूम होने लगे, तब

विनता शपथ के अनुसार कद्रु की दासी हो गई तब दासी भाव के सब कार्य्य करने लगी, एक दिन गरुड़ ने अपनी माता से पूछा कि तुम इसके घर दासी का काम क्यों किया करती हो? गरुड़की माताने प्रथम की सब कथा कह सुनाई, गरुड़ने उस कथा को सुनके पूछा कि कोई ऐसा कार्य्य है जिसके करने से तुम्हारा दासीपन छूटजाय, गरुड़की माताने अपनी सौतोंनसे पूछके गरुड़ से कहा कि यदि तुम अमृत लाके सर्पों को पिलाओ तो मैं दासीपन से मुक्त होजाऊं, इस बात को सुनके गरुड़जी अमृत लाने के वास्ते चले, मार्ग में अपने पिता के दर्शन की उनको श्रद्धा हुई तब वह अपने पिता के पास गये और दण्डवत् प्रणाम करके उन से कहा कि पित: ! मुझे क्षुधा ने बहुत सताया है, आप मुझे बताइये कि मैं क्या खाऊं, गरुड़ के पिता ने कहा कि एक द्वीप में शूद्र ही बसते हैं तुम उन सबको खाजाओ, परन्तु खबरदार किसी ब्राह्मण को मत खाना गरुड़ ने अपने पिता से पूछा कि मैं ब्राह्मण को क्योंकर पहिचानूँगा, उसके पिता ने कहा कि जो मनुष्य तेरे पेट में न गले उसे ही तुम ब्राह्मण समझना, गरुड़ उस द्वीपमें गये और सम्पूर्ण द्वीपवासियोंको चोंच में भरके निगलने लगे, उनमें ही एक ब्राह्मण भी था वह गरुड़ के पेट में तो चला गया परन्तु पेट में जब न गला तब पेट में थोड़ा-सा उछलने लगा, तब गरुड़ने उससे पूछा कि तू कौन है जो मेरे पेट में नहीं गलता है? उसने पेट में से ही उत्तर दिया कि मैं ब्राह्मण हूँ, गरुड़ ने उससे कहा कि तुम फौरन मेरे पेटसे निकल आवो ! ब्राह्मण ने कहा कि मैंने जिस कहारिन को अपनी भार्य्या बनाके रखा था उसको भी आप निकाल दीजिये तब मैं निकलूँगा, गरुड़ ने तथास्तु कहके दोनोंको पेट से निकलने की आज्ञादी, इस आज्ञा को पाते ही वह ब्राह्मण कहारिन के सहित पेट से निकल आया, गरुड़ वहां से पेट भरके जब चले तब एक ऐसे बटवृक्ष पर बैठे कि जो कई योजन का था गरुड़ के बैठने से उस वृक्ष की शाखा टूट पड़ी और

उस ही शाखा पर कई हज़ार बालखिल्या ऋषि तप करते थे यदि गरुड़ जी उस शाखा को छोड़ देते तो वह सब ऋषि दब के मर जाते, इस लिये गरुड़ जी उस शाखा को अपने पंजोंमें दबा के उड़े और बहुत दिन तक उड़ते ही फिरा किये फिर अपने पिता से पूछा कि इनको मैं कहां रखूं, कश्यप ऋषि ने कहा कि इनको अ-स्मूक पर्वत पर जाके रखदो, खैर उनको रखके गरुड़जी अमृत लेने को चले जब स्वर्ग में पहुँचे तब अमृतकुण्ड के रखवालों से और गरुड़ से भयानक युद्ध हुआ, फिर उनके हार जाने पर समस्त इन्द्रादि देवता गरुड़से लड़ने को आये, जब वह भी हार गये तब मुझको सब ने बुलाया और मैं भी गरुड़ से लड़ने लगा, जब लड़ते २ मैं भी थका तब गरुड़ ने प्रसन्न हो के कहा कि हे विष्णो! मैं तुम से बड़ा प्रसन्न हुआ मुझ से ईप्सित बर मांगो, मैंने गरुड़ से यही बर मांगा। कि तुम मेरे वाहन बनो (इत्यादि) देखिये! देववृन्द कैसी असम्भव कथा है क्या हम लोग छलसे किसी को अपने वशमें करते हैं? जबकि मुझे पुराणवाले सर्व्वशक्तिमान् मानते हैं तो फिर ऐसे ऐसे ढकोसलों से मुझे शक्तिहीन क्यों सिद्ध करते हैं? मेरे अवतारों में से जिस कृष्ण को पूर्णावतार मानते हैं उसके विषय में जो २ असम्भव और अश्लील कथा लिखी हैं उनका आप लोगों के सन्मुख बर्णन करना केवल समयको नष्ट करना मात्र है, तो भी दो अपूर्व कथ को मैं अवश्य यहां बर्णन करूंगा, आप लोगोंने सुना होगाकि कृ के बड़े भाई बलराम से रेवती का बिवाहहुआ था, यह रेवती महाराज रैवत की कन्या थीं, उस कन्या को अत्यन्त रूपवती और गुणवती देख के उस के समान बर को जिज्ञासा करने को महाराजा रैवत अपनी कन्या के सहित ब्रह्मा के पास ब्रह्मलोक में गये, ब्रह्मा के सामने उससमय एक और मामला पेश था इस कारण राजा रैवत वहां बैठ गए और ब्रह्मा से बिनय करने को अवसर की प्रतीक्षा करने लगे, जब अवसर मिला तब राजा ने

ब्रह्माजी से सुयोग्य वर की जिज्ञासा की ब्रह्माजी ने हंस के उत्तर दिया कि राजन्! जितनी देर तक तुम यहां बैठे रहे उतनी देर में मर्त्यलोक में अनेक युग बीतगये इस कारण तुह्मारे वंश में अब कोई भी नहीं रहा है, अब तुम शीघ्र चले जाओ और इस कन्या का यदुवंशीय बलराम से बिवाह करदो ब्रह्मा की आज्ञा ले राजा रैवत मर्त्यलोकमें आये और बलराम से रेवती का बिवाह कर दिया, क्यों महाशय! रेवती का शरीर क्या पार्थिव परमाणुओंका नहींथा? जो उसको मृत्यु ने न घेरा, यदि यही बात थी तो अब तक क्यों न जीवित रही? यदि यही कहिये कि ब्रह्मलोक में चले जाने से मृत्यु न हुई तो बिना शरीर त्याग किये ब्रह्मलोक में जाना ही क्योंकर सम्भव है? सत्य तो यह है कि लाल बुझक्कड़ों ने दूसरी कथा मुचकुन्दको भी ऐसेही रचीहै कि राजामुचकुन्द देवतोंको दैत्योंसेबचाने के निमित्त स्वर्ग में गये परन्तु यहां उनका कुल क्षय होगया, यदि यह दोनों कथा सत्य होती तो महाराजा दुष्यन्त जब इन्द्रको सहायता देने स्वर्ग में आये थे तब मर्त्यलोक में उनकी स्त्री शकुन्तला और उनका पुत्र भरत क्यों कर जीता रहा था, क्या उनके वास्ते मृत्यु का दूसरा नियम था, और महाराजा रैवत तथा मुचकुन्द के ास्ते दूसरा नियम था।

देववृन्द! इन कथाओं से ही सिद्ध होता है कि मेरे अवतारों के ...य में भी सब मिथ्या कथा लिखी हैं। अवतार लेने के जो कारण ुराणवालों ने लिखे हैं वह भी हास्यास्पद ही हैं, भला सोचिये तो क जरा से बल वाले कंस को मारने के वास्ते यदि मुझे स्वयम् अवतार लेने की जरूरत होता तो जिस जगत् में कंस सरीखे करोड़ों बलवान् भरे हैं उसकी प्रलय करने के वास्ते तो मुझ में शक्ति ही सिद्ध न होगी, फिर अवतारों का भी ठिकाना नहीं है कि कितने हुए क्योंकि गोकुलिए गोसांई सबअपनेको विष्णुका अवतारही समझते हैं, एक और भी आश्चर्य की बात है कि श्रीमद्भागवत में कृष्ण

को अनेक स्थलों में सर्वज्ञ लिखा है और यह भी लिखा है कि कृष्ण ने अपने गुरु सान्तपन के मरे हुए पुत्रों को ला दिया था परन्तु जब उन के पोते अनिरुद्ध को बाणासुर ने अपने घर में कैद कर लिया था तब उन को यह भी न मालूम हुआ कि मेरा पोता कहां चला गया, जब नारद ऋषि ने जा के उन को सब गुप्त हाल सुनाया तब उन को मालूम भया कि अनिरुद्ध को बाणासुर की कन्या ने चित्र रेखाके द्वारा मंगा लिया है। न मालूम उस समय कृष्ण की सर्व्वशक्तिमत्ता और सर्व्वज्ञता कहां को उड़ गई थी, हां एक बात और भी कहना मैं भूल गया कि, जब बालक अवस्था में यशोदा ने कृष्ण को मट्टी खाने के अपराध में बांधा था उस समय कृष्णने अपने मुख में तीनों लोक दिखा दिये थे, भला कहिये तो मुख था या दुनियां का नकशाथा परन्तु जब दुर्य्योधन ने कृष्ण को कैद करने का प्रबन्ध किया उस समय सब सीटीपटांग भूल गई, यदि कृष्ण वास्तव में मेरा अवतार वा सर्व्वज्ञ होते तो अपने प्यारे भानजे अभिमन्यु को यमराज के घर से क्यों न लौटा लाते ? असल में न कृष्ण मेरे अवतार थे और न सर्व्वज्ञ थे।

जिन प्रह्लाद को विष्णु का परम भक्त लिखा है और जिन को नृसिंह की कृपा से परम विज्ञान प्राप्त होना एवम् मोह से रहित होना भागवतादि पुराणोंमें लिखा है उनका बदरिकाश्रम में रहने वाले उन नारायण के साथ (देवी भागवत) घोर युद्ध लिखा है जिन को पुराण वाले विष्णु का अवतार मानते हैं (भागवत स्कं॰ १ अ० – तूर्य्ये धर्म्मकलासर्गे नरनारायणावृषीभूत्वात्मशमोपेत-मकरोद्दुश्चरन्तप:) कहिये तो वह प्रह्लाद की नारायण भक्ति कहां को चली गई, फिर जिन नृसिंह जी की सब से अधिक प्रशंसा और शक्ति लिखी है उनके ही विषय में पुराणों के दादा गुरु आकाश भैरव तंत्र में लिखा है कि जब नृसिंह जी का क्रोध किसी प्रकार से शान्त न हुआ तब देवतोंने शिव महाराज से जाके प्रार्थना

को, शिव जी भी देवतों को अभय दान देके इनके क्रोध को शान्त करने का उपाय सोचने लगे जब कोई और उपाय न सूझा तब शिव जी ने शरभ शालव पक्षी राज का रूप धारण किया और नृसिंह जी को पंजों में दबा के उड़ गये अनेक वर्षों तक शिव महाराज नृसिंह को पंजोंमें दबाये आकाश में फिरा किया, जब नृसिंह जी थके और घबड़ाये तब शिव की स्तुति की यही स्तुति दारुण समक नाम से प्रसिद्ध है, इन शरभ जी के रूप को आप लोग सुनेंगे ता और भी चकित होंगे इनका रूप यों वर्णन किया गया है।

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवदनखश्चंचलात्युग्रजिह्वः
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवोवाड़वाग्निः
ऊरुस्थौव्याधिमृत्यू शरभवरखगश्चण्डवातातिवेगः
संहर्त्तासर्वशत्रून् जयतिसशरभः शालवः पक्षिराजः

अब कहिये क्या यह अवतारों के बहाने से मुझे गाली देना नहीं है? फिर बावन के नाम से मुझे धोखे बाज़ और जाल साज़ बनाया है, क्या मुझे पुराण वालों ने पार्शिय वा पक्षपाती समझ रखा है कि मैं इन्द्र के वास्ते पहिले छोटा सा रूप बना के भिक्षा मांगने जाता और फिर बिकट रूप बनाता और बिचारे निरपराध बलि को छल के कैद कर देता, क्या मैं अन्यायी हूं कि निरपराध को दण्ड देता हूं फिर पुराण वाले यह भी कहते हैं कि बावन सदा बलि के द्वार पर पहरा दिया करते हैं क्या यह सम्भव है कि ईश्वर किसी का पहरेदार हो सक्ता है। खैर एक और भी बात मुझे याद आई है जब कृष्ण महाराज से शाल्व लड़ने को द्वारिका में गया था तब कृष्ण बलराम को द्वारिका की रक्षा के वास्ते घर पर छोड़ के आप शाल्व से लड़ने को आये तब घोर घमसान मच गया कृष्ण को छलने के वास्ते शाल्व ने माया से बसुदेव का सिर बनाया और कृष्ण को दिखलाके कहने लगा कि ले मैं तेरे पिता का सिर काट लाया उस समय सिर को देख के कृष्ण महा-

राज के होश हवास गुम होगये और रण में मुख मोड़ के रोने लगे, बहुत देर के बाद जब ध्यान आया कि मैं बलराम की रक्षा के वास्ते छोड़ आया था और बलराम ऐसे साधारण बीर नहीं हैं जिनको शाल्व क्षण मात्र में जीत लेता, इस से निश्चय होता है कि यह दानवी माया है देखिये तो कृष्ण की सर्वज्ञता को कैसा साफ उड़ा दिया है यह तो भागवत की बात हुई अब भागवत का हाल सुनिये इस—में लिखा है कि जब रुक्मिणी के गर्भ से प्रद्युम्न की उत्पत्ति हुई तब ही सूतिका गृह से प्रद्युम्न को कोई उठा ले गया, श्री कृष्ण पुत्र के विरह से अत्यन्त दुःखी हुए और कई दिन तक रोते फिरा किये परन्तु बालक का कुछ पता न मिला तब नारद ने आके कृष्णको समझाया कि सम्बर दैत्य तुम्हारे पुत्र को उठा ले गया है तुम कुछ मत घबड़ाओ वह स्त्री के सहित तुम से आके मिलेगा, खैर अन्त में ऐसा ही हुआ कि प्रद्युम्न सम्बर दैत्य को मारके अपनी स्त्री रति के सहित कई वर्ष के पश्चात् कृष्ण के पास आया पुराण बनाने वाले से कोई पूछे कि जो कृष्ण अपने गुरु पुत्रों को लाने के समय सर्वज्ञ बने थे और मरे हुए गुरु पुत्रों को यमराज के पास लेने को गये थे वह इतना भी न जान सके कि मेरे पुत्रको कौन लेगया और न उसको छुड़ाके लाये, कहां तक कहूं अवतारों के विषय में खूब ही लीला रची है, इसके अतिरिक्त मुझे भी खूब ही कलङ्क लगाये हैं जय विजयके विषय में जो कथा लिखी है वह भी हंसीसे भरी हुई है देवगण! यह क्या हंसी की बात नहीं है कि जो स्वयम् मुक्तिदाता है उसके ही पार्षदोंको राक्षस बनादिया फिर— "आप गलन्ते पाण्डिया यजमान भी गाले"।

इस कहावत के अनुसार जय विजय के कारण मुझे भी मछली और कछुआ बनना पड़ा फिर हर बार मैं उनको मुक्ति देता रहा पर वह बराबर जन्म लेते ही रहे, महाशय मैं कहां तक कहूं या तो आप लोग पुराणों को खारिज कीजिये नहीं तो मैं ईश्वरपन से इ-

स्तीफा देता हूं, विष्णु महाराज को और भी बहुत कुछ कहना था परन्तु एक ही व्याख्यान में कई दिन व्यतीत हो जाने के भय से उनका व्याख्यान रोक दिया गया॥

विष्णु भगवान् के बैठते ही सूर्य्यनारायण खड़े हुए और कहने लगे:—

देववृन्द ! मुझे आपलोग भलीभांति जानते हैं कि मैं सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की उस महिमा को प्रकाशित करने वाला हूँ जिस से उस की अपूर्व कारीगरी और असीम विज्ञान का प्राणीमात्र को परिचय मिलता है, सृष्टि के आरम्भ में ही परमेश्वर ने मुझे इस अभिप्राय से निर्माण किया था कि मेरे आकर्षण से अनेक लोक अपनी सीमा पर स्थिर रहैं परन्तु पुराण वालों ने मेरी उत्पत्ति अद्भुत प्रकार से लिखी है। लिखा है कि कश्यप की स्त्री अदिति के गर्भ से मेरी उत्पत्ति हुई, भला कहिये तो कि यदि मैं किसी स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होता तो मेरे? जन्म से पूर्व के मनुष्य अर्थात् मेरे माता पिता ही क्यों कर देखते, क्या वह लोग अन्धे थे ? इसही प्रसङ्ग में मैं यह भी कहे देता हूँ कि पुराण वालों ने मेरे मित्र वायुदेव को भी ऐसी ही दोष लगाया है लिखा है कि जब वायु अपनी माता के गर्भ में थे तब इन्द्र उसकी माता के गर्भ में घुस गये और बालक के ४९ टुकड़े कर डाले जब वायु की माता को चेत हुआ तब उसने इन्द्र को शाप दिया, क्या यह असम्भव और अश्लील बात नहीं है कि देवराज इन्द्र अपनी विमाता (Step mother) के गर्भमें चलेगये ? खैर मेरे विषय में जो पुराण वालों ने लिखा है वह बिल्कुल असत्य है, लिखा है कि दुर्वासा ऋषि से कुन्ती ने मंत्र लेके मुझे मंत्र बल से अपने पास बुलाया वह कन्या थी मैंने उस से व्यभिचार की इच्छा प्रकट की जब वह सहमत न हुई तब मैंने उसे वर देके प्रसन्न किया, कहा कि तेरा कन्यापन नष्ट न होगा और तेरा पुत्र मेरे ही समान तेजस्वी होगा कुन्ती इस बात को

सुनके राजी हुई और मैं जनाबिलजब्र के कसूर से बरी हुआ मगर (Rape case) कन्यात्व नष्ट का दोष तो मेरे ऊपर लग ही गया खैर! कुन्ती के गर्भस्थापन कर के मैं फिर आकाश में जा चमका और १० मास के पश्चात् कुन्ती के पुत्र उत्पन्न हुआ इस पुत्र की उत्पत्ति भी विलक्षण ही लिखी है कि कुन्ती के कान से वह लड़का पैदा हुआ, वाह जी वाह! क्या ही कथा गढ़ी गई है (मैं ठीक कहता हूं कि यह कथा लाल बुझक्कड़ की इस कहानी के अनुसार है कि एक बार लाल बुझक्कड़ के ग्राम में कोई सौदागर हाथी लेआया उसको देखके ग्रामवासी चकित हुए और लाल बुझक्कड़ से पूछने लगे कि बतलाओ यह क्या है? लाल बुझक्कड़ ने उत्तर दिया कि " लाल बुझक्कड़ बूझियां और न बूझे कोय। रात इकट्ठी हो गई यादिल्ली वाला होय " बस इसही प्रकार से राधा पुत्र का कर्ण नाम सुन के ही कान से पैदा होने की कहानी गढ़ी गई है) भला कान से भी कहीं पुत्र उत्पन्न होते सुने हैं फिर तारीफ यह है कि लोहे का जिरह बखतर पहिने ही उसका जन्म होना लिखा है, क्या कोई वैद्य किसी विद्या से सिद्ध कर सक्ता है कि माता के पेट में लोहे का जिरह बखतर बन जाय, आप लोग खूब समझ सक्ते हैं कि राधेय कर्ण को क्षत्रिय बनाने के वास्ते जो यह कथा गढ़ी गई इस में मुझे और पाण्डवों की माता कुन्ती को बड़ा भारी दोष लगाया गया है, फिर छाया को मेरी स्त्री लिखा है, नृसिंह पुराण की १८ अध्याय में मेरे वंश को अद्भुत कथा लिखी है, लिखा है कि त्वष्टा की कन्या संज्ञा से मेरा विवाह हुआ, जब वह मेरे तेज को न सह सकी तब अपने पिता के पास गई उसके पिता ने यह कह के फिर मेरे पास उसे भेजा कि मैं सूर्य्य के पास आके सूर्य्य के तेज को कम कर दूंगा तब फिर वह मेरे पास आई और रहने लगी उसके गर्भ से मेरे तीन सन्तान हुई, वैवस्वत मनु, यम और यमी नाम की एक कन्या इसके पश्चात् संज्ञा

मेरे तेज को न सह सकी तब आपही घोड़ी बनके उत्तर कुरु देश को चली गई और अपनी छाया को मेरी स्त्री बना के मेरे घर छोड़ गई तब मुझे इतना भी ज्ञान न रहा कि यह मेरी असल स्त्री नहीं है तब उस छाया से मेरे तीन सन्तान फिर हुईं, मनु, शनैश्चर और तापती नाम की कन्या, छाया अपनी सन्तान से अधिक प्यार करती थी और संज्ञा की सन्तान से कम प्रेम रखती थी इस कारण यम और यमी ने मुझ से कहा तब मैंने छाया को समझाया पर छाया ने क्रोध कर के यम को शाप दिया कि तू प्रेतों का राजा हो और यमी को शाप दिया कि तू नदी हो जा, तब मैंने भी छाया की सन्तान को शाप दिया कि शनैश्चर तू क्रूर ग्रह हो जा, और तापती तू भी नदी हो जा, तब मैंने ध्यान कर के देखा तो मालूम हुआ कि संज्ञा घोड़ी का रूप धारण किये उत्तर कुरु देश में विचरती है तब मैं भी घोड़ा बन के भागा और उस से दो पुत्र उत्पन्न किये वही आप लोगों के डाकृर अश्विनी कुमार हैं, भला कहिये तो मुझे कैसा घोड़ा बनाया है, कोई पुराण बनाने वाले पोप से पूछे कि जब मैं घोड़ा बनके कई वर्ष तक उत्तर कुरु देश में रहा था तब जगत् में प्रकाश कौन करता था, देववृन्द मैं आपलोगों से प्रार्थना करता हूँ कि इन देवकुल कलङ्कारी पुराण पुस्तकों को इतिहासों की लिष्ट (सूचिपत्र) से अवश्य काट दीजिये।

सूर्य्य नारायण के बचन की ताईद महर्षि अगस्त ने की और कहा कि पुराणों का नाम आज से पंच (दिल्लगी के अखबार) रखा जाय.क्योंकि इन में ऐसी ही हंसी की बातें लिखी हैं, मेरे विषय में लिखा है कि अगस्त का जन्म घड़े से हुआ और फिर लिखा है कि मैं समुद्र को पी गया, भला जो खुद घड़े से पैदा हो वह समुद्र को क्यों कर पी सक्ता है ? क्या घड़े में समुद्र समा सक्ता है ? अब मेरे चरित्रों को सुनिये कि दक्षिण पथ में आतापि और वातापि नाम के दो दैत्य रहते थे वह सदैव छल से ब्राह्मणों को

निमंत्रित करके बुलाते थे और उन दैत्यों में से एक बकरा बन जाता था और दूसरा उसे मार के ब्राह्मण को खिला देता था एक दिन मेरा भी उन्हों ने निमंत्रण किया पर यहां तो ठहरे गुरु घण्टाल उसे खा के पचा गये फिर वह भी मारा गया इसके अनन्तर मैंने समुद्र को पिया और मूत्र के मार्ग से निकाल दिया गोया व मेरे इन्द्रिय जुलाब था फिर विन्ध्याचल पर्वत सूर्य्य को रोकने के वास्ते ऊंचा होता जाता था तब देवतों ने मुझ से प्रार्थना की, मैं पर्वत के पास गया वह प्रणाम करने को पृथिवी में गिरा मैंने उसके सिर पर हाथ रख के कहा कि जब तक मैं तीर्थयात्रा कर के न लौटूं तब तक तुम ऐसे ही पड़े रहो बस मैं तो आके तारा बन गया और विन्ध्याचल अब तक वैसे ही पड़ा है, इस कथा में प्रथम तो मुझे धोखेबाज़ सिद्ध किया फिर सृष्टिक्रम विरुद्ध जड़ का चैतन्य के समान प्रणाम करना और मेरे बचन को मानना आदि असम्भव बातें सिद्ध की हैं, क्या हम महर्षि होके भी मांस भक्षण करते? समुद्र का खारहोने पुराणों से जो प्राचीन पुस्तक हैं उनमें बराबर लिखा हुआ है परन्तु उसको भी मेरा मूत्र लिख दिया, इन कथाओं से हमलोगों को बड़े दोष लगते हैं इस कारण इन को जरूर ही मन्सूख कर देना चाहिये।

इस के अनन्तर सांख्य शास्त्र के प्रणेता महर्षि कपिल खड़े हुए और कहने लगे कि मैंने जो सांख्य शास्त्र बनाया है उस को बिना बिचारे और पढ़े ही भागवत में मेरे मत को प्रकाशित किया है इस कारण मैं भागवत बनानेवाले परमदाखलत बेजाका जुर्म कायमकर के नालिश करने वाला था परन्तु अब आप लोगों ने पंचायत करके भागवत को रद्दी करने का प्रस्ताव किया है इस कारण मैं आप लोगों को धन्यवाद देता हूं पुराण वालों ने मुझे भी चोरों का रक्षक लिख दिया है, उन्हों ने लिखा है कि जहां मैं तपश्चर्य्या करता था वहीं राजा इन्द्र राजा सगर के अश्वमेधार्थ छोड़े घोड़े को चुरा के

बांध गयामैं समाधिस्थ था इस कारण मुझे कुछ खबर न पड़ी, जब राजा सगर के ६०००० पुत्र घोड़े को सब जगह ढूँढ़ के हार गये तब उन्हो ने पृथ्वी के नीचे ढूंढ़ने के अभिप्राय से पृथ्वी को खोदना आरम्भ किया उन्ही के खोदने से सात समुद्र बन गये (और जब गंगा जी आईं तब उन में पानी भरा) पृथ्वी को खोदते खोदते उनको मेरा आश्रम मिल गया तब उन्होंने मुझे पीड़ा दी उस पीड़ा से मेरी समाधि खुल गई, ज्योंही मैंने उन को नज़र उठा के देखा, त्योंही वह सब भस्म हो गये, भला कहिये क्या मैं ऐसा हत्यारा हूं कि ६०००० मनुष्यों को मार डालता, हम लोग ऋषि क्या हुए मलकुलमौत हो गये, फिर राजा प्रियव्रत के रथ की कथा इस से भी विलक्षण लिखो है अर्थात् सूर्य्य की स्पर्द्धा से जगत् में बराबर चान्दना रखने के वास्ते जो सात दिन स्वयम् रथ पर चढ़ के घूमे थे उन के प्रकाश से सात दिन तक जगत् भर में चांदना रहा था और उन के रथ के एक ही पहिये की लीक से सात समुद्र बन गये, इन ही राजा प्रियव्रत को ११ अरब वर्ष तक राज्य करते लिखा है, सभ्यगण अब कहिये किस को सच्चा माना जाय अर्थात् राजा सगर के पुत्रों के खोदने से समुद्र बने वा राजा प्रियव्रत के पहिये से समुद्र बने हम तो इन दोनों ही कथाओं को मिथ्या समझते हैं क्योंकि वेदों में लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने समुद्र को बनाया।

महर्षि कपिल के व्याख्यान का अनुमोदन करने को महर्षि वशिष्ट दण्डायमान हुए और यों कहना आरम्भ किया। सभ्य वृन्द! और सभापते पुराणों के विषय में मैं क्या कहूं वह तो असम्भव और प्रमाण शून्य कहानियों का भण्डार है, महर्षि विश्वामित्र और मेरे विरोध के कारण में लिखा हैं कि एक बार विश्वामित्र जी (जब राजा थे) वन में शिकार खेलने को आये मैंने उन को धर्मज्ञ राजा समझ के अपने आश्रम पर निमंत्रित किया, उन्हो ने मेरे आश्रम

पर खान पान की जब कुछ भी सामग्री न देखी तब बड़ा आश्चर्य करने लगे मैंने उन का अभिमान भङ्ग करने को उन की महती सेना और अमात्य वर्ग के सामने ही सुरभी गौ से कहा कि तुम सब का यथा योग्य सन्मान करो मेरे बचन को सुन के सुरभी ने हुं-कार छोड़ी उस के हुंकारते हो सहस्रों दास और दासी उत्पन्न हो गये फिर सुरभी की हुंकार से ही सब प्रकार के भक्ष्य भोज्य और चोष्य तथा लेह्य पदार्थ उत्पन्न हो गये और दास दासियों ने सब के पास पहुंचा दिये, इस अद्भुत बात को देखके गाधिसुअन विश्वामित्र बड़े चकित होके मुझ से कहनेलगे कि हे महर्षे! यह गौ तो हमारे योग्य है तुम भिक्षुक इसे लेके क्या करोगे? मैंने कहा, राजन्! यह हमारी यज्ञ धेनुहै इसको लेनेकी आप इच्छा न कीजिये, मेरे बहुत समझाने पर भी विश्वामित्र न माने और अपना क्षात्र बल दिखाने लगे, तब मैंने कहा कि तुम जबर्दस्तहो यदि शक्ति रखते होतो मेरी यज्ञ धेनु को लेजावो, विश्वामित्र ने अपने सैनिकों को आज्ञादी कि बशिष्ट को धेनु को खोल लो जब वि० मि० के सेवक मेरी गौ को खोलके ले चले तब धेनुने मुझ से कातर स्वरके साथ कहाकि महर्षे मेरा क्या अपराध है जो आप मुझे परित्याग करते हैं, मैंने कहा सु-रभे! मैं तुझे परित्याग नहीं करता हूं बरन राजा विश्वामित्र जब-र्दस्ती तुझे छीन के लिये जाता है, यदि तू अपनी रक्षा कर सकी हो तो कर मेरे बचन को सुन के धेनु ने हुङ्कार किया और उसके क्रोध करते ही उसके खुरों से खुरासानी राक्षस तथा और २ प्रकार के सहस्रों राक्षस उत्पन्न होगये और विश्वामित्र की सेना से युद्ध करने लगे उन राक्षसों ने क्षण मात्र में विश्वामित्र की सेना को विध्वन्स कर दिया, जब विश्वामित्र की सब सेना मारीगई और वि० मि० एकले खड़े रह गये तब उनको क्षात्र बल पर अविश्वास और घृणा उत्पन्न हुई और वह उस ही समय राज्य छोड़ तप करने बन को चले गए, आप लोग विचारिए कि वह गौ थी वा ब्रह्मा की भी दादी थी जिस

के हुङ्कारते हो सहस्रों दैत्य पैदा होगए, यदि यही बात है तो इन्द्र ने क्यों नहीं अपने घर में एक वैसी गौ पाली जिस्से कोई भी दैत्य दानव स्वर्ग पर चढ़ाई न कर सके, खैर एक और अद्भुत कथा सुनिए मेरे यजमानों के साथ मेरी लड़ाई का कैसा बयान पुराणों में लिखा (दे० भा० स्क० ६ अ० १५) राजा इक्ष्वाकु के १२ वें पुत्र राजा निमि ने एकबार मुझे यज्ञ करनेको बुलाया, राजा निमि का वह यज्ञ ५००० वर्ष में पूर्ण होने वाला था परन्तु इस यज्ञ से पहिले मुझे देवराज इन्द्र ने यज्ञ करने को निमन्त्रित किया था इस कारण मैंने राजा निमि से कहा कि प्रथम मैं इन्द्र को यज्ञ कराय आऊं पश्चात् तुम्हारो यज्ञ कराऊंगा अभी तुम यज्ञ मत करो, राजा निमि ने कहा कि मैं सब ऋषियों को बुला चुका हूं और सब सामग्री भी इकट्ठी करचुकाहूं अब यज्ञ को नहीं रोक सक्ताहूं आप हमारे वंशके पुरोहित हैं इस कारण हमें छोड़ के धन के लोभ से इन्द्र के यहां तुम को जाना उचित नहींहै परन्तु मैंने राजा निमिका कहना न माना और मैं इन्द्र के यहां यज्ञ कराने चला गया तब राजा निमि ने महर्षि गौतम को पुरोहित बना के यज्ञ कर लिया जब मैं इन्द्र को यज्ञ को समाप्त करके ५००० वर्ष के पश्चात् राजा निमि के घर लौट के गया तब देखा कि राजा शयन करते हैं राजा के सेवकों ने राजा को न उठाया तब मुझे ऐसा क्रोध आया कि मैंने राजा को शाप दिया कि तेरा शरीर नष्ट हो जाय जब मैंने शाप दिया तब राजा के सेवकों ने राजा को जगाया वह जाग के मेरे पास आया और कहने लगा कि महर्षे! तुम ने अकारण मुझे शाप दिया और प्रथम लोभ वश मुझ यजमान को यज्ञ को छोड़ के इन्द्र के घर चले गये थे यदि जागता होता और तुम्हारे पास न आता तब अवश्य अपराधी होता परन्तु तुम ने मुझ निन्द्राग्रस्त को शाप दिया इस कारण तुम्हारा अविवेक पूर्ण और क्रोधी शरीर भी नष्ट होजाय, राजा के शाप को सुनके मैं ब्रह्मा के पास गया और उन से

सब वृत्तान्त सुनाया ब्रह्माने कहा तुम्हारा दूसरा जन्म मित्रा वरुण के यहां होगा और तुम्हारा विज्ञान विनष्ट न होगा खैर मेरा दूसरा जन्म हुआ और फिर घड़े से मेरी उत्पत्ति हुई, अब राजा निमि का हाल सुनिये, उसका भी शरीर नष्ट हुआ परन्तु ब्रह्मा के वर से उस का वास समस्त मनुष्योंके नेत्रों पर होगया, देखिए तो क्या दिल्लगी की कथा है कि राजा का निवास सब मनुष्यों के नेत्रों पर हो गया क्या उस्से पूर्व मनुष्योंका पलक (निमेष) नहीं लगती थीं ? यदि यही बात हैं तो महर्षि गौतम ने जो जीवके साधारण लक्षण लिखे हैं वह क्या मिथ्या है ? महर्षि वशिष्ठजी की बात को सुनके सभापति जी ने अपने आसन से उठके कहा कि अभी तक किसी वस्तुके अधिष्ठातृ देवता ने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है जिस्से उस गरोह की राय भी ज़ाहिर हो, लिहाजा अब किसी गरोह के देवता को अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये श्रीमान सभापतिजीकी आज्ञा को सुनके सब नदियों के अधिपति श्रीमान् समुद्र देव खड़े हुए और कहने लगे कि—

सभ्यवृन्द ! पुराणवालों ने जो मेरी दुर्दशा की है वह अकथनीय है, आप लोगों ने मेरे मथने की कहानी को अवश्य सुना होगा ? देखिए तो कैसा वाहियात झगड़ा मचायाहै कि मेरे मथने के वास्ते मेरु पर्वत को उठा के देवतों ने मेरे बीचमें डाल दिया फिर सर्पराज वासुकी को नेती (रस्सी) बनाके घरांटेके साथ घुमाया उस घुमाने में भी विष्णु ने चालाकी की कि दैत्यों को सर्पराज के मुखकी ओर खड़ा किया और देवतों को पूछ की ओर खड़ा किया सिर्फ सर्प का विष दैत्यों को ही चढ़े और देवता उस्से बचे रहें खैर यह भी चालांकी चमत्कारिणी और हितकारिणी न हुई और न सर्प काटा तब जो २ चीज अच्छी २ निकलीं वह देवतों को मिलती गईं और बुरी २ चीज बिचारे दैत्यों को दी, उच्चश्रवा घोड़ा तो खुद देवराज ने हथिया, लक्ष्मी विष्णु को पसन्द हुई और मरे बिचारे भोला

कि विष उनको पीनापड़ा फिरजब मदिरा निकली तब तो वह दि-ल्लगी हुई कि भाड़ोंको भी मात कर दिया, दैत्यों को छलने के वास्ते स्वयम् विष्णु भगवान् को मोहनी रूप धारण करना पड़ा, उस रूप को देख के हमारे भोलानाथजी ऐसे बहके कि विष्णुको भी छकड़ी भूल गई, उनको पिण्ड छुड़ाना कठिन होगया खैर विष्णु ने उस ही मोहिनी रूप से दैत्यों को छलके देवतों को अमृत पिलाया, भला सोचिये तो कि खारी पानी में अमृत कहां से आया सो भी अगस्त ऋषि के मूत्र में, देव वृन्द ! क्या पुराण वालों ने आप लोगों को यह गाली नहीं दी है कि अगस्त ऋषिके पेशाब से मेरी उत्पत्ति लिखी और उसमें उत्पन्न हुए अमृत को आप लोगों को पान कराया, फिर यह भी बिचारने की बातहै कि मुझमें क्या किसीने गुड़ वा महुआ घोल रखे थे जो मुझ में से शराब निकल आई ? इसके अतिरिक्त जिन धन्वन्तरी के पिता दीर्घतमा थे और जो काशी के राज कुल में पैदा हुए थे उन धन्वन्तरी की भी उत्पत्ति मेरे जल में से ही हुई बतलाते हैं, क्या धन्वन्तरी कछुए या मछरी थे जो पानी से उत्पन्न होते ? फिर सुश्रुत में धन्वन्तरी ने स्वयम् कहा है कि—

"अहंहि धन्वन्तरिरादिदेवोजरारुजामृत्युहरोमराणाम् ।
शल्याङ्गमङ्गैरपरैरुपेतम् प्राप्तोस्मिगांभूयइहोपदेष्टुम्" ॥

नहीं मालूम धन्वन्तरी ने यह शेखी क्यों बघारी है ? यदि मेरे मथने से धन्वन्तरी की उत्पत्ति होती तो वह अपने मूं से आदिदेव क्यों बनते ? क्या अपने मूं से मिट्ठू बनना सभ्यता से बाहर नहीं है

महाशय ! जिन नदियों का मुझे पति लिखा है उनकी कथा सुनिये, दे० भा० में लिखा है कि एक दिन ब्रह्मा के दर्बार में गङ्गा जी खड़ी थीं इन्द्र भी दर्बार में हाजिरी देने को उसही समय पहुंच गये, इनके अलावा और और देवता भी दर्बार में हाजिर थे, इत्त-फाकिया वायु से गङ्गा के शरीर का बस्त्र उड़गया, इस सब देवतों ने नीची नजर करली परन्तु देवराज तिग्गी बांधकर देखेरहे और

गङ्गाजी भी मुस्कुराईं, इस धृष्टता (बेअदबी) को देख कर ब्रह्मा ने दोनों को शाप दिया कि तुम मनुष्य योनि में जन्मलो इस ही कथा की भूल भुलैया में पुराण वालों ने एक और भी कथा जोड़दी है, जब गंगाजी शाप पाके ब्रह्मा के दर्बार से लौटी आती थीं तब उन्हों ने देखा कि आठों वसु रास्ते में बैठे रो रहे हैं, वह सब गङ्गाजी को देख कर और भी रोये तब गङ्गाजी ने उनसे पूछा कि तुम लोग क्यों रोते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि हम सब को वशिष्ठऋषि ने मनुष्य योनि में जन्म लेनेको शाप दियाहै, शापका कारण पूछने पर वसुओं ने कहा कि हम सब भी अपनी स्त्रियों को साथ लेके बन बिहार (सैर) करते २ वशिष्ठजी के आश्रम पर पहुंचे वशिष्ठजी ने अपनी यज्ञ धेनु से अतिथि सत्कार करके सब पदार्थ लेके हम लोगों का सत्कार किया, तब गौकी इस अपूर्व शक्तिको देख कर हम में से एक वसुकी स्त्री ने अपने पति से कहा कि इस गौ को लेलेना चाहिये स्त्री की अनुचित हठ से उस वसु ने गौ को चुरा लिया परन्तु वह दिव्य गौ थी इस कारण बोल उठी कि इससे वशिष्ट महाराज क्रुद्ध हुए और हम लोगों से बोले कि तुम मनुष्यों के समान बुद्धि रखते हो इस कारण तुम सब मनुष्ययोनिमें जन्मलो महर्षि के इस शापको सुनके हम लोगों ने बड़ी विनय की उससे वशिष्टजी का जब क्रोध शान्त हुआ तब उन्हों ने कहा कि जिस ने गौ चुराई है वह अधिक दिन तक मनुष्य रहेगा और अन्य वसु जन्म लेते ही शाप से मुक्त हो जायंगे, हे गंगे! इस ही दुःख से हम लोग रो रहे हैं, गंगा जी ने यह सुन कर उन्हे संतोष दिया और अपने दुखड़े कोसुनाया तब यह सलाह ठहरी कि वसु गंगा के गर्भ में जन्म लें खैर यही किया गया और देवराज इन्द्र राजा शान्तनु बने और गंगा उन की पत्नि हुई जब वह अपनी प्रतिज्ञानुसार सात पुत्रों को मार चुकीं तब वही आठवां पुत्र भीष्म उत्पन्न हुए और पिता के वर से स्वाधीन मरण हो गये। यह तो गंगा जी की कथा हुई, यमुना और तापती

का हाल आप लोग सुनही चुके हैं इन के अतिरिक्त और भी कई एक ऐसी नदी है जिनको पौराणिक लाल बुझक्कड़ों ने पहिले जन्म की मानुषी लिखी हैं और वह परस्पर के शापों से नदी हो गई हैं परन्तु यह किसी पुराण में नहीं लिखा कि लण्डन की टेमस नदी पहिले जन्म में कौन थी हां एक बात तो मैं कहना भूल ही गया कि एक नदी एक राजा की राल में बनी है और वह राजा जिस को परम धर्म्मात्मा महाराज हरिश्चन्द्रका पिता लिखा है वह अभी तक आधे स्वर्ग में टंगा है और उसके मुख से राल गिर रही है बस वही राल नदी होके बहती है इस नदी का नाम कर्म्मनाशा इस कारण है कि उस में स्नान करने से वा उस का जल स्पर्श करने से ही मनुष्य के पूर्व कृत सब सुकर्म्म नष्ट हो जाते हैं, क्या मैं आप लोगों से यह प्रश्न कर सक्ता हूं कि उस नदी के आस पास निवास करने वाले पाप पुंज नहीं बन गये होंगे ? क्या उन लोगों के वास्ते ईश्वर दयालु और न्यायकारी नहीं रहा है ? फिर आश्चर्य यह है कि उस ही नदी के किनारे पर बसी हुई गया पुरी में पितरों का श्राद्ध करने से स्वर्ग का फाटक खुल जाता है उस पर भी तुर्रा यह है कि जिन पितरों का गया में श्राद्ध हो जाता है उन की मुक्ति हो जाती है पर फिर भी उन का वार्षिक श्राद्ध होता रहता है। देव वृन्द ! मैं प्रकरण विरुद्ध श्राद्ध के विषय को कहने लगा था अब मैं केवल यही कहके अपने व्याख्यान को समाप्त करूंगा कि श्री पौराणिक पोप राज ने अपने मन घड़त भूगोल में लिख दिया है कि शराब का, घीव का और ऊख के रस का भी समुद्र है यदि यह बात सत्य होती तो सब लोग मजे से घीव के समुद्र से घड़े क्यों न भर लाते और मद्य प्रिय अंग्रेज उस खुदाई शराब का व्यापार क्यों न करते ? इस के अतिरिक्त यदि शराब का समुद्र होता तो मुझे मथके शराब क्यों निकाली जाती ? सभ्य वृन्द ! मैं तो यही चाहता हूं कि जो पुस्तक मुगालते से भरे हुए हैं उनको मान्य पुस्तकों की सूचि में से अवश्य काट देना चाहिये।

समुद्र का व्याख्यान हो जाने के अनन्तर भगवती भूमि उठीं और यों कहने लगीं, देववृन्द! आप लोग जानते हैं कि जिन परमाणुओं से मेरा संगठन हुआ है वह परमाणु नित्य है और उन का संयोग ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में किया है, परन्तु पुराण वालों ने मेरी पवित्रता को घटाने के निमित्त लिख दिया है कि मधु और कैटभ की चर्बी से पृथ्वी बनी है भला विचारिये तो कि यदि मधु कैटभ से पहिले मैं न होती तो जिस जल पर विष्णु सोये थे वह किस के आधार पर ठहरता? फिर मेरे आधार के विषय में वह बहार की है कि जिससे आप लोग अवश्य हंसेंगे, मेरा आधार शेष नाग को लिखा है भला यह क्या दिल्लगी की बात है कि एक वह सर्प जो कद्रु के गर्भसे उत्पन्न हुआ वह मुझे क्यों कर धारण करता और उस के जन्म से पूर्व मैं काहे पर रखी थी फिर उसका भी एक आधार लिख दिया है परन्तु हज़रतों को यह न मालूम हुआ कि हम सब लोक परस्पर के आकर्षण से ठहरे हुए हैं, फिर यह भी पुराण वालों को मालूम नहीं है कि जड़ पर्वतों के सन्तान क्यों कर होती, पर्वतों का विवाह पर्वतों की सन्तति और पर्वतों का निमंत्रणों में जाना न मालूम किस विज्ञानसे सिद्ध करते हैं? पौराणिक महात्माओं ने लाख लाख योजन का एक एक वृक्ष लिख दिया है और द्वीपों का जो विस्तार लिखा है उस को पढ़ते ही हंसी आती है सभ्य महाशय! आज इतना समय नहीं है कि मैं अपनी पूरी सम्मति वा द्वीपादिकों की पूरी कथा को प्रकाशित करूं किन्तु इतना अवश्य कहती हूं कि पुराणों ने मेरे विषय में सैकड़ों असम्भव बातें लिखी हैं इस कारण पुराणों को अवश्य खारिज़ कर देना चाहिये।

भगवती भूमि की वक्तृता को सुन के श्रीमान् सभापति जी ने सिंहासन से उठकर कहा कि सभ्य वृन्द! आप लोगों ने इस महती सभा में जितने व्याख्यान सुने मेरी सम्मति

यही है कि पुराणों के बनाने वालों ने आप लोगों पर सहस्रों मिथ्या दोष लगाये हैं अतएव आप लोगों की सम्मति है कि उन सब पुराणों को रद्दी खाने में फेंक दिया जाय, यह भी सिद्ध हो गया है कि भगवान् विष्णु और शिव महाराज भी आप लोगों से सहमत हैं यद्यपि ब्रह्मा जी ने अभी तक अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है तो भी वह आप लोगों से जरूर इत्तफाक राय होंगे क्योंकि उन को भी पुराण वालों ने पुत्री गमन का महा कलङ्क लगाया है इस के सिवाय भागवत के कर्त्ता ने उन को अज्ञानी और चोर भी लिखा है सुतराम् उन की राय आप लोगों से मिलती है मगर अभी तक बहुत से देवता और देवियों ने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है और उन की राय इस बारे में निहायत जरूरी है, आप लोग यह भी खयाल कर लीजिये कि अब बहुत ही अतिकाल हो गया है यदि अब किसी देवता का व्याख्यान होगा तो सन्ध्योपासन का समय भी व्यतीत हो जायगा इस कारण मेरी सम्मति में आज सभा का विसर्जन करना उत्तम जान पड़ता है और फिर दूसरे दिन सभा करके इस विषय पर विचार किया जाय।

सभापति की सम्मति को सुन के स्वामी शङ्कराचार्य्य ने तथा राजाराम मोहन राय आदि अद्वैतवादी धर्म्माचार्य्यों ने नाक भौंह सिकोड़ के कहा कि सन्ध्योपासनके वास्ते सभाके कार्य्यको रोकना उचित नहीं है क्योंकि जिन लोगोंको आत्माका साक्षात्कार हुआ है उन परिपक्व ज्ञान वाले देवतों को बहिरङ्ग साधन स्वरूप उपासना की आवश्यकता नहीं है इनके प्रस्ताव को यूरोप के अनेक लोगों के साथ श्रीमती मैडम ब्लैवेटस्की ने अनुमोदन किया परन्तु श्रीरामानुजाचार्य्य तथा परमपदारूढ़ महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी महाराज के शिष्यों ने इस प्रस्ताव का बड़े बल से विरोध किया और महम्मद साहिब ने यरोपीय लोगों को अपनी तेग दिखा के धमकाया कि

ओ३म्

कण्ठी जनेऊका विवाह

पण्डित रुद्रदत्तजी शर्म्मा सम्पादका-
चार्य्य द्वारा लिखित ।

और

पं० शंकरदत्त शर्म्मा ने अपने
"शर्म्मा मैशीन प्रिंटिंग प्रेस" मुरादाबादमें
छापकर प्रकाशित किया ।

तृतीयवार १००० | सन् १९१५ | मूल्य ≈)॥ आना

पुस्तकें मिलनेकापता-पं०शंकरदत्तशर्मा वैदिकपुस्तकालय मुरादाबाद

3466 2376 4806

भूमिका ।

आजकल भारतवर्षीय धर्मसम्प्रदायों में अनेक प्रकार के ढकोसले चलरहे हैं यद्यपि उनका कुछ भी सिर पैर नहीं है तौभी अनेक लोग उनको धर्म समझ के करते हैं अधिक आश्चर्य यह है कि वर्त्तमान हिन्दू समाज के संशोधन का भार जिन पण्डितों के शिर पर अर्पित है वह स्वयम् उन अविवेकजन्य ढकोसलों में फंसे हुए हैं, इन ढकोसलों में से तुलसी और शालिग्राम जी का विवाह भी एक ढकोसला है, बस मैंने उस विवाह का मिथ्यत्व और बालक्रीडनसिद्ध करने के निमित्त ही " कण्ठी और जनेऊ का विवाह " लिखा है ।

इस छोटे से पुस्तक को हिन्दूलोग धर्म्मग्रन्थ समझ कर अवश्य पढ़ें क्योंकि इसके पढ़ने से मूर्त्तिपूजकों की परम पूजनीय तुलसी में जो अन्ध्यत्वा का दोष लगा था वह दूर हो जायगा ।

पं० रुद्रदत्त शर्मा रचित मनोहर पुस्तक ।।

पातञ्जलि-योगदर्शन-व्यासभाष्य-समन्वित-तथा महाराज-भोज-कृत योग-मार्त्तण्ड-वृत्तियुक्त योगशास्त्रका भाषाटीका १।।) स्वर्ग में महासभा ।) पुराणपरीक्षा ≡) स्वर्ग में सबजेक्ट कमेटी ~।। उरदू में ~) कंठी जनेऊ का विवाह ~)।।

अन्य पुस्तकें ।

दृष्टान्त समुच्चय १≈) छत्रपती शिवाजीका जीवनचरित्र ।।) हकीकतराय धर्मी ~)।। सिक्खों के दश गुरु ।।) तर्क इस्लाम ≈)।। विपलता ।) कुरान की छान बीन ≡) यवनमतादर्श १) यवनमत परीक्षा ।) आर्य्य हिन्दु और नमस्ते का अनुसंधान ~)।। विचित्र ब्रह्मचारी)।।। बाल सत्यार्थ प्रकाश ।~)।।

पुस्तक मिलने का पता वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद

ओ३म्

कण्ठी जनेऊ का विवाह ।

३५५४

१.५

भादों की चन्द्र दुःखकारी, अँधियारी रात्रि में देव मनभानी इन्द्र की राजधानी अमरावती में सम्पूर्ण सती सुकुमारी देवनारी श्रीव्रजचन्द्र आनन्द कन्द नन्द नन्दन का जन्मोत्सव मनाने के वास्ते एकत्रित हुईं, परस्पर अनेक प्रकार के हास विलास होते होते श्रीमती महाराणी इन्द्राणी ने विष्णु प्रिया लक्ष्मी जी से हंसते हँसते कहा क्यों बहिन ! तुम तो रात दिन सौतिया—डाह से ही दग्ध रहती हो फिर तुमको जगतके मनुष्य रत्नखनी सुखमनी क्यों मानते हैं ? श्री सावित्री देवी बोल उठीं अजी ! इन के भक्त भी ऐसे ही रसीले होते है कि इनकी गुप्तलीलाओं को खुले बाजार पुकार २ गाते हैं और यह भी ऐसी भक्त वत्सला हैं कि उन पर रीझ ही पड़ती हैं, क्यों न हो इस ही में तो इन के पति को इन के भक्त गाली दिया करते हैं, गीतगोविन्द में लिखा है "(माहिरिह मालिन्दतरन्तनकूलण मनोपिममविख्याते

नूनम्, यद्वा, नायातस्स खिलनिदयोयादि शठस्त्वं दूति किन्दूयसे, अथवा सूरश्याम को कहा परेखो पाप किया जिन ओर) श्री भोलानाथ की प्राण प्यारी शैलकुमारी पार्वती मुसकरा के बोली हे बहिन ! कहती तो सत्य हो मैंने भी अपने एक भक्त के घर इस ही श्रावण मास की शुक्ला एकादशी के मित्रविलास में इनकी ऐसी ही लीला पढ़ी थी, क्या कहूं बहिन ! मैं अपने पुत्र समान भक्त के सम्मुख उस निस्त्रपपत्र को देख के अपने मन में बड़ी लज्जित हुई भला अपनी प्यारी सखी की ऐसी बातें सुनके किसे लज्जा नहीं आती ? पार्वती की बात को सुन महाराणी इन्द्राणी फिर मुसकरा के बोली क्यों बहिन ! उस त्रपहीन पत्र में ऐसी क्या बात लिखी थी जिस से तुमको लज्जित होना पड़ा ज़रा मुझे भी तो सुना दो। श्री सती पर्वत सुता ने कहा बहिन ! क्या कहूं मुझे तो उन वचनों को पढ़ते भी लज्जा आती है उस में "प्रार्थना" शीर्षक लिख के नीचे यह पद लिखे थे।

मलार—भीजत सांवरे के सङ्ग गोरी अरस परस
बातन रस झूली बांह बांह में जोरी। कहुं

तरे ठाढ़े दोउ ओढ़े एकहि पीत पिछोरी। चुवत रंग अंग वसन लिपट रहे भीज भीज दोउ ओरी। जलकन श्रवत सरूपागि पलकन करत जुगल चित चोरी। गावत हंसत रिझावत हिलमिल पुनिपुनि भरत अंकोरी।

इन्द्राणी ने फिर भौंह चढ़ा के कहा दूर! दूर! वज्र पड़ो ऐसी प्रार्थना पै जिस में ऐसी २ रहस्य की बातें कही जाती हैं।

इन सब की ठठोली को सुन के श्री विष्णु प्रिया लक्ष्मी कुछ नीची आंख करके बोलीं बहिन! तुम सब सुशीला और लज्जावती हो इसी से अपने पतियों की बात को पेट में छिपा के रखती हो, बेचारे गौतम के घर को घाल के आप कलङ्कित बनना सहस्राक्ष की कीर्ति को बढ़ाता है क्योंकि वह देवतों के राजा हैं उन की बात कौन कह सकता है और शैलविहारी त्रिपुरारी तो भोलानाथ ही हैं उन का कहना ही क्या है नशे में किसी मोहनी मूर्ति पर जो जी चल गया तो वह कुछ कहने योग्य बात नहीं है, पर एक बात तो मैं जरूर पूछूंगी, भला भस्मासुर को स्व[illegible] ने क्यों भागा था ? इस ठठोली को सुन

पर्वत नन्दनी तो मुसकरा के चुप होगईं परन्तु महाराणी इन्द्राणी झटसे बोल उठीं,बहिन ! जिस बौरहे ने काम को भस्म करके रति को रांड बना दिया उसकी किसी बात का ठिकाना मत समझो गरज़ इसी प्रकारसे हास विलास की बातें करते २ देवराज की पत्नी ने सबको पान तमाखू दिया।

अब सब देवपत्नी पान तमाखू खा स्वस्थचित्त हो के बैठीं और गाने बजाने की ठहरी तब श्री विष्णुप्रिया तुलसी महाराणी उठ के देवाङ्गनासमाज में खड़ी होके कहने लगीं। मैं अपनी सब बहिनों से हाथ जोड़ के बिनय करती हूं कि मेरे दुःख को सब मिल के दूर करें मैं आज ऐसे कष्ट में हूं कि जिस का वर्णन करना कठिन है? महाराणी इन्द्राणी ने गम्भीरभाव से कहा तुलसी तुम अपने सब दुःखों का वर्णन करो हम सब मिल के तुम्हारे दुःखों को दूर करने का उपाय करेंगीं और जो दुःख हमारी शक्ति से दूर न होगा उसे हम देव राज इन्द्र तथा सर्वकलासम्पन्न विष्णुसे दूरकराने का उद्योग करेंगीं

इन्द्राणी के आश्वासन देने पर तुलसी बोलीं; आजकल आप लोगों के भक्त मुझे बड़ा ही

कष्ट देते हैं जो लोग सनातनधर्मी कहलाते हैं वह विधवाविवाह का खण्डन करते हैं इस से मुझे बड़ा कष्ट होता है क्योंकि विष्णु महाराज ने प्रथम मेरे साथ नियोग किया था फिर मैं अपने पति जालन्धर के मरजाने पर विधवा हो गई तब से विष्णु के भक्त हरसाल मेरा विवाह शालिग्राम के साथ करते हैं इससे मेरे वे सब विवाह विधवा विवाह ही की रीति से होते हैं इस कारण जब कोई हिन्दू पण्डित किसी ठाकुरद्वारे में बैठ के विधवाविवाह या नियोग का खण्डन करता है तब मुझे बड़ा ही क्रोध आता है, मैं सब देवपत्नियों से प्रार्थना करती हूं कि यातो हिन्दुओं से विधवाविवाह स्वीकार करायाजाय नहीं तो उन से कहाजाय कि मुझ विधवा का हरसाल विवाह न किया करें (सब बोल उठीं ठीक कहती हो) दूसरा दुःख मुझे यह है कि विष्णु महाराज के नियोग से और शालिग्राम के विधवाविवाह से जोमेरे अनेक कन्या उत्पन्न हुईं हैं उनके विवाह करने की मुझे बड़ी चिन्ता लगी रहती है क्योंकि वे सब अब किशोरावस्था को लांघ कर युवावस्था को प्राप्त होना चाहती हैं, यदि अब

भी उनका विवाह न किया जायगा तो देवकुल को कलंक लगने का भय है।

महारणी इन्द्राणी श्रीतुलसीदेवी के वचनों को सुन के गम्भीर स्वर से बोलीं कि इस बात की चिन्ता मतकरो तुम्हारी पुत्री के वास्ते मैंने उत्तम कुल का सदाचारी और अति रूपवान् वर ढूंढ रक्खा है वह सर्वदा वेदाभ्यास और यज्ञ करने वाले उत्तम मनुष्यों के पास हीरहता है। इन्द्राणी की बात को सुनके तुलसी देवी बड़ी प्रसन्न हुई और कहने लगीं कि उस वर का नाम और कुल भी यदि मुझे मालूम हो जाता तो मैं अधिक प्रसन्न हो के श्रीमती को धन्यवाद देती। इन्द्राणी ने कहा कि वह वर स्वयं सृष्टिकर्त्ता का पुत्र महर्षियों का साथी और बहु नामी स्त्री का औरस है, आर्य्यावर्त्त में शास्त्रकर्त्ता के अतिरिक्त कोई वेद को माननेवाला ऐसा आचार्य्य नहीं हुआ जो उस का विरोधी हो, इसका पवित्र नाम यज्ञोपवीत वा जनेऊ है, तुम इस के साथ विना विचारे अपनी पुत्री कमली का विवाह करदो।

श्रीमती महारणी इन्द्राणी के प्रस्ताव और तुलसी जी की स्वीकृति एवम् सब देवाङ्गनाओं के अनु-

सोहन से यह स्थिर हुआ कि कण्ठी का विवाह जनेऊ के साथ किया जाय परन्तु बिना वर पक्ष की स्वीकृति के विवाह का होना असम्भव है इसकारण श्री विष्णु प्रिया लक्ष्मी के कहने से देवर्षि नारद को बुलाने का विचार आरम्भ हुआ !

नारद का नाम सुनते ही गन्धर्वराज विश्वावसु की प्यारी भार्य्या बोल उठीं हैं । हैं ! सुन सुर्दए का हमारी मण्डली में बुलाना क्योंकर अच्छा समझती हो, क्या तुम को पराये मर्द के सामने बतिलाते लज्जा नहीं लगती इनकी बात को सुन के श्रीमती शैल कुमारी मुसकरा के बोलीं बहिन ! नारदजी ऊर्ध्वरेता हैं उन के सामने बोलते बतिलाने में हमको कुछ दोष नहीं है खास कर सब देवताओं के विशेष समाचार यही ले जाते हैं मेरे विवाह के समय भी यह सर्वत्र आते जाते थे ।

श्रीमती विष्णुप्रिया ने हंसकर कहा हां जी! नारद ही तो देवताओं के खास नाऊ हैं और ऊर्ध्वरेता तो वे ऐसे हैं कि राजा सृञ्जय की पुत्री दमयन्ती के घर में कई वर्ष तक वन्दर बन के रहे थे (देखो देवी भागवत)

महारानी इन्द्राणी बोलीं देखो ? बहिन ? यह ठठोली का समय नहीं है यदि वर पक्ष वाले इस सम्बन्ध को स्वीकार करलें तो शुक्राचार्य्य को बुला के झट पट विवाह का दिन और मुहूर्त स्थिर कर के विवाह की सामग्री इकट्ठी की जाय, अन्त में सब की यह सम्मति ठहरी कि सरस्वती जी देवर्षिनारद की हमपेशा हैं इस कारण वही नारद का आह्वानकरें, सरस्वती जी ने भी सब की सम्मति को स्वीकार करके औरवीना हाथ में लेके एक वेद मन्त्र का आलापना आरम्भ किया उस मन्त्र के गाते ही गाते श्रीदेवर्षि नारदजी देवाङ्गना समाज में आ उपस्थित हुए, उन को आते हुए देख कर सब देवाङ्गना खड़ी होगईं और यथायोग्य अर्घ्य पाद्य देकर स्वच्छासन पर बिठलाया ।

देवर्षि सब की ओर को सौम्यभाव से देखकर बोले क्यों यजमानिओं आज क्या बात है जो सब इकट्ठी हो रही हो क्या विष्णु महाराज कोई नया अवतार ग्रहण करेंगे ? वा देवराज इन्द्रपर कोई आपत्ति आई है ? वा भोलानाथ भंग का गोला खा के मतवाले तो नहीं होगये हैं ? ठीक बतलाओ आज तुम सब क्यों इकट्ठी हो रही हो ?

देवर्षि नारद की बात को सुन के महाराणी इन्द्राणी हाथ जोड़ के बोलीं, देवर्षे ! यह कोई बात नहीं है, हम सबने आप को इस वास्ते बुला याहै कि आप एक कन्याको पक्की बात कर आवें ।

नारद ने पूंछा वह कन्या किसकी है और किसके साथ उसके विवाह की बात करनी होगी महाराणी इन्द्राणी ने विनीतभाव से उत्तर दिया कि वह कन्या तुलसी की है और उसके पिता का नाम आप जानते ही हैं ।

इस बात को सुन के नारद कुछ चकित हुए और नाक भौंह चढ़ाके कहने लगे कि ऐसी कन्या के विवाह का उद्योग मैं कदापि नहीं करूंगा। श्री विष्णु प्रिया लक्ष्मी मुसकरा के कहने लगीं, महाशय आजकल इण्टरनेशनेल मैरेज (वर्णान्तर विवाह) जारी होगया है फिर आप हिचर मिचर क्यों करते हैं जाइये विवाहकी बातें पक्की कीजिये नारद बोले कि मैं कदापि इस विवाह की बातें न करूंगा क्योंकि प्रथम तो कन्या ही नियोग से उत्पन्न हुई है दूसरे उसकी माताके देवाङ्गना होने में अभी तक बहुतेरों को सन्देह है ।

सब देवाङ्गनाओं ने देवर्षि नारद के वचनों

को सुन कर बड़ी विनय और नम्रता के साथ कहा कि देवर्षे ! इस विवाह के वास्ते हम सब आप से विनय करतीहैं। कृपासागर ! आप अवश्य इस कार्य्य को कीजिये। खैर किसी प्रकार से नारद ने स्वीकार किया और रोली अक्षत लेके टीका चढ़ाने को चले ! नारद मार्ग में विचार करने लगे कि तुलसीदेवी विष्णु की प्यारी हैं और यह कन्या भी उन की ही विशेष कृपा से उत्पन्न हुईहै और प्रत्यक्ष देखपड़ता है कि विष्णु भक्तों के सम्प्रदायी ही कण्ठी को अपने गले में बांधते हैं, इस कारण विष्णु भगवान् तो वर के पिता नहीं ज्ञात होते हैं, भङ्गड़ी भोलानाथ ऐसे झगड़ों से कुछ सम्बन्ध ही नहीं रखते हैं इस कारण चौमुखे बाबा के ही घर चल के इस टीके टुनटुन के बखेड़े को मिटाना चाहिये।

नारद महाराज बीन बजाते और रङ्गबिरङ्ग कजरी गाते (क्योंकि आज कल स्वर्ग में कजरी बहुत गाई जाती हैं) अनेक लोग लोकान्तरों को देखते भालते ब्रह्मलोक में जा उपस्थित हुए। देवर्षि नारद को आते हुए देखकर प्रजापति ब्रह्मा अपने सभासदों के सहित खड़े होगये और यथा

योग्य खातिर तवाजा करने के अनन्तर सब अपने अपने आसनों पर बैठ गये, प्रजा पति ब्रह्मा का इशारा पाके महर्षि वशिष्ठ ने देवर्षि नारदसे पूछा कहिये भगवन्! आज किधर भूल पड़े? सब लोक लोकान्तरों में कुशल तो है? मर्त्यलोक में कोई राजा दैत्य वा दानव तो नहीं होगया जो संसार को उद्वेग पहुंचाता हो? कहिये किस उद्देश्य से आप ने दर्शन दिये हैं? महर्षि वशिष्ठ के वचनों को सुन के देवर्षि नारद ने बड़े विनीतभाव से कहा कि यह कोई बात नहीं है संसार का कुशल मंगल तो आप इससे ही जान सकते हैं कि एक रुपये के ८९ सेर गेहूं बिकरहे हैं और धर्म कर्म का यह हाल है कि यज्ञ धूम के बदले इञ्जिनों (में झोंके गये पत्थर के कोयले) के धुयें से स्वर्ग-वासियों की नाक में नकचुहे भर गये हैं, परन्तु आज मैं इस वास्ते नहीं आया हूं कि गोवध के निवारणार्थ विष्णुभगवान् से अवतार धारण करने को कहूं वा आप लोगों में से किसी को गोपी और किसी को गाय बनने का कष्ट दूं मैं आज एक छोटे से कार्य के वास्ते यहां उपस्थित हुआ हूं यदि आप लोग इस कार्य को सम्पन्न करेंगे

तो केवल मैं ही सन्तुष्ट न होऊंगा वरन देवतोंकी सब स्त्रियां चौमुखे बाबा की मानता मानेंगी वह कार्य्य भी कुछ बड़ा भारी नहीं है केवल यही है कि प्रजापति ब्रह्माजी के योग्य पुत्र यज्ञोपवीतका विवाह तुलसी पुत्री कुमारी कण्ठीके साथ होजाना चाहिये।

देवर्षि नारद के इस प्रस्ताव को सुनते ही सब सभासद् कुछ क्रोध के साथ बोले, महाराज! आपका यह प्रस्ताव असङ्गत है क्योंकि तुलसी जलन्धर राक्षसकी विधवा स्त्री है उसकी नियोगज कन्या का विवाह देवकुल में क्योंकर हो सकता है? क्या हम लोग ऐसे पतित हैं जो कण्ठी के साथ ब्रह्मा के पुत्र का विवाह होने देंगे विशेषतः कण्ठी के प्रचारक और सहायक सब शूद्र हैं, जब कि धर्म सभावालों का पक्ष है कि शूद्रों को वेद सुनने का अधिकार नहीं है तब कौन ऐसा ब्राह्मण है जो कण्ठी का विवाह कराने में आचार्य बनेगा।

देवर्षि नारदने विनीतभाव से कहा कि आप का कहना पुराणों के विरुद्ध है इस कारण मान॰ नीय नहीं है क्योंकि पुराणों में इण्टरनेशनलमैरेज

(वर्णान्तर विवाह) करना लिखा हुआ है और कितने ही विवाह ऐसे हुए भी हैं कहिये तो च्यवन ऋषि का विवाह कौन से ब्राह्मण की कन्या से हुआ था, फिर मत्स्योदरी कौन से क्षत्रिय कुल की कन्या थी जिसे वैयाघ्रपाद् गोत्र के महाराज शन्तनु विवाह करके लेगये थे ? इसके आतिरिक्त महर्षि पुलस्त्य भी तो ब्रह्मा के ही औरस पुत्र थे जिन्होंने राक्षसी से विवाह किया था परन्तु आश्चर्य की बात है कि इस विवाह में आप लोग जाति का विचार करते हैं और अपनी परम्पराको नहीं देखते हैं। भला यह तो कहिये कि जिन विष्णु ने स्वयम् तुलसी से नियोग किया था। उनको भी आप लोगों ने जाति से पतित किया वा नहीं ? अब कृपानाथ ! अधिक मत कहलाइये और विवाह करना स्वीकार कीजिये नहीं तो देवतों में तफर्का पड़ जायगा लीजिये मैं टीके का सामान लाया हूं नारद के और वशिष्ठ के बाद प्रतिवाद को सुनके ब्रह्मा महाराज बहुत हंसे और गम्भीर स्वर से बोले भाई ! यह नारद हैं इन से जीतना बड़ा कठिन है सब से उत्तम

यही है कि टीका ले लिया जाय और विवाह की तैयारी की जाय ।

ब्रह्मा महाराज के अनुमोदन करने से शशि-आदि सम्पूर्ण महाशय चुप हो गये और सब सभासदों ने देवर्षि नारद से कहा कि आप ति-लक की सब सामग्री निकालिये और वरको देख भाल के तिलक चढ़ा दीजिये पीछे जो होगा देखा जायगा ।

देवर्षि नारद ने कहा कि वर के घर बार को लीपने पोतने की आज्ञा दीजाय, खैर ब्रह्माजी ने तिलक लेने के वास्ते महासभा करने की आज्ञा दी, वायु देव तथा तड़ित देवों को आज्ञादी कि तुम दोनों स्वर्ग, मर्त्य पाताल तीनों लोकों से वर पक्ष वाले मनुष्य, देव, गन्धर्व यक्ष किन्नर और पाताल वासियों को बुलाके लाओ । ब्रह्मा महा-राज की आज्ञा पाते ही वायुदेव और तड़ित देवी अपने २ कार्य्य करने को चल दिये और बातकी बात में सबको ब्रह्मलोक में ला बिठलाया, सब के एकत्रित हो जाने और अनुमोदन करने पर तिलक चढ़ायागया इस महोत्सव में जो २ विशेष बातें हुई वे २ पाठकों को किसी और अवसर पर सुनाई जायेंगी ।

देवर्षि नारद तिलक चढ़ा के फिर अलकावती को लौट गये और पूर्व कथित देवाङ्गना समाज को सब समाचार कह सुनाये, विवाह की स्वीकृति को सुनके देवाङ्गना समाज बहुतही सन्तुष्ट हुआ अनन्तर सबने देवर्षि को धन्यवाद देके तुलसी देवी से कहा कि अब तुम अपने घर जाके विवाह का सरन्जाम एकत्रित करो। तुलसी देवाङ्गनाओं की आज्ञापाकर और सबको निमंत्रण देकर अपने घरको चली गई।

तुलसी ने घर पर जाके समस्त कण्ठी-धारियों को बुलाया और सबको यथा योग्य काम सौंप दिये, बल्लभीय सम्प्रदाय वालों को भोजन बनाने के निमित्त हलवाई खाने में भेजा गया, माध्व सम्प्रदायियों को आज्ञा दी गई कि तुम बाज़ार की सामग्री लाके हलवाई खाने में पहुँचाते रहो, निम्बार्की लोग लकड़ी चीरने पर खड़े कर दिये गये, चैतन्य सम्प्रदाय के बंगालियों को तर्कारी बनाने का काम सौंपा गया, परन्तु बड़ी डाट के साथ कह दिया गया कि खबरदार मछली रसोई में न जाने पावे नहीं तो वैष्णव सम्प्रदाय से निकाल दिये जाओगे, सैन भगत को आज्ञा दीगई

कि तुम शीघ्रता के साथ पतरी दोने तैयार करो, सधना भक्त को हुकुम मिला कि तुम बारातके बैलोंके निमित्त भूसा इकट्ठा करो छीपा पीपा को थोड़े से कपड़े छापने को दिये गये और रैदास भक्त से जूते बनाने को कहा गया एवम् कबीर दास से कहा गया कि बरातियोंको देनेके वास्ते थोड़ी गजी और दश बीस थान गाढ़े के बुनके तैयार करो, पानपदास तथा उनके अनुयाइयों को आज्ञा मिली कि तुम इतने पाटे तैयार करो जिन पर बराती बैठ के भोजन कर सकें। इस प्रकार से सब को विवाह के काम सौंप के तुलसी ने नरसी शाह को और मीराबाई को बुलवाया, उन दोनों के आ जाने पर तुलसी जी ने नरसी शाह से कहा कि सेठ जी लड़की का विवाह बड़े घर में ठहरा है जरा रुपये पैसे की मदद रखना, नरसी जी ने "भाव भला नफ़ा बहुत (से) बैठे गद्दी पै धड़ा लगाये जाओ (तक) हुण्डी पढ़ के कहा महाराणी इस वर्ष तो कलकत्तेकी टकसालबन्दहै या सो रुपैयान कों बड़ी आना ठानी है, जो मर्जी होय तो बड़ौदे से नये पैसे मंगा दूं, तुलसी जी ने कहा कि उन के वास्ते चिन्ता मत करो पण्ढरपुर के स्वामी नाथ-

लिये आप ही उन पैसों को ले आवैंगे परन्तु तुम जो इस वक्त कुछ सहायता न करोगे तो याद रक्खो तुम से कण्ठी छीनली जायगी तब तो सेठ जी बड़े घबड़ाय और कहने लगे कि अच्छा मैं बिलायत से कुछ पौण्ड और शिलिङ्ग पेन्स आदि जाके श्रीमती के अर्पण करूंगा, लीजिये मैं अभी भ्रिन्सरणजीतसिंह जी को लिखता हूं कि फौरन स्वर्गीय डांक द्वारा उक्त सिक्के भेजदें। इस के पश्चात् मीराबाई से कहाकि तुम सब दे-बाङ्गनाओं को यथा योग्य आदर पूर्वक बिठलाके गाने बजाने का ठीक प्रबन्ध रखना, हां हां एक प्रबन्ध तो भूल ही गई देखो घर बार में सफाई र-खने के वास्ते षठकोपदास के अनुयायी जो रामा-नुजी कहलाते हैं उनको नियुक्त करना चाहिये और राधास्वामी तथा वृन्दावन के मार्गवालों का इधर उधर खबर पहुंचाने के वास्ते हलकारे नियत रखना चाहिये जिससे सब प्रबन्ध ठीक रहे परन्तु इन में से कोई भी भोजन की ओर न जाने पावें क्योंकि हम को कई एक पर उच्छिष्ट भोजी होने का सन्देह है।

देखो यहभी ख़याल रखना कि बारातमें यदि

जीसस क्राइष्ट और मुहम्मद आदि आजांय तो उनका आदर सत्कार करने तथा उनके खान पानका प्रबन्ध करने के वास्ते कुण्डापन्थी और बीजमार्गी नियुक्त रहें और समस्त वाममार्गियों को खान पान की सामग्री में नियुक्त कर दिया जाय खबरदार मेरे कहे हुए किसी प्रबन्ध में त्रुटि वा असावधानी न हो, नहीं तो तीनों लोक में बदनामी होगी।

ब्रह्मा महाराज ने यथा समय आने के वास्ते सब देवतों के पास निमन्त्रण पत्र भेज ही दिये थे वे सब अपने २ विमानों पर तथा अन्या न्य-यानों पर बैठ के ब्रह्मलोक में पहुंचे और वहां से धूमधाम के साथ बरात सजाई गई, सब से आगे भोलानाथ महादेव का डूंडा बैल मोहरे पट्टे से दुरुस्त हो के चला, उन के पीछे विष्णु भगवान् का गरुड़ पूंछ हिलाता और पंखों को फटकारता हुआ चला, महादेव के आभूषण सर्पराज गरुड़ को देख के कुछ सकुचाये परन्तु देवी के सिंहको देख के फिर कुछ शांत हुए, श्री गणेशजी के चूहेराम विनायक महाराज की इस थोंद से ऐसे दबे हुये चले जाते थे मानों बिल से इनकी गर्दन अभीतक दबी हुई है, यमराज का भैंसा और शनै-

श्वर का बकरा एवम् भैरोंजी का कुत्ता बरात की शोभा को द्विगुणित किये हुये थे कहां तक लिखा जाय यह देवतों की बरात ऐसी जान पड़ती थी मानों किसी ने अजायब घर (अद्भुतालय) की सामग्री इकट्ठी की है।

बरात को आई हुई सुन के श्रीमती तुलसी देवी ने आज्ञादी कि हमारे शहर से बिल्कुल बि-ल्ली निकाल दी जांय क्योंकि बिल्ली को देख के गणेश जी का चूहा गणेश जी के सहित भाग जायगा, फिर तुलसी देवी की आज्ञानुसार श्री गोस्वामी बम्मकलाल जी महाराज भांकरौली वारे श्री गोस्वामी चिमगूदड़लालजी महाराज वैजनाथ द्वारे वारे, श्री गोस्वामी शिमलालाल जी महारा-ज लण्डनवारे और राजाधिराज श्री वैल स्वामी हिड़म्बकलाल जी महाराज जर्म्मन वारे, इन के अतिरिक्त श्री प्रसन्न पाञ्चजन्यदास, श्रीमहन्त श्री स्वामीचरण कमल रघु भूरदास जी, इन के सिवा-य, भिक्कादास हिक्कादास और छिक्कादास आ-दि आदि बरात की पेशवाई को चले और अगौ-नी की रीति को समाप्त करके सब कोई यथा यो-ग्य स्थानों में ठहराये गये।

द्वारपूजा और भोजन के पश्चात् बरातियों का दिल बहलाने के वास्ते नाच रंग की ठहरी देवराज इन्द्र का इशारा पाते ही उर्वशी और घृताची आदि अप्सराओं के वृन्द पिशवाज आदि से सुसज्जित होके नाचने को तैयार हुए और हा हा हू हू आदि गन्धर्व तबले और सारंगी के स्वरों को मिला के साज बाज के सहित खड़े होगये, सब से पहिले उर्वशी की बारी आई, वह देश की ध्वनि में नीचे लिखी [वेतुकी] गजल गानेलगी।

अभी फैसला है हमारा तुम्हारा। ज़रा न्याय पर हो इशारा तुम्हारा॥ चैतन्य ईश्वर को त्यागा है तुमने। जड़ादि की पूजा सहारा तुम्हारा। जीते बुजुर्गों को माना न तुम ने। मरे का हुआ श्राद्ध प्यारा तुम्हारा। मन्दिरमें अपने नचाओ हो वेश्या। यही कर्म्म भारी नकारा तुम्हारा॥ पोथी तुम्हारी गपोड़ों भरी है। उन्हें छोड़ने से गुजारा तुम्हारा। वेदों को जानों सनातन पियारो। इसी ज्ञान से उबारा तुम्हारा॥ १॥

इस के पश्चात्–घृताची उठी और लावनीकी ध्वनि में यह गा के बैठ गई।

जग पाप ताप से छुटे तो पानी बरसे [टेक]

छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे। जन जगत् पिताको रटे तो पानी बरसे। तज भोग योग में सटे तो पानी बरसे। जब झपट कपट की कटे तो पानी बरसे। अधरम की बदरी फटे तो पानी बरसे। जब प्रजा में हो नित यज्ञ तो पानी बरसे। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ १॥ सब करें हवन शुभ पवन पूर हो जावे। कासिन कोइले का धूम दूर होजावे। दुर्गन्ध अन्धतामिस्र धूर हो हो जावे। सब रोगों की वह खान चूर हो जावे। सब सुनो दीन जन अन्य विना नहिं तरसे। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ २॥ सब सन्यासी हों सत्य मार्ग के गामी। तजि नशे फशे को बने वेद धर्म्म अनुगामी। नहीं रहे ब्रह्मचारी भी लोलुप कामी। वनवासी भी बने नहीं बहुधामी। जब वेदों की शुभध्वनी भनी घर घर से। छलछिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ ३॥ जब प्रजा करे सब धर्म्मराज अनुशासन। औ पक्ष नहीं कोई करे बैठ न्यायासन। यदि राजा पर दुःख पड़े प्रजा आश्वासन। दे सहाय सब विधि उसे बैंच के वासन। लखि दीन हीन दे छोड़ राज के करसे। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ४॥

करि धारण पातिव्रत पुरुषकरें सब कामा। सबप-तिव्रता बलि जग में विचरें बामा। यहवेश्या अ-हुए नशैं मूर्ख बेकामा। जग जन मिल नित ही रटैं ईश गुन ग्रामा। उपदेश हमारा सुनो छुटो स-ब डर से। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे॥ ५॥

सब लोग इन बेतुकी तानों को सुन के वाह! वाह! करने लगे इस के पश्चात् विवाह का ल-गन आया और सब लोग अपने २ कामों को करने के वास्ते मैफिल से उठे।

सबको सभा से उठते देखकर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द यशोधानन्दवर्द्धन बोले कि आप लोग क्षणमात्र और ठहरिये कि जिससे रासलीला भी होजाय क्योंकि फिर आपलोगोंको रास देखने का ऐसा अवसर न मिलेगा।

श्री गोपीजन वल्लभ की आज्ञा पातेही श्री गोस्वामी चित्रकूटलाल जी पखरोली वाले और श्री वकरी स्वामी जगहरणलाल जी सिंहद्वार वा-ले राधा और कृष्णकी सूरत बनके नेपथ्य में आखड़े हुए और खिमटा नाचने लगे, इस अद्भुत लीला को देखकर भोलानाथ महादेव जी क्रोध

के साथ बोले कि यदि हमारे भक्त हमारा ऐसा उपहास करते तो हम तीसरा नेत्र खोल के उन्हें भस्म कर देते, इनकी बात को सुनके श्री देवराज इन्द्र ने मुसकरा के कहा भाई। विष्णु की लीला अपार है इनको अपनी इज्जत का कुछ भी ध्यान नहीं रहता क्योंकि यह स्वयम्‌ही भिखारी (बावन) का रूप धारण करके मांगने चले गये थे, विष्णुने हंस के कहा कि हां भाई हम तो ऐसे ही हैं परन्तु आप लोग यह नहीं जानते कि जो लोग हमारी और हमारी स्त्रियों की नकल करते हैं उनको हम घोर नरक में डाल के कठोर दण्ड देते हैं।

इसके अनन्तर कन्या पक्ष के नाऊ सैन भक्त ने जनवासे में जाके कहा कि विवाह का लग्न समीप आगया सुतराम्‌ नाच मुजरे को बन्द करके आप सब लोग मण्डप में पधारें, इस बचन को सुनते ही चौमुखे बाबा की आज्ञानुसार नाच सभा का विसर्जन किया गया और सब देवता तुलसी मन्दिर में जाके उपस्थित हुए, जबसब देवता यथा स्थान बैठ गये तब देवतों के पुरोहित श्री बृहस्पति जी ने विवाह कार्य्य आरम्भ किया।

कलश स्थापन के अनन्तर ज्यों ही वरुण

देवता का उसमें आवाहन किया त्यों ही झट से वरुण देवता उठे और उसघड़े में घुसने लगे परन्तु पैर के लगते ही घड़ा फूट गया और सब पानी बहगया तब तो सब देवतों ने बृहस्पति की हंसी आरम्भ की किसी ने कहा कहिये भगवन् ! इस छोटे से घड़े में ३॥ हाथ के वरुण का आवाहन क्यों करते थे, आपने क्या घड़े को मदिरा का पीपा समझा था ? किसी ने कहा हां हां ! इस ही बुद्धि के बल से गुरु जी ! तारा देवी को तारना चाहतेथे खैर ! देवगुरु बृहस्पति कुछ लज्जित हुए और मिट्टी और मिट्टी के एक ढेले में लाल डोरा लपेट के मण्डप के बीच में रक्खा और उस में गणेश का आवाहन करने लगे इस को देख के गणेश जी ने अपनी सूंड को बढ़ा के मट्टी के ढेले को उठा के फेंक दिया और हंसके कहा कि भगवन् ! मेरे एक पैर के बोझको भी यह मट्टी नहीं संभाल सक्ती तो मैं इस में क्योंकर आसक्ता हूं इस बार भी बृहस्पति जी की खूब हंसी हुई ।

नवग्रहों की पूजा के समय तो वह कहके उड़े कि देव गुरु के छक्के छूट गये, प्रथम तो नव-

ग्रहों में से सात ही ग्रह मिले क्योंकि एक तो देव-गुरुपूजक के होने के कारण स्वयम् ही पृथक् हो गये, दूसरे कन्या पक्ष के पुरोहित श्री शुक्राचार्य भी पूज्यग्रहोंमें मिश्रित न हो सके,शेष सात ग्रहों में से चन्द्रमा महाराज ने कहा कि मैं अभी अपनी ड्यूटी (काम) पर हूं और मुझे कोई एवजी भी नहीं मिला, इस कारण विवाह में पूजा लेने नहीं आसक्ता हूं. भगवान् भास्कर ने कहला भेजा कि इस समय मेरा दौरा अमेरिका द्वीप में हो रहा है, इस के अतिरिक्त जिस लग्न में विवाह स्थिर हुआ है वह लग्न व मुहूर्त्त मेरे आते ही पाताल को भाग जायेंगे, इस कारण मैं कण्ठी के विवाह में नहीं आसक्ता हूं, नवग्रहों की इस गड़बड़ी को देखकर तुलसी देवी को बड़ी चिन्ता हुई तब उन्होंने उच्चस्वर से कहा कि यदि नवग्रहों की हाजिरी ठीक नहीं है तो उन सबकी स्त्रियों की ही पूजा करनी चाहिये, तुलसी जी की बात को सुन के चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी बोल उठी कि "आप का यह कहना ठीक नहीं, क्योंकि हम सब पतिव्रता हैं इस कारण अपने पतियों को त्याग कर हम पूजा नहीं करा सक्तीहैं,हम क्या तुलसीके

समान हैं जो अपने पति (शालिग्राम) के शिर पर चढ़ बैठती हैं" खैर इस ही प्रकार से पूजा पत्री के बखेड़े में अधिक रात्रि व्यतीत होगई, तब श्रीब्रह्माजीने विनीत भाव से कहा कि यह सब बखेड़े हिन्दुओं के वास्ते हैं अन्य लोगोंके वास्ते नहीं तवसिविलाइज़्ड (शिक्षित) देवतों के विवाह में यह झगड़ा क्यों डाल रक्खा है? विवाह के अन्य कार्यों को आरम्भ कीजिये। वरके जन्म समय में जैसे अग्निहोत्र हुआ था वैसे ही इस समय भी होना चाहिये, खैर अग्निहोत्रादि के समाप्त होजाने पर कन्यादान का समय आया, प्रथम वर पक्ष से रेशम और कलाबत्तू आदि आभूषण वधू को विभूषित करने के निमित्त भेजे गये और उन से सुसज्जित हो के जब कन्या मण्डप में आई तब प्रधान २ देवतों ने उसे आशीर्वाद दिया, प्रथम वर के पिता ब्रह्मा जी ने कहा।

शूद्राणामन्त्यजानाञ्च, प्रियाभूयास्सुखण्डिते।
पण्डितैरादृतामाभूर्भूमौ त्वं तन्तुमण्डिते॥

अर्थ—शूद्र और चमार आदि अन्त्यजों की तू प्यारी हो और ब्राह्मण तेरा आदर न करें और अच्छे सूत से तू गुही जाय।

इनके अनन्तर अन्य देवतोंने भी यथायोग्य आशीर्वाद दिये अनन्तर कन्याके मामा रामानुज, माध्वाचार्य्य और वल्लभाचार्य्यादिकों ने कन्या को अङ्क में बिठला के विवाह के कर्त्तव्यों को किया, तब देवगुरु बृहस्पति ने शुक्राचार्य्य से कहा कि कन्याके पितासे दान कराइये शुक्राचार्य्य ने विष्णु भगवान् की ओर इशारा किया, परन्तु विष्णु ने कहा कि यह कन्या मेरी ओर से नहीं है इस कारण मैं कन्यादान न लूंगा मेरी समझमें इसका कन्यादान शालिग्राम को ही लेना चाहिये (वा बढ़ई को लेना चाहिये)।

इस के उत्तर में शालिग्राम जी बोले कि मैं भी तो आप का ही रूप हूं, इस कारण आप को ही कन्यादान का लेना उचित है। श्री विष्णु भगवान् ने कहा कि मेरा रूप तुम क्योंकर होसक्ते हो, मेरे शरीर में चार हाथ हैं और तुम्हारे एक भी नहीं, मेरे कमल से नेत्र और तुम निपट अन्धे, मेरे चरण देखो दोनों विद्यमान हैं और तुम निरे पङ्गु हो तब कहो तुम मेरे रूप क्योंकर हो सक्ते हो ? इस के अतिरिक्त तुम एक वर्ष में अनेक वार तुलसी के साथ नियोग करते हो तब कन्या दान

का करना तुम को ही मुनासिब है, अन्त में शालिग्राम में डोरा लपेट कर कन्यादान पढ़ा गया।

कन्यादान का संकल्प।

ओ३म् विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्याज्ञानस्य द्वितीय प्रहरार्द्धे भज्ञानमोन्तरे श्वतांग्रबराहकल्पे ऊनविंशताब्दि मध्येऽमुक खीष्टाब्दे दशमवरमासे जातीयपक्षेऽतिथिविरहितायां तिथौ विमाङ्गाष्ठरूपां कलावस्त्वादिविभूषिता मतिसूक्ष्मसूत्रेणोतप्रोतां कंठीदासीं कन्यां सूत्ररूपांयाच्युत गोत्रोत्पन्नांयज्ञोपवीतशर्म्मणे वारायाहं सम्प्रददे।

इस कन्यादान के अनन्तर वर बधू में नीचे लिखी प्रतिज्ञा हुई।

वर—जैसे ब्राह्मण के हाथ से बटे पवित्र सूत से मैं बना हूँ वैसे सूत से मैं तुम्हें कभी नहीं गुथने दूँगा।

२—द्विजातियों के कण्ठ में लगने की यदि तुम चेष्टा करोगी तो मैं तुम्हें त्याग दूंगा।

३—यदि तुम कभी मेरे सूतरूपी परिवार को छोड़ के किसी धातु के तार में गूथी जाओगी तो मैं तुम्हें त्याग दूंगा।

१–जो लोग तुमको धारण करके मद्य मांस का सेवन करेंगे तो मैं तुमको दण्ड दूंगा ।

बधू–जो द्विज वेद, यज्ञ और १६ संस्कारों से रहित होंगे उनको शूद्र समझ मैं अपना चेला बना लूंगी खबरदार उनके पास तुम मत जाना ।

२–जो द्विजाति किसी चिन्ह से दग्ध होंगे वह मेरे आश्रय समझे जायेंगे ।

३–मेरे भाई रुद्राक्ष,कमलाक्ष,शंख और महा-शंख (हाड़) एवम् मेरी बहिन माला तसबी, पुतर जिया,पोत पवित्री आदि से तुमको सदा साले और साली का सम्बन्ध और प्रेम रखना होगा ।

४–जैसे वेदानुकूल ग्रन्थों में तुम्हारे लेख हैं ऐसे ही लेख अपने खास यजमान ब्राह्मणों से बनवा के मेरे सम्बन्ध में पुराणों में मिलवा देने होंगे यदि यह तुम को स्वीकार हो तो मैं तुम्हारी वामांगी बनूंगी ।

वर–अच्छा मैंने स्वीकार किया ।

परिवर्तन होने के पश्चात् सूत और बन्दी जनों ने मङ्गल पाठ आरम्भ किया ।

(१) रुई बिलायत जाय सूत को मिले न लेशा ।

मिहर बन के छिप्र विप्र त्यागे निज देशा ॥
आलस से नहीं बने सूत ब्राह्मण गृहमाहीं ।
स्वच्छ शील के कण्ठ बीच उपवीत सुहाहीं ॥
मैल छुड़ावन हेतु नित्य साबुन से धोवें ।
सबहिं दिखावन हेतु जनेऊ पुनि पुनि जोवें ॥

जब लाला का आया टीका । घर बाहर सब लागे फीका ॥
जब लाला का आया लगन । चारों ओरसे लगगई अगन ॥
जब लाला को चढ़िया तेल । घर में होगई दुःख की रेल ॥
जब लाला की चली बरात । को पूछे किसकी कुशलात ॥
जब लाला के फिर गये फेरे । यह वर मरियो और घनेरे ॥

इति

सब प्रकार की पुस्तकें मँगाने का पताः—
पं० शंकरदत्त शर्मा,
वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद यू. पी.

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 2891
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र